सच्चखण्ड

का

संदेश

विषय सूची

1. सृष्टी रचना---------- 1
2. परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का चित्र----------2
3. कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है ----------3
4. आत्माऐं काल के जाल में कैसे फंसी ?----------5
5. एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र----------7
6. ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र-----8
7. श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति ----------10
8. तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित----------11
9. ब्रह्म काल की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा----------12
10. ब्रह्मा का अपने पिता(काल) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न----------15
11. माता दुर्गा द्वारा ब्रह्मा को शाप देना----------16
12. विष्णु का अपने पिता ब्रह्म की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आर्शीवाद पाना----------17
13. एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र----------18
14. काल (ब्रह्म) के 21 ब्रह्मण्ड का लघु चित्र----------19
15. परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों की स्थापना----------20
16. वेदों में सृष्टि रचना का प्रमाण----------26
17. पवित्र अथर्ववेद में सृष्टि रचना का प्रमाण----------26
18. पवित्र ऋग्वेद में सृष्टि रचना का प्रमाण----------30
19. पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण (दुर्गा अर्थात् प्रकृति तथा सदा शिव अर्थात् काल रूपी ब्रह्म की मैथुन क्रिया से ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की उत्पत्ति)----------36
20. श्री मद्देवीभागवत से लेख----------38
21. पवित्र शिव महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण (दुर्गा अर्थात् प्रकृति तथा सदा शिव अर्थात् काल रूपी ब्रह्म की मैथुन क्रिया से ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की उत्पत्ति)----------41
22. पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी में सृष्टि रचना का प्रमाण (दुर्गा तथा

ब्रह्म की मैथुन क्रिया से ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की उत्पत्ति)----------48
23. उल्टे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष का चित्र----------50
24. सर्व प्रभुओं की आयु----------52
25. पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुर्आन शरीफ में सृष्टि रचना का प्रमाण----------56
26. पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना----------57
27. आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टि रचना का संकेत-60
28. राधा स्वामी व धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा पन्थों के सन्तों तथा अन्य संतों द्वारा सृष्टि रचना की दन्त कथा----------62
29. प्रथम किस्त ----------64
30. द्वितीय किस्त ----------73
31. तीसरी किस्त ----------85
32. चौथी किस्त ----------97
33. पांचवी किस्त ----------102
34. छठी किस्त ----------105
35. सातवीं किस्त ----------111
36. आठवीं किस्त ----------116
37. नौवीं किस्त ----------119
38. दसवीं किस्त ----------125
39. भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा ----------131
40. गायत्री मन्त्र क्या है ? ----------135
41. आर्य समाज प्रर्वत्तक श्री दयानन्द जी की जन्म पत्री----------140

❑❑❑

मूल्य पढ़ो और पढ़ाओ

संत रामपाल दास महाराज

सतलोक आश्रम

बन्दी छोड़ भक्ति मुक्ति ट्रस्ट (रजि. 3955),
रोहतक झज्जर रोड़, करौंथा, जि. रोहतक (हरि०) भारत।

सतलोक आश्रम, दौलतपुर रोड़, बरवाला, जि. हिसार (हरि०)भारत।

☎ **+91-9992600801, +91-9992600802, +91-9992600803,**
+91-9812166044, +91-9812151088, +91-9812026821,+91-9812142324

---

visit us at - www.jagatgururampalji.org
e-mail : jagatgururampalji@yahoo.com

सृष्टि रचना

श्री देवी भागवत पुराण के पहले स्कन्ध में अध्याय 1 से 8 पृष्ठ 21 से 43 पर प्रमाण है। कि महर्षि व्यास जी के परम शिष्य श्री सूत जी से शौनकादि ऋषियों ने प्रश्न किया कि हे सूत जी! कृपा आप देवी पुराण की पावन कथा सुनाऐं। श्री सूत जी ने कहा (पृष्ठ 23) पौराणिकों एवं वैदिकों का कथन है तथा यह भली–भांति विदित भी है कि ब्रह्मा जी इस अखिल जगत् के सृष्टा हैं। साथ ही वे यह भी कहते हैं कि ब्रह्मा जी का जन्म भगवान् विष्णु जी के नाभि कमल से हुआ है। फिर ऐसी स्थिती में ब्रह्मा जी स्वतन्त्र सृष्टा कैसे ठहरे ? भगवान् विष्णु को स्वतन्त्र सृष्टा नहीं कह सकते क्योंकि वे शेष नाग की शय्या पर सोए थे। नाभि से कमल निकला और उस पर ब्रह्मा जी प्रकट हुए। किन्तु वे श्री विष्णु जी भी तो किसी आधार पर अवलम्बित थे। उनके आधार भूत क्षीर समुन्द्र को भी स्वतन्त्र सृष्टा नहीं माना जा सकता क्योंकि वह रस है, रस बिना पात्र के ठहरता नहीं कोई न कोई उसका आधार रहना ही चाहिए। अतएव चराचर जगत् की आधार भूता भगवती जगदम्बिका ही सृष्टा रूप में निश्चित हुई'' (देवी पुराण के पृष्ठ 41 पर लिखा है :–) ऋषियों ने पूछा :– महाभाग सूत जी ! इस कथा प्रसंग को जानकर तो हमें बड़ा ही आश्चर्य हो रहा है, क्योंकि वेद, शास्त्र, पुराण और विज्ञ जनों ने सदा यही निर्णय किया है कि ब्रह्मा, विष्णु और शंकर–ये ही तीनों सनातन देवता हैं। इनसे बढ़कर इस ब्रह्माण्ड में दूसरा कोई देवता है ही नहीं। आपने इस सर्व की सृष्टि कारण भूत जिस जगदम्बिका (दुर्गा) के विषय में कहा है वह कौन शक्ति है उसकी सृष्टि (उत्पति) कैसे हुई। यह सब बताने की कृपा करें।

सूत जी कहते हैं :– मुनिवरों ! चराचर सहित इस त्रिलोकी में कौन ऐसा है जो इस संदेह को दूर कर सके। ब्रह्मा जी के पुत्र नारद, कपिल आदि दिव्य महापुरूष भी इस प्रश्न का समाधान करने में निरूपाय हो जाते हैं। महानुभावों ! यह बड़ा ही गहन और विचारणीय है। इस सम्बन्ध में मैं क्या कह सकता हूँ ?

(श्री देवीपुराण के तीसरे स्कन्ध के अध्याय 13 पृष्ठ 115 पर) नारद जी ने अपने पिता ब्रह्मा जी से पूछा ''पिता जी! यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड कहां से उत्पन्न हुआ है। विभो ! आपने सम्यक प्रकार से इसकी रचना की है ? अथवा विष्णु इस विश्व के रचियता हैं ? या शंकर ने इसकी सृष्टि की है ? जगत् प्रभो ! आप विश्व की आत्मा हैं। सच्ची बात बताने की कृपा करें। किस देवता की पूजा करनी चाहिए ? तथा कौन देवता (प्रभु) सबसे बड़ा एवं सर्व समर्थ है ? इन सभी प्रश्नों का समाधान करके मेरे हृदय के संदेह को दूर करने की कृपा कीजिए। ब्रह्मा जी ने कहा – बेटा मैं इस प्रश्न का क्या उत्तर दूँ ? यह प्रश्न बड़ा ही जटिल है। इस संसार में कोई भी रागी पुरूष ऐसा नहीं है जिसे यह रहस्य विदित हो। (श्री देवी पुराण से लेख समाप्त)

प्रिय पाठक जनों ! जिस सृष्टि रचना के विषय में तथा सर्व समर्थ प्रभु के विषय में न व्यास जी जानते हैं न श्री ब्रह्मा जी। उस रहस्य को इस सृष्टि रचना के उल्लेख में निम्न पढ़ें :-

प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न सृष्टि की रचना को पढ़ेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले ऊँगली

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में आत्मा और परमात्मा एक रूप होकर कबीर साहेब ही अनामी रूप में है। जैसे मिट्टी के डले (छोटे-छोटे टुकड़े) हो जाते हैं। फिर वर्षा होने पर एक पृथ्वी बन जाती है, अलग अस्तित्व नहीं रहता।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरुष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरुष रूप में रहते हैं।

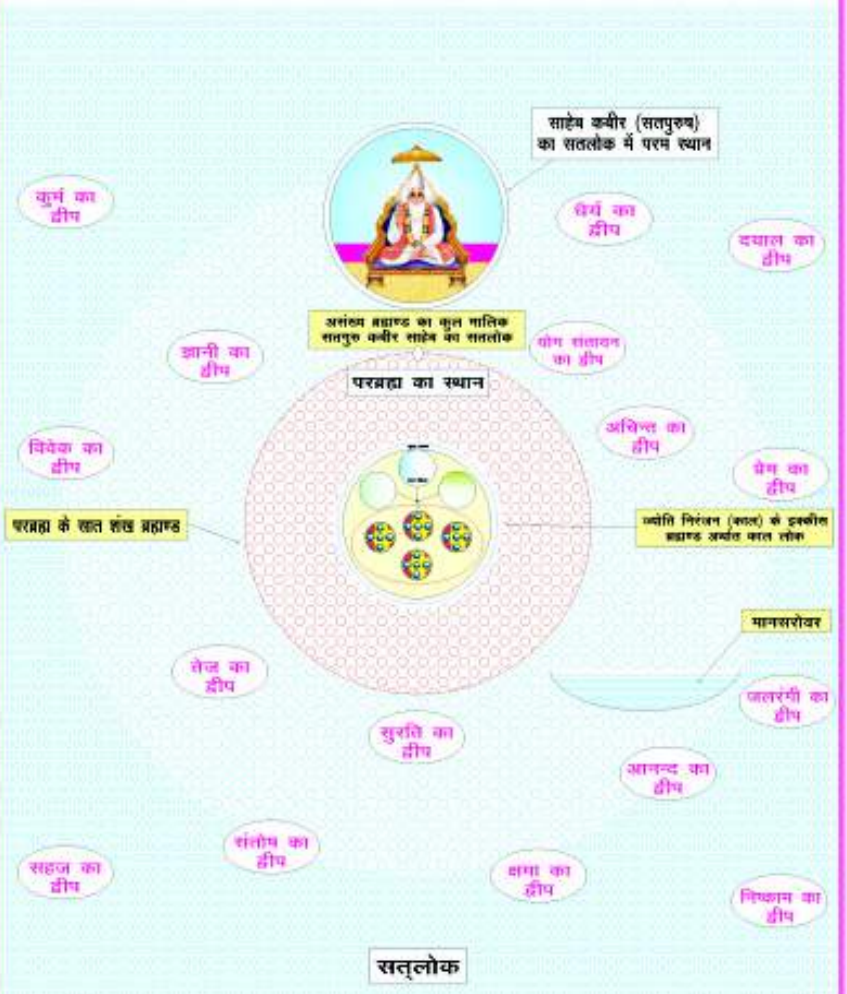

दबाऐंगे कि यह वास्तविक अध्यात्मिक अमृत ज्ञान कहाँ छुपा था? कृप्या धैर्य के साथ पढ़ते रहिए तथा इस अमृत ज्ञान को सुरक्षित रखिए। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कृप्या सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु अर्थात् सतपुरुष) द्वारा रची सृष्टि रचना अर्थात् अपने द्वारा निर्मित सर्व लोकों की रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. इस सृष्टी रचना में सतपुरुष, सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष, अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष अनामी लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है। जो भिन्न-2 रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्मण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परंतु यह तथा इसके ब्रह्मण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्मण्ड नाशवान हैं।

4. ब्रह्मा :- इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा कहलाता है तथा विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्मण्ड में एक विभाग (गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तृत विवरण के लिए कृप्या पढ़ें निम्न लिखित सृष्टी रचना।

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है। उसी ज्ञान को कृप्या पढ़िए लेखक के शब्दों में}

परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिया ज्ञान लेखक के शब्दों में :- सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है पूर्ण परमात्मा उस अनामी अर्थात् अकह लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सर्व आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम कूप का प्रकाश असंख्य सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।

विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेता है। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करता है तो उस समय उसी पद को लिखता है। जैसे

गृहमंत्रालय के हस्ताक्षर करेगा तो अपने को गृह मंत्री लिखेगा। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति प्रधान मंत्री रूप में किए हस्ताक्षर से कम होती है। जबकि व्यक्ति वही होता है इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर होता जाता है।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द (वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है। जिसके एक रोम कूप की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति स्वयं प्रकाशित) है। एक रोम कूप की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है।

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की, एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया,

वहाँ जल में प्रवेश करके स्नान करने लगा। शीतल जल में आनन्द आया तथा जल में ही सो गया (क्योंकि सतलोक में शरीर स्वांसों पर आधारित नहीं है) *लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमृत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष(कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे। (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्मण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति/परानन्दनी भी कहते हैं। सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदृश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16(सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदृश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर का करोड़ों सूर्यों से भी अधिक एक रोम कूप का प्रकाश है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।*

"आत्माऐं काल के जाल में कैसे फंसी ?"

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सर्व आत्माऐं जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्मण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा आत्मा से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्तता क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल सृष्टि में सर्व प्राणियों में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्मी स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे अभिनय पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाते हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुट रहे हैं। माता–पिता कितना ही

समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं – कभी न कभी लुक–छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कृपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्मण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इसमें कुछ रचना करनी चाहिए। खाली ब्रह्मण्ड (प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्मण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि हे ब्रह्म ! तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्मण्ड दे सकता हूँ, परन्तु अपनी प्रिय आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के फल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वइच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन उन आत्माओं के पास आया। जो पहले से ही उस पर आसक्त थे। वे आत्माऐं उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्मण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार से रमणिक स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सर्व हंसों ने जो आज 21 ब्रह्मण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तो। तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकृति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष (कैल) तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा) दोनों उन हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकृति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं उन) सर्व आत्माओं ने हाँ कर दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्मण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्मण्ड सतलोक में ही थे।

तत् पश्चात पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र

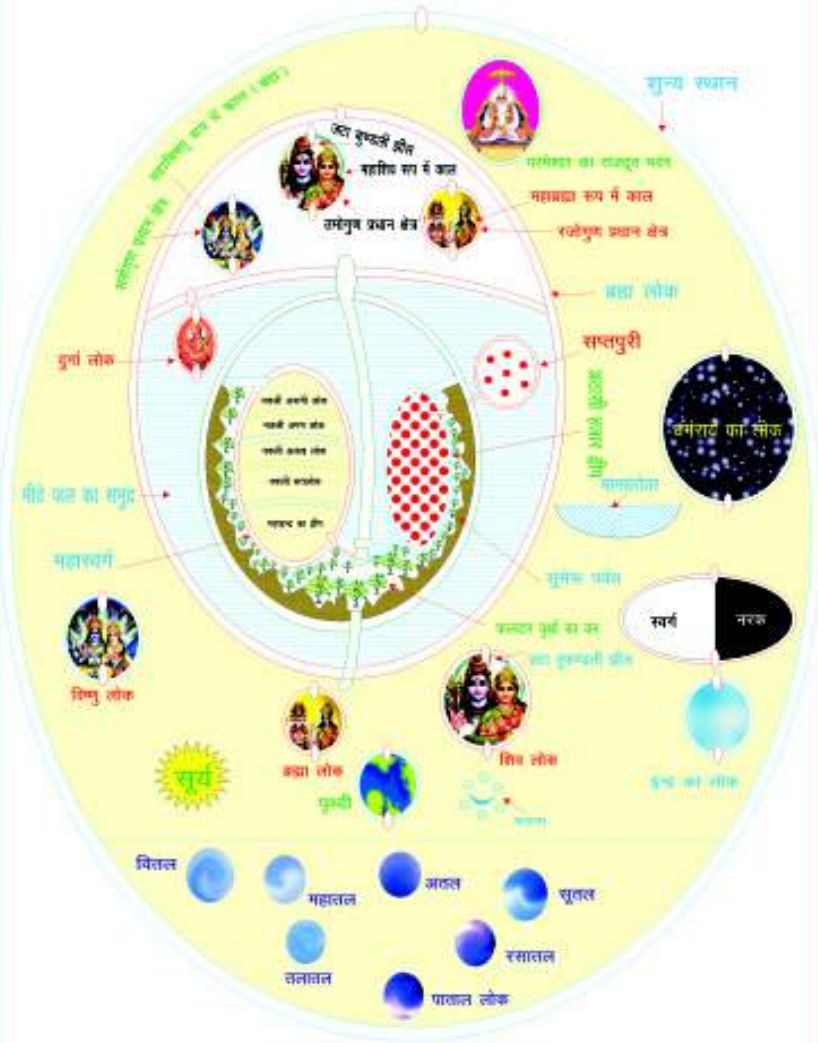

ब्रह्म लोक का लघु चित्र

दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा उन सर्व आत्माओं को जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकृति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर साहेब) ने अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकृति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इस बहन को वचन शक्ति प्रदान की है। आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा प्रारम्भ मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह विवाहकर्म महापाप का कारण है। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखूनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सूक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव (कबीर प्रभु)से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मृत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्मण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्मण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

{विशेष विवरण – अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/परम अक्षर पुरुष आदि। यह पूर्णब्रह्म सर्व ब्रह्मण्डों का स्वामी है अर्थात् वासुदेव है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्मण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है। जो केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टि के एक ब्रह्मण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें आपको तीन अन्य नाम पढ़ने को मिलेंगे – ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद – एक ब्रह्मण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्मण्ड में बने चौदह लोकों में से केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा जाता है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकीय ब्रह्मा कहा जाता है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा जाता है।}

"श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति"

काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) ने प्रकृति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाड़ेगा? मन मानी करूंगा। प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी कबीर पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप ब्रह्म की अण्डे से उत्पत्ति हुई है तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी तू कहेगा मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूंगा। यह कह कर प्रकृति के साथ बलपूर्वक विवाह किया तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। युवा होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करा दिया, युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्त्रित किया तथा प्रकृति (दुर्गा) के द्वारा इन तीनों का विवाह किया। एक ब्रह्मण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त किए। जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सत्तोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का प्रभु बनाया तथा स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्मण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप

में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। उसका नाम ब्रह्मा रखता है दूसरा सत्तोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रखता है दोनों के संयोग से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सत्तोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से तमोगुण युक्त पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं।(प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 8, 9 पृष्ठ नं. 99 से 110 तक, अनुवाद कर्त्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरख पुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्त्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) ***इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार श्री शिव जी द्वारा करवाता है।*** (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वयं गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) ***गुण प्रधान क्षेत्र को समझने के लिए :- जैसे किसी घर में तीन कक्ष बने हों। एक कक्ष में अश्लील चित्र लगे हों। उस कक्ष में जाते ही मन में वैसे ही मलीन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कक्ष में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार उत्पन्न होते हैं तथा प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कक्ष में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना ब्रह्मलोक में की हुई है।***

''तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके

सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टि-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा - अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा (42)।

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो। (42)

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः। (8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् हम तीनों को जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण - ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव हैं ये तीनों नाशवान है। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग विलास करता है।

"ब्रह्म काल की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा"

तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकृति) से कहा कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूंगा। जिस कारण से मैं

अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं दोगे ? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं दूंगा, यह मेरा अटल नियम रहेगा। दुर्गा ने कहा यह तो आपका उत्तम नियम नहीं है जो आप अपनी संतान से भी छुपे रहोगे। तब काल ने कहा दुर्गा मेरी विवशता है। मुझे एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करने का शाप लगा है। यदि मेरे पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को पता लग गया तो ये उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य नहीं करेंगे। इसलिए यह मेरा अनुत्तम नियम सदा रहेगा। आप मेरी आज्ञा का पालन करो जब ये तीनों कुछ बड़े हो जाऐं तो इन्हें अचेत कर देना। मेरे विषय में नहीं बताना, नहीं तो मैं तुझे भी दण्ड दूंगा। दुर्गा इस डर के मारे वास्तविकता नहीं बताती। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में कहा है कि यह बुद्धिहीन जन समुदाय मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया हुआ अर्थात् कृष्ण मानते हैं।

अध्याय 7 का श्लोक 24

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्। २४।

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धि हीन (मम) मेरे अनुत्तम अर्थात् घटिया (अव्ययम्) अविनाशी (परम् भावम्) विशेष भाव को (अजानन्तः) न जानते हुए (माम् अव्यक्तम्) मुझ अव्यक्त को (व्यक्तिम्) मनुष्य रूप में (आपन्नम) आया (मन्यन्ते) मानते हैं अर्थात् मैं कृष्ण नहीं हूँ। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24)

केवल हिन्दी अनुवाद : बुद्धि हीन मेरे अनुत्तम अर्थात् घटिया अविनाशी विशेष भाव को न जानते हुए मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया मानते हैं अर्थात् मैं कृष्ण नहीं हूँ। (24)

गीता अध्याय 11 श्लोक 47 तथा 48 में कहा है कि यह मेरा वास्तविक काल रूप है। इसके दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से, न जप से, न तप से तथा न किसी क्रिया से हो सकती है।

जब तीनों बच्चे युवा हो गए तब माता दुर्गा (प्रकृति/अष्टंगी) ने कहा कि तुम सागर मन्थन करो। (ज्योति निरंजन ने अपने श्वांसों द्वारा चार वेद उत्पन्न किए। उनको गुप्त वाणी द्वारा आज्ञा दी कि सागर में निवास करो) प्रथम बार सागर मन्थन किया तो चारों वेद निकले वह ब्रह्मा ने लिए। वस्तु लेकर तीनों बच्चें माता के पास आए तब माता ने कहा कि चारों वेदों को ब्रह्मा रखे व पढ़े।

नोट :- वास्तव में पूर्णब्रह्म ने, ब्रह्म काल को पाँच वेद प्रदान किए थे। लेकिन ब्रह्म ने केवल चार वेदों को प्रकट किया। पाँचवां वेद छुपा दिया। जो पूर्ण परमात्मा ने स्वयं प्रकट होकर कविर्गिरिः अर्थात् कविर्वाणी(कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों व दोहों के

माध्यम से प्रकट किया है।

दूसरी बार सागर मन्थन किया तो तीन कन्याऐं मिली। माता ने तीनों को बांट दिया। प्रकृति (दुर्गा) ने अपने ही अन्य तीन रूप (सावित्री,लक्ष्मी तथा पार्वती) धारण किए तथा समुन्द्र में छुप गई। सागर मन्थन के समय तीन भिन्न-2 रूपों में बाहर आई। गीता अध्याय 7 श्लोक 4 से 6 में स्पष्ट है कि जो जड़ प्रकृति है उससे भिन्न जो चेतन प्रकृति है। वह दुर्गा है। गीता अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 में स्पष्ट किया है कि सर्व प्राणी प्रकृति से उत्पन्न किए हैं मैं उसकी योनि में बीज स्थापित करता हूँ मैं सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा दुर्गा (प्रकृति) सब की माता है फिर श्लोक 5 में कहा है कि तीनों गुण (रजगुण, सतगुण, तमगुण) प्रकृति से उत्पन्न हुए हैं।

सिद्ध हुआ कि प्रकृति अर्थात् दुर्गा ही तीन रूप हुई। उन्हीं में से वही प्रकृति तीन रूप हुई तथा भगवान ब्रह्मा को सावित्री, भगवान विष्णु को लक्ष्मी, भगवान शंकर को पार्वती पत्नी रूप में दी। तीनों ने भोग विलास किया, सुर तथा असुर दोनों पैदा हुए।

{जब तीसरी बार सागर मन्थन किया तो चौदह रत्न ब्रह्मा को तथा अमृत विष्णु को व देवताओं को, मद्य(शराब) असुरों को तथा विष परमार्थ शिव ने अपने कंठ में ठहराया। यह तो बहुत बाद की बात है।} *जब ब्रह्मा वेद पढ़ने लगा तो पता चला कि कोई सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला कुल का मालिक पुरूष (प्रभु) और है। तब ब्रह्मा जी ने विष्णु जी व शंकर जी से बताया कि वेदों में वर्णन है कि सृजनहार कोई और प्रभु है परन्तु वेद कहते हैं कि भेद हम भी नहीं जानते, उसके लिए संकेत है कि किसी तत्वदर्शी संत से पूछो। तब ब्रह्मा माता के पास आया और सब वृतांत कह सुनाया। माता कहा करती थी कि मेरे अतिरिक्त अन्य कोई प्रभु नहीं है। मैं ही कर्त्ता हूँ। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु ब्रह्मा ने कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं यह झूठ नहीं हो सकते। दुर्गा ने कहा कि तेरा पिता तुझे दर्शन नहीं देगा, उसने कसम खाई है। तब ब्रह्मा ने कहा माता जी अब आप की बात पर अविश्वास हो गया है। मैं उस पुरूष (प्रभु) का पता लगाकर ही रहूँगा। दुर्गा ने कहा कि यदि वह तुझे दर्शन नहीं देगा तो तू क्या करेगा? ब्रह्मा ने कहा कि मैं आपको मुख नहीं दिखाऊँगा। दूसरी तरफ ज्योति निरंजन ने कसम खाई है कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूंगा अर्थात् 21 ब्रह्मण्ड में कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में आकार में नहीं आऊँगा।*

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 24

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्। २४।

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धिहीन लोग (मम) मेरे (अनुतमम्) अश्रेष्ठ (अव्ययम्) अटल (परम्) परम (भावम्) भावको (अजानन्तः) न जानते हुए (अव्यक्तम्) अदृश्यमान छुपे हुए अर्थात् परोक्ष (माम्)

मुझ (व्यक्तिम्) मानव आकार में अर्थात् कृष्ण अवतार (आपन्नम्) प्राप्त हुआ (मन्यन्ते) मानते हैं।(24)

केवल हिन्दी अनुवाद : बुद्धिहीन लोग मेरे अश्रेष्ठ अटल परम भावको न जानते हुए अदृश्यमान छुपे हुए अर्थात् परोक्ष मुझ मानव आकार में अर्थात् कृष्ण अवतार प्राप्त हुआ मानते हैं।(24)

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 25

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्। २५।

न, अहम्, प्रकाशः, सर्वस्य, योगमायासमावृतः।
मूढः, अयम्, न, अभिजानाति, लोकः, माम्, अजम्, अव्ययम्।

अनुवाद : (अहम्) मैं (योगमाया समावृतः) योगमायासे छिपा हुआ अर्थात् अव्यक्त रूप में रहता हुआ (सर्वस्य) सबके (प्रकाशः) प्रत्यक्ष (न) नहीं होता अर्थात् अदृश्य रहता हूँ इसलिये (अजम्) जन्म न लेने वाले (अव्ययम्) अविनाशी अटल भावको (अयम्) यह (मूढः) अज्ञानी (लोकः) जनसमुदाय संसार (माम्) मुझे (न) नहीं (अभिजानाति) जानता अर्थात् मुझको अवतार रूप में आया कृष्ण समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने भिन्न–भिन्न रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।(25)

केवल हिन्द अनुवाद : मैं योगमायासे छिपा हुआ अर्थात् अव्यक्त रूप में रहता हुआ सबके प्रत्यक्ष नहीं होता अर्थात् अदृश्य रहता हूँ इसलिये जन्म न लेने वाले अविनाशी अटल भावको यह अज्ञानी जनसमुदाय संसार मुझे नहीं जानता अर्थात् मुझको अवतार रूप में आया कृष्ण समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने भिन्न-भिन्न रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।(25)

"ब्रह्मा का अपने पिता(काल) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न"

जब दुर्गा ने ब्रह्मा जी से कहा कि अलख निंरजन तुम्हारा पिता है परन्तु वह तुम्हें दर्शन नहीं देगा। यह सुनकर ब्रह्मा जी व्याकुल होकर उत्तर दिशा की ओर चल दिया। जहां अन्धेरा ही अन्धेरा है। वहाँ ब्रह्मा ने चार युग तक ध्यान लगाया परन्तु कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। काल ने आकाशवाणी की कि दुर्गा सृष्टि रचना क्यों नहीं की। भवानी ने कहा आप का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जिद्द करके आप की तलाश में गया है। ब्रह्म(काल) ने कहा उसे वापिस बुला लो। मैं उसे दर्शन नहीं दूँगा। ब्रह्मा के बिना सब कार्य असम्भव है। तब दुर्गा(प्रकृति) ने अपनी शब्द शक्ति से गायत्री नाम की लड़की उत्पन्न की तथा उसे ब्रह्मा को लौटा लाने को कहा। गायत्री ब्रह्मा जी के पास गई परंतु ब्रह्मा जी समाधि लगाए हुए था उसे कोई आभास ही नहीं था कि कोई आया है। तब आदि कुमारी (प्रकृति) ने गायत्री को ध्यान द्वारा बताया कि इस के चरण स्पर्श कर। तब गायत्री ने ऐसा ही किया। ब्रह्मा जी का ध्यान भंग हुआ तो क्रोध वश बोला तू कौन पापिन है जिसने मेरा ध्यान भंग किया है। मैं तुझे शाप दूंगा। गायत्री ने कहा की मेरा दोष नहीं है

पहले मेरी बात सुनो तब शाप देना। मेरे को माता ने तुम्हें लौटा लाने को कहा है क्योंकि आपके बिना जीव उत्पत्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा ने कहा कि मैं कैसे जाऊँ? पिता जी के दर्शन हुए नहीं, ऐसे जाऊँ तो मेरा उपहास होगा। यदि आप माता जी के समक्ष यह कह दें कि ब्रह्मा ने पिता (ज्योति निरंजन) के दर्शन हुए हैं, मैंने अपनी आँखो से देखा है तो मैं आपके साथ चलूं। तब गायत्री ने कहा कि आप मेरे साथ संभोग (सैक्स) करोगे तो मैं आपकी झूठी साखि (गवाही) भरूँ। तब ब्रह्मा ने सोचा कि पिता के दर्शन हुए नहीं वैसे जाऊँ तो माता के सामने शर्म लगेगी अन्य विकल्प न देख गायत्री से रति क्रिया (संभोग) की।

तब गायत्री ने कहा कि क्यों न एक गवाह और तैयार किया जाए। ब्रह्मा ने कहा बहुत ही अच्छा है। तब गायत्री ने शब्द शक्ति से एक लड़की पुहपवति नाम की उत्पन्न की तथा उससे दोनों ने कहा कि आप गवाही देना कि ब्रह्मा ने पिता के दर्शन किए हैं। तब पुहपवति ने कहा कि मैं क्यों झूठी गवाही दूँ। हाँ यदि ब्रह्मा मेरे से रति क्रिया (संभोग) करे तो गवाही दे सकती हूँ। गायत्री ने ब्रह्मा को समझाया (उकसाया) कि और कोई चारा नहीं है तब ब्रह्मा ने पुहपवति से संभोग किया तो तीनों मिलकर आदि माया (प्रकृति) के पास आए। दोनों देवियों ने उपरोक्त शर्त इसलिए रखी थी कि यदि ब्रह्मा माता के सामने हमारी झूठी गवाही को बता देगा तो माता हमें शाप दे देगी। इसलिए उसे भी दोषी बना लिया।

(यहां महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि – ''दास गरीब यह चूक धुरों धुर'')

"माता दुर्गा द्वारा ब्रह्मा को शाप देना"

तब माता ने ब्रह्मा से पूछा क्या तुझे तेरे पिता के दर्शन हुए? तब तीनों ने कहा कि हाँ हमने अपनी आँखों से देखा है। भवानी (प्रकृति) को संशय हुआ कि मुझे तो ब्रह्म ने कहा था कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूंगा, परन्तु ये कहते हैं कि दर्शन हुए हैं। तब अष्टंगी ने ध्यान लगाया और काल ज्योति निरंजन से पूछा कि यह क्या कहानी है? ज्योति निंरजन जी ने कहा कि ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब माता ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो आकाशवाणी हुई है कि इन्हें कोई दर्शन नहीं हुए। यह बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि माता जी मैं प्रतिज्ञा करके पिता की खोज करने गया था। परन्तु पिता ब्रह्म के दर्शन हुए नहीं। आप के पास आने में शर्म लग रही थी। इसलिए हमने झूठ बोल दिया। तब माता (दुर्गा) ने कहा अब मैं तुम्हें शाप देती हूँ।

<u>ब्रह्मा को शाप</u> : -- तेरी पूजा जग में नहीं होगी। आगे तेरे वंशज होंगे वे बहुत पाखण्ड करेंगे। झूठी बात बना कर जग को ठगेंगे। ऊपर से तो कर्म काण्ड करते दिखाई देंगे अन्दर से विकार करेंगे। पुराणों को पढ़कर सुनाया करेंगे, स्वयं को ज्ञान नहीं होगा कि सद्ग्रन्थों में वास्तविकता क्या है, फिर भी मान वश तथा धन प्राप्ति के लिए गुरु बन कर अनुयाईयों को लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध दंत कथा) सुनाया करेंगे।

देवी-देवों की पूजा करके तथा करवाके, दूसरों की निन्दा करके कष्ट पर कष्ट उठायेंगे। जो उनके अनुयाई होंगे उनको परमार्थ नहीं बताएंगे। दक्षिणा के लिए जगत को गुमराह करते रहेंगे। अपने आपको सबसे अच्छा मानेंगे, दूसरों को नीचा समझेंगे। जब माता के मुख से यह सुना तो ब्रह्मा मूर्छित होकर जमीन पर गिर गया। बहुत समय उपरान्त होश में आया।

<u>गायत्री को शाप</u> : -- तेरे कई सांड पति होंगे। तू मृतलोक में गाय बनेगी।

<u>पुहपवति को शाप</u> : -- तेरी जगह गंदगी में होगी। तेरे फूलों को कोई पूजा में नहीं लाएगा। इस झूठी गवाही के कारण तुझे यह नरक भोगना होगा। तेरा नाम केवड़ा केतकी होगा। {हरियाणा में कुसोंधी कहते हैं। यह गंदगी (कुरड़ियों) वाली जगह पर होती है।}

इस प्रकार तीनों को शाप देकर माता भवानी बहुत पछताई। {इस प्रकार पहले तो जीव बिना सोचे मन (काल निरंजन) के प्रभाव से गलत कार्य कर देता है परन्तु जब आत्मा (सतपुरूष अंश) के प्रभाव से उसे ज्ञान होता है तो पीछे पछताना पड़ता है। जिस प्रकार माता–पिता अपने बच्चों को छोटी सी गलती के कारण ताड़ते हैं (क्रोधवश होकर) परन्तु बाद में बहुत पछताते हैं। यही प्रक्रिया मन (काल–निंरजन) के प्रभाव से सर्व जीवों में क्रियावान हो रही है।} ***यहाँ एक बात विशेष है कि निरंजन (काल/ब्रह्म) ने भी अपना कानून बना रखा है कि यदि कोई जीव किसी दुर्बल जीव को सत्ताएगा तो उसे उसका बदला देना पड़ेगा। जब भवानी (प्रकृति/अष्टंगी) ने ब्रह्मा, गायत्री व पुहपवति को शाप दिया तो अलख निंरजन (ब्रह्म/काल) ने कहा कि हे भवानी (प्रकृति/अष्टंगी) यह आपने अच्छा नहीं किया। अब मैं (ज्योति निरंजन) आपको शाप देता हूँ कि द्वापर युग में तेरे भी पाँच पति होंगे। (द्रोपदी ही दुर्गा का अवतार हुई है।) जब यह आकाश वाणी सुनी तो आदि माया ने कहा कि हे ज्योति निंरजन (काल) मैं तेरे वश पड़ी हूँ जो चाहे सो कर ले।***

"विष्णु का अपने पिता ब्रह्म की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आर्शीवाद पाना"

इसके बाद विष्णु से प्रकृति ने कहा कि पुत्र तू भी अपने पिता का पता लगा ले। तब विष्णु अपने पिता जी ब्रह्म का पता करते-करते पाताल लोक में चले गए, जहाँ शेषनाग था। उसने विष्णु को अपनी सीमा में प्रवेश किया देख कर क्रोधित हो कर विष भरा फूंकारा मारा। उसके विष के प्रभाव से विष्णु जी का रंग सांवला हो गया, जैसे स्प्रे पेंट हो जाता है। तब विष्णु ने चाहा कि इस नाग को सजा देनी चाहिए। ज्योति निरंजन (काल) ने देखा कि विष्णु को शांत करना चाहिए तब आकाशवाणी हुई कि विष्णु अब तू अपनी माता जी के पास जा और सत्य-सत्य सारा विवरण बता देना तथा जो कष्ट आपको शेषनाग से हुआ है, इसका प्रतिशोद्ध द्वापर युग में लेना। द्वापर युग में आप (विष्णु) तो कृष्ण अवतार धारण करोगे और कालीदह में कालिन्द्री नामक नाग, शेष नाग का अवतार होगा।

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र

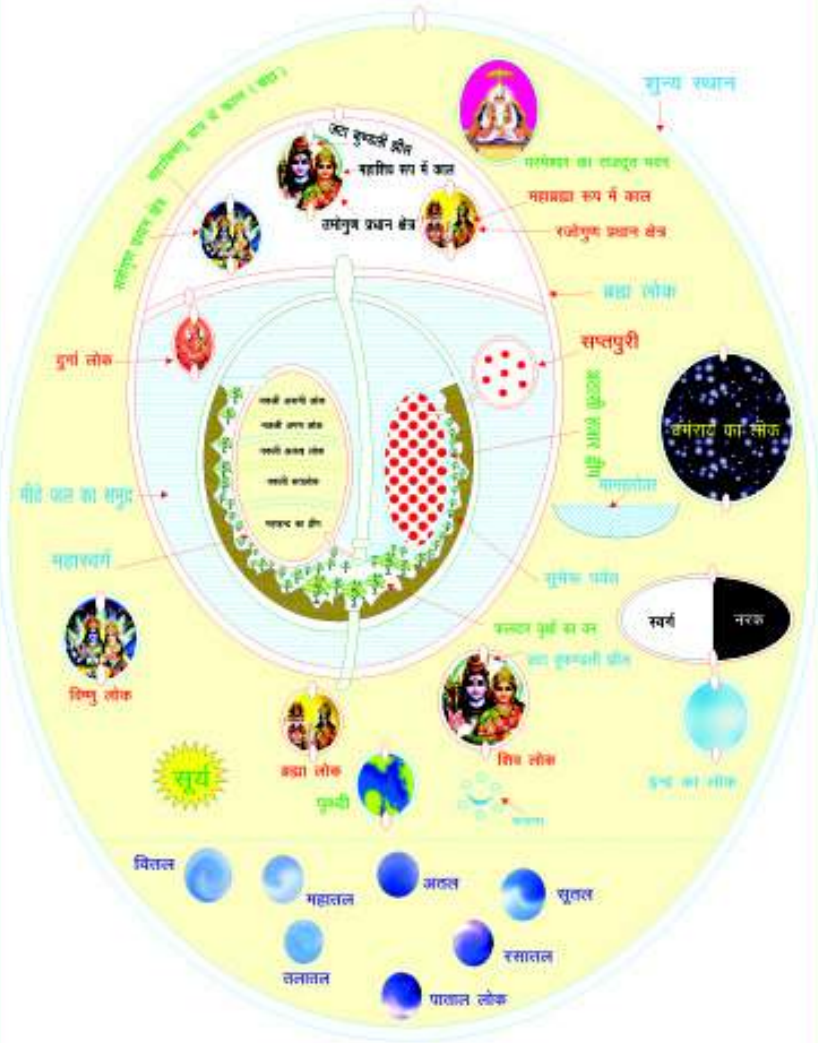

ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र

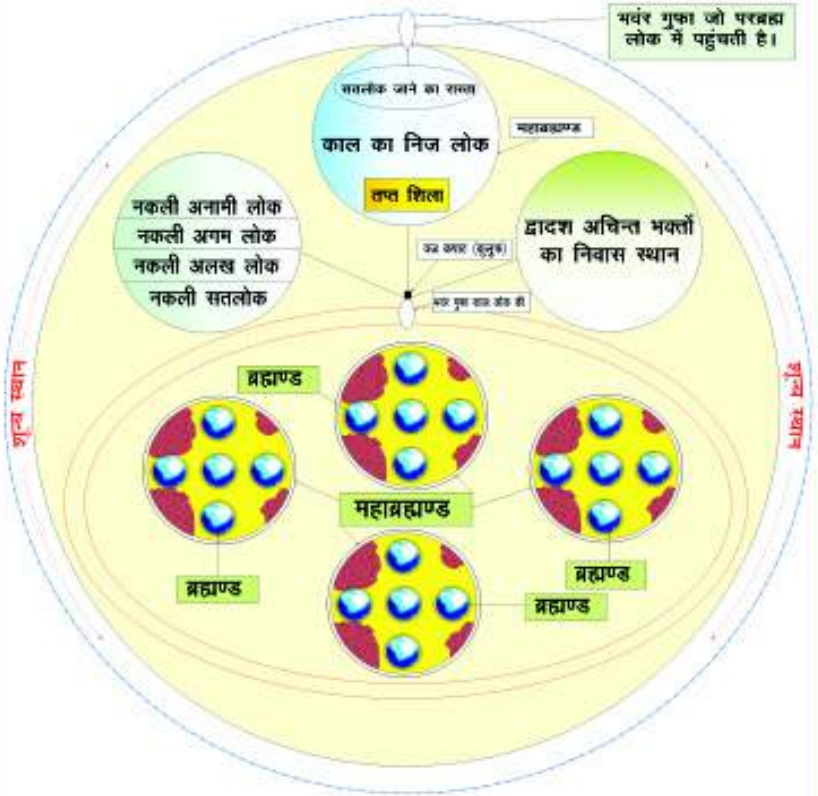

ऊँच होई के नीच सतावै, ताकर ओएल (बदला) मोही सों पावै।
जो जीव देवे पीर पुनी काँहु, हम पुनि ओएल दिवावें ताहूँ।।

तब विष्णु जी माता जी के पास आए तथा सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। इस बात से माता प्रकृति बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि पुत्र तू सत्यवादी है। अब मैं अपनी शक्ति से आपको तेरे पिता से मिलाती हूँ तथा तेरे मन का संशय समाप्त करती हूँ।

कबीर, देख पुत्र तोहि पिता भीटाऊँ, तौरे मन का धोखा मिटाऊँ।
मन स्वरूप कर्ता कह जानों, मन ते दूजा और न मानो।
स्वर्ग पाताल दौर मन केरा, मन अस्थीर मन अहै अनेरा।
निंरकार मन ही को कहिए, मन की आस निश दिन रहिए।
देख हूँ पलटि सुन्य मह ज्योति, जहाँ पर झिलमिल झालर होती।।

इस प्रकार अष्टंगी (प्रकृति) ने विष्णु से कहा कि मन ही जग का कर्ता है, यही ज्योति निरंजन है। ध्यान में जो एक हजार ज्योतियाँ नजर आती हैं वही उसका रूप है। जो शंख, घण्टा आदि का बाजा सुना, यह महास्वर्ग में निरंजन का ही बज रहा है। तब अष्टंगी (प्रकृति) ने कहा कि हे पुत्र तुम सब देवों के सरताज हो और तेरी हर कामना व कार्य मैं पूर्ण करूंगी। तेरी पूजा सर्व जगत् में होगी। आपने मुझे सच-सच बताया है। काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों के प्राणियों की विशेष आदत है कि अपनी व्यर्थ महिमा बनाता है। जैसे दुर्गा जी श्री विष्णु जी को कह रही है कि तेरी पूजा जगत् में होगी। मैंने तुझे तेरे पिता के दर्शन करा दिए। दुर्गा ने केवल प्रकाश दिखा कर श्री विष्णु जी को बहका दिया। श्री विष्णु जी भी प्रभु की यही स्थिति अपने अनुयाईयों को समझाने लगे कि परमात्मा का केवल प्रकाश दिखाई देता है। परमात्मा निराकार है। जबकि सर्व शास्त्रों में परमात्मा साकार-मानव सदृश शरीर युक्त लिखा है। इसके बाद आदि भवानी, रूद्र (महेश जी) के पास गई तथा कहा कि महेश तू भी कर ले अपने पिता की खोज तेरे दोनों भाइयों को तो तुम्हारे पिता के दर्शन नहीं हुए उनको जो देना था वह प्रदान कर दिया है अब आप माँगो जो माँगना है। तब महेश ने कहा कि हे जननी! यदि मेरे दोनों बड़े भाईयों को पिता के दर्शन नहीं हुए फिर तो प्रयत्न करना व्यर्थ है। कृपा मुझे ऐसा वर दो कि मैं अमर (मृत्युंजय) हो जाऊँ। तब माता ने कहा कि यह मैं नहीं कर सकती। हाँ युक्ति बता सकती हूँ, जिससे तेरी आयु सबसे लम्बी बनी रहेगी। विधि योग समाधि है (इसलिए महादेव जी ज्यादातर समाधि में ही रहते हैं)। तीनों पुत्रों को विभाग बांट दिए : --

भगवान ब्रह्मा जी को काल लोक में लख चौरासी के चौले (शरीर) रचने (बनाने) का अर्थात् रजोगुण प्रभावित करके संतान उत्पत्ति के लिए विवश करके जीव उत्पत्ति कराने का विभाग प्रदान किया।

भगवान विष्णु जी को इन जीवों में मोह-ममता उत्पन्न करके स्थिति बनाए रखने

का विभाग प्रदान किया।

भगवान शिव शंकर (महादेव) को संहार करने का विभाग प्रदान किया।

क्योंकि इनके पिता निरंजन को एक लाख मानव शरीर धारी जीव प्रतिदिन खाने पड़ते हैं।

उपरोक्त विवरण एक ब्रह्मण्ड का है। ऐसे-ऐसे क्षर पुरुष (अर्थात् काल भगवान) के इक्कीस ब्रह्मण्ड हैं।

परन्तु क्षर पुरूष (काल) स्वयं व्यक्त नहीं होता अर्थात् वास्तविक शरीर रूप में सबके सामने नहीं आता। उसी को प्राप्त करने के लिए तीनों देवों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी) को वेदों में वर्णित विधि अनुसार भरसक साधना करने पर भी ब्रह्म (काल) के दर्शन नहीं हुए। बाद में ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। परन्तु नहीं समझ सके क्योंकि सबकी बुद्धि काल वश है। वेदों में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि' (पवित्र यजुर्वेद अ. 1 मंत्र 15) परमेश्वर सशरीर है तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 दो बार में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि'*। इस मंत्र में दो बार वेद गवाही दे रहा है कि सर्वव्यापक, सर्वपालन कर्ता सतपुरुष सशरीर है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कहा है कि (कविर् मनिषी) जिस परमेश्वर की सर्व प्राणियों को चाह है, वह कविर् अर्थात् कबीर परमेश्वर पूर्ण विद्वान् है। उसका शरीर बिना नाड़ी (अस्नाविरम्) का है, (शुक्रम् अकायम्) वीर्य से बनी पाँच तत्व से बनी भौतिक काया रहित है। वह सर्व का मालिक सर्वोपरि सत्यलोक में विराजमान है, उस परमेश्वर का तेजपुंज का (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित शरीर है जो शब्द रूप अर्थात् अविनाशी है। वही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला (व्यदधाता) सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला (यथा तथ्यः अर्थान्) वास्तव में (शाश्वतिभः) अविनाशी है जिसके विषय में वेद वाणी द्वारा भी जाना जाता है कि परमात्मा साकार है तथा उसका नाम कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है(गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी प्रमाण है।) भावार्थ है कि पूर्ण ब्रह्म का शरीर का नाम कबीर (कविर देव) है। उस परमेश्वर का शरीर नूर तत्व से बना है। परमात्मा का शरीर अति सूक्ष्म है जो उस साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार जीव का भी सुक्ष्म शरीर है जिसके ऊपर पाँच तत्व का खोल (कवर) अर्थात् पाँच तत्व की काया चढ़ी होती है जो माता-पिता के संयोग से (शुक्रम) वीर्य से बनी है। शरीर त्यागने के पश्चात् जीव जिस भी योनी में जाता है। जीव का सुक्ष्म शरीर साथ रहता है। वह शरीर उसी साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार परमात्मा व जीव की साकार स्थिति को समझें। वेदों में ओ३म् नाम के स्मरण का प्रमाण है जो केवल ब्रह्म साधना है। इस उद्देश्य से ओ३म् नाम के जाप को पूर्ण ब्रह्म का जान कर ऋषियों ने भी हजारों वर्ष हठयोग (समाधी लगा कर) करके प्रभु प्राप्ति की चेष्टा*

की, परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उन्हीं सिद्धी रूपी खिलौनों से खेल कर ऋषि भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए तथा अपने अनुभव के शास्त्रों में परमात्मा को निराकार लिख दिया। ब्रह्म (काल) ने प्रतिज्ञा की है कि मैं अपने वास्तविक रूप में किसी को दर्शन नहीं दूँगा। मुझे अव्यक्त कहा करेंगे (अव्यक्त का भावार्थ है कि कोई आकार में है परन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थूल रूप में दर्शन नहीं देता। जैसे आकाश में बादल छा जाने पर दिन के समय सूर्य अदृश हो जाता है। वह दृश्यमान नहीं है, परन्तु वास्तव में बादलों के पार ज्यों का त्यों है, इस अवस्था को अव्यक्त अर्थात् परोक्ष कहते हैं।)*। (प्रमाण के लिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 11 श्लोक 47, 48 तथा 32)*

पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कह रहा है कि अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सर्व को खाने के लिए आया हूँ। यह मेरा वास्तविक रूप है, इसको तेरे अतिरिक्त न तो कोई पहले देख सका तथा न कोई आगे देख सकता अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञ-जप-तप तथा ओ३म् नाम आदि की विधि से मेरे इस वास्तविक स्वरूप के दर्शन नहीं हो सकते। (अध्याय 11 श्लोक 32 से 48) मैं कृष्ण नहीं हूँ, ये मूर्ख लोग कृष्ण रूप में मुझ अव्यक्त को व्यक्त (मनुष्य रूप) मान रहे हैं। क्योंकि ये मेरे घटिया नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी वास्तविक इस काल रूप में सबके सामने नहीं आता। क्योंकि मैं अपनी योग माया अर्थात् सिद्धी शक्ति से छिपा रहता हूँ (गीता अध्याय 7 का श्लोक 24-25) विचार करें :- अपने छूपे रहने वाले विधान को स्वयं अश्रेष्ठ (अनुत्तम) क्यों कह रहे हैं?

क्योंकि जो पिता अपनी सन्तान को भी दर्शन नहीं देता तो उसमें कोई त्रुटि है जिस कारण से छुपा है तथा सुविधाएं भी प्रदान कर रहा है। काल (ब्रह्म) को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करना पड़ता है तथा 25 हजार प्रतिदिन जो अधिक उत्पन्न होते हैं उन्हें ठिकाने लगाने के लिए तथा कर्म भोग का दण्ड देने के लिए चौरासी लाख योनियों की व्यवस्था की हुई है। यदि सबके सामने बैठ कर किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी के पुत्र, माता-पिता को खाए तो सर्व को काल ब्रह्म से घृणा हो जाए तथा जब भी कभी पूर्ण परमात्मा कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) स्वयं आऐं या अपना कोई संदेशवाहक (दूत) भेंजे तो सर्व प्राणी सत्यभक्ति करके काल के जाल से निकल जाएं। इसलिए धोखा देकर रखता है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18,24,25 में अपनी साधना से होने वाली मुक्ति (गति) को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है तथा अपने विधान (नियम)को भी (अनुत्तम) अश्रेष्ठ कहा है। (कृप्या देखें एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र पृष्ठ 105 पर।)

प्रत्येक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बनाया है। महास्वर्ग में एक स्थान पर नकली सतलोक - नकली अलख लोक - नकली अगम लोक तथा नकली

अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखा देने के लिए प्रकृति (दुर्गा/आदि माया) द्वारा करा रखी है। एक ब्रह्मण्ड में अन्य लोकों की भी रचना है, जैसे श्री ब्रह्मा जी का लोक, श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक। जहाँ पर बैठकर तीनों प्रभु नीचे के तीन लोकों (स्वर्गलोक अर्थात् इन्द्र का लोक - पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक - एक विभाग के मालिक बन कर प्रभुता करते हैं तथा अपने पिता काल के खाने के लिए प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्यभार संभाले हैं। तीनों प्रभुओं की भी जन्म व मृत्यु होती है। तब काल इन्हें भी खाता है। इसी ब्रह्मण्ड {इसे अण्ड भी कहते हैं क्योंकि ब्रह्मण्ड की बनावट अण्डाकार है, इसे पिण्ड भी कहते हैं क्योंकि शरीर (पिण्ड) में एक ब्रह्मण्ड की रचना कमलों में टी.वी. की तरह देखी जाती है।} *में एक मानसरोवर तथा धर्मराय (न्यायधीश) का भी लोक है तथा एक गुप्त स्थान पर पूर्ण परमात्मा अन्य रूप धारण करके रहता है। जैसे प्रत्येक देश का राजदूत भवन होता है। वहाँ पर कोई नहीं जा सकता। वहाँ पर वे आत्माऐं रहती हैं जिनकी सत्यलोक की भक्ति अधूरी रहती है। जब भक्ति युग आता है तो उस समय इन पुण्यात्माओं को पृथ्वी पर मानव शरीर प्राप्त होता है तथा ये शीघ्र ही सत भक्ति पर लग जाते हैं तथा पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर जाते हैं। उस स्थान पर रहने वाले हंस आत्माओं की निजी भक्ति कमाई खर्च नहीं होती। परमात्मा के भण्डारे से सर्व सुविधाऐं उपलब्ध होती हैं। ब्रह्म (काल) के उपासकों की भक्ति कमाई स्वर्ग-महा स्वर्ग में समाप्त हो जाती है। क्योंकि इस काल ब्रह्म का लोक (ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड) तथा परब्रह्म लोक (परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड) में प्राणियों को अपना किया कर्मफल ही मिलता है। (कृप्या देखें एक ब्रह्मण्ड का व ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड का लघु चित्र)*

क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने अपने 20 ब्रह्मण्डों को चार महाब्रह्मण्डों में विभाजित किया है। एक महाब्रह्मण्ड में पाँच ब्रह्मण्डों का समूह बनाया है तथा चारों ओर से अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है तथा चारों महा ब्रह्मण्डों को भी फिर अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड की रचना एक महाब्रह्मण्ड जितना स्थान लेकर की है। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में प्रवेश होते ही तीन रास्ते बनाए हैं। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में भी बांई तरफ नकली सतलोक, नकली अलख लोक, नकली अगम लोक, नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखे में रखने के लिए आदि माया (दुर्गा) से करवाई है तथा दांई तरफ बारह सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म साधकों (भक्तों) को रखता है। {प्रत्येक युग में अपने संदेश वाहक (नकली सतगुरु) बनाकर पृथ्वी पर भेजता है, जो शास्त्र विधि रहित साधना व ज्ञान बताते हैं तथा स्वयं भी भक्तिहीन हो जाते हैं तथा अनुयाईयों को भी काल जाल में फंसा जाते हैं। वे गुरु जी तथा अनुयाई दोनों ही नरक में जाते हैं।} *सामने एक ताला (कुलुफ) लगा रखा है। वह रास्ता काल (ब्रह्म) के निज लोक में जाता है। जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) अपने वास्तविक मानव सदृश काल रूप में रहता है।*

इसी स्थान पर एक पत्थर की टुकड़ी तवे जैसी (चपाती पकाने की लोहे की गोल प्लेट जैसी होती है) *स्वयं गर्म रहती है। जिस पर एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को भूनकर उनमें से गंद निकाल कर खाता है। उस समय सर्व प्राणी बहुत पीड़ा अनुभव करते हैं तथा हा-हाकार मच जाती है। फिर कुछ समय उपरान्त बेहोश हो जाते हैं। जीव मरता नहीं। फिर धर्मराय के लोक में जाकर कर्माधार से अन्य जन्म प्राप्त करते हैं तथा जन्म - मृत्यु का चक्कर बना रहता है। उपरोक्त इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में सामने लगा ताला ब्रह्म (काल) केवल अपने आहार वाले प्राणियों के लिए कुछ क्षण के लिए खोलता है। पूर्ण परमात्मा के सत्यनाम व सारनाम से यह ताला स्वयं खुल जाता है। ऐसे काल का जाल पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) ने स्वयं ही अपने निजी भक्त धर्मदास जी को समझाया।*

"परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों की स्थापना"

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने आगे बताया है कि परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने अपने कार्य में सतर्कता नहीं की क्योंकि यह मानसरोवर में सो गया तथा जब परमेश्वर (मैंनें अर्थात् कबीर साहेब) ने उस सरोवर में अण्डा छोड़ा तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) ने उसे क्रोध से देखा। इन दोनों अपराधों के कारण इसे भी यह सतलोक में रहने योग्य नहीं रहा। अन्य कारण :- अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अपने साथी ब्रह्म (क्षर पुरुष) की वियोग में व्याकुल होकर परमपिता कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की याद भूलकर उसी को याद करने लगा तथा सोचा कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तो बहुत आनन्द मना रहा होगा, मैं पीछे रह गया तथा अन्य कुछ आत्माऐं जो परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्मण्डों में जन्म-मृत्यु का कर्मदण्ड भोग रही हैं, उन आत्माओं की वियोग की याद में खो गई जो ब्रह्म (काल) के साथ इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं तथा पूर्ण परमात्मा, सुखदाई कविर्देव की याद भुला दी। परमेश्वर कविर् देव के बार-बार समझाने पर भी आस्था कम नहीं हुई। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने सोचा कि मैं भी अलग स्थान प्राप्त करूं तो अच्छा रहे। यह सोच कर राज्य प्राप्ति की इच्छा से सहज ध्यान प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार अन्य आत्माओं ने (जो परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों में फंसी हैं) सोचा कि वे जो ब्रह्म के साथ आत्माऐं गई हैं वे तो वहाँ मौज-मस्ती मनाऐंगे, हम पीछे रह गये। परब्रह्म के मन में यह धारणा बनी कि क्षर पुरुष अलग बहुत सुखी होगा। यह विचार कर अन्तरात्मा से भिन्न स्थान प्राप्ति की ठान ली। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने हठ योग नहीं किया, परन्तु सहज समाधी का अभ्यास केवल अलग राज्य प्राप्ति के लिए विशेष कसक के साथ करता रहा। अलग स्थान प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह विचरने लगा, खाना-पीना भी त्याग दिया। अन्य कुछ आत्माऐं उसके वैराग्य पर आसक्त होकर उसे चाहने लगी। पूर्ण प्रभु के पूछने पर परब्रह्म ने अलग स्थान मांगा तथा कुछ हंसात्माओं के लिए भी याचना की। तब कविर्देव

ने कहा कि जो आत्मा आपके साथ स्वइच्छा से जाना चाहें उन्हें भेज देता हूँ। पूर्ण प्रभु के पूछने पर कि कौन हंस आत्मा परब्रह्म के साथ जाना चाहता है, सहमति व्यक्त करे। बहुत समय उपरान्त एक हंस ने स्वीकृति दी, फिर देखा-देखी उन सर्व आत्माओं ने भी सहमति व्यक्त कर दी। सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को स्त्री रूप बनाया, उसका नाम ईश्वरी माया (प्रकृति सुरति) रखा तथा अन्य आत्माओं को उस ईश्वरी माया में प्रवेश करके अचिन्त द्वारा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के पास भेजा। (पतिव्रता पद से गिरने की सजा पाई।) कई युगों तक दोनों सात संख ब्रह्मण्डों में रहे, परन्तु परब्रह्म ने दुर्व्यवहार नहीं किया। ईश्वरी माया की स्वइच्छा से अंगीकार किया तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्रीइन्द्री (योनी) बनाई। ईश्वरी देवी की सहमति से संतान उत्पन्न की। इस लिए परब्रह्म के लोक (सात संख ब्रह्मण्डों) में प्राणियों को तप्तशिला का कष्ट नहीं है तथा वहाँ पशु-पक्षी भी ब्रह्म लोक के देवों से अच्छे चरित्र युक्त हैं। आयु भी बहुत लम्बी है, परन्तु जन्म - मृत्यु कर्माधार पर कर्म फल तथा परिश्रम करके ही उदर पूर्ति होती है। स्वर्ग तथा नरक भी ऐसे ही बने हैं। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) को सात संख ब्रह्मण्ड उसके सहज समाधी के अभ्यास की इच्छा रूपी भक्ति की कमाई के प्रतिफल में प्रदान किया तथा सत्यलोक से भिन्न स्थान पर गोलाकार परिधि में बन्द करके सात संख ब्रह्मण्डों सहित अक्षर ब्रह्म व ईश्वरी माया को निष्कासित कर दिया।

पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) असंख ब्रह्मण्डों जो सत्यलोक आदि में हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों का भी प्रभु (मालिक) है अर्थात् परमेश्वर कविर्देव कुल का मालिक है। (कृप्या देखें असंख ब्रह्मण्डों का चित्र इसी पुस्तक के पृष्ठ नं. 89 पर)

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि के चार-चार भुजाएँ तथा 16 कलाऐं हैं तथा प्रकृति देवी (दुर्गा) की आठ भुजाऐं हैं तथा 64 कला हैं। ब्रह्म (क्षर पुरुष) की एक हजार भुजाऐं हैं तथा एक हजार कला है तथा इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों का प्रभु है। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की दस हजार भुजाऐं हैं तथा दस हजार कला हैं तथा सात संख ब्रह्मण्डों का प्रभु है। {**परब्रह्म की दस हजार कला हैं का प्रमाण :-** श्री विष्णु पुराण प्रथम अंश अध्याय 9 श्लोक 53 (पृष्ठ 32) में है ''यस्य अयुतांश अयुतांशे विश्वशक्तिरियं स्थिता। पर ब्रह्मस्वरूपम् यत् प्रणमाम् अस्तम् अव्ययम् (53) हिन्दी अनुवाद :– जिसके अयुतांश (दस हजारवें अंश) के अयुतांश में अर्थात् दस हजार वें अंश के दस हजार वें अंश में यह विश्व रचना की शक्ति स्थित है तथा जो परब्रह्मस्वरूप है उस अव्यक्त को हम प्रणाम करते हैं। (53) इस प्रमाण से सिद्ध हुआ कि परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष की दस हजार कलांऐं हैं जो स्वसम वेद अर्थात् तत्वज्ञान के प्रमाण का समर्थन है। क्योंकि यह तत्व ज्ञान परमेश्वर कबीर जी ने प्रथम सत्ययुग में ऋषि सत्य सुकृत नाम से प्रकट होकर श्री ब्रह्मा जी को सुनाया था। इसलिए श्री ब्रह्मा जी ने कुछ ज्ञान उस तत्वज्ञान से तथा शेष अपना अनुभव

के ज्ञान का मिश्रण करके पुराण ज्ञान कहा है।} ***पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष अर्थात् सतपुरुष) की असंख्य भुजाऐं तथा असंख्य कलाऐं हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड व परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों सहित असंख ब्रह्मण्डों का प्रभु है। प्रत्येक प्रभु अपनी सर्व भुजाओं को समेट कर केवल दो भुजाऐं भी रख सकते हैं तथा जब चाहें सर्व भुजाओं को भी प्रकट कर सकते हैं। पूर्ण परमात्मा इस परब्रह्म के प्रत्येक ब्रह्मण्ड में भी अलग स्थान बनाकर अन्य रूप में गुप्त रहता है। यूं समझो जैसे एक घूमने वाला कैमरा बाहर लगा देते हैं तथा अन्दर टी.वी. (टेलीविजन) रख देते हैं। टी. वी. पर बाहर का सर्व दृश्य नजर आता है तथा दूसरा टी.वी. बाहर रख कर अन्दर का कैमरा स्थाई करके रख दिया जाए। उसमें केवल अन्दर बैठे प्रबन्धक का चित्र दिखाई देता है। जिससे सर्व कर्मचारी सावधान रहते हैं।***

इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सतलोक में बैठ कर सर्व को नियंत्रित किए हुए है तथा प्रत्येक ब्रह्मण्ड में भी सतगुरु कविर्देव विद्यमान रहते हैं। जैसे सूर्य दूर होते हुए भी अपना प्रभाव अन्य लोकों में बनाए हुए है।

''वेदों में सृष्टि रचना का प्रमाण''

"पवित्र अथर्ववेद में सृष्टि रचना का प्रमाण"

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :–

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्त्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।।1।।

संधिछेद :– ब्रह्म जज्ञानम् प्रथमम् पुरस्त्तात् विसिमतः सुरुचः वेनः आवः सः बुध्न्याः उपमा अस्य विष्ठाः सतः च योनिम् असतः च वि वः। (1)

अनुवाद :– (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (जज्ञानम्) प्रकट होकर अपनी सूझ–बूझ से (पुरस्त्तात्) सर्व प्रथम समय में शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को उस (वेनः) रचनहार ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है इसलिए उसी मूल मालिक ने मूल स्थान सतलोक की रचना की है इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक को रच कर (अस्य) इस सतलोक के (उपमा) उपमा के सदृश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई अर्थात् नाशवान लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म(काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय(अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को भिन्न-2 सीमा युक्त स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी

परमात्मा ने अस्थाई की है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :–

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।
तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

संधिछेद :– इयम् पित्र्या राष्ट्रि एतु अग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः तस्मा एतम् सुरुचम् हवारमह्यम धर्मम् श्रीणान्तु प्रथमाय धास्यवे (2)

अनुवाद :– (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर से (एतु) इस (अग्रे) सर्वोतम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, उत्पन्न हुई जिस को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) बड़े चाव के साथ स्वइच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) सर्व प्रथम उत्पन्न की गई माया अर्थात् पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकषर्ण शक्ति के (श्रीणान्तु) गुरूत्व आकर्षण को पूर्ण परमात्मा ने आदेश दिया कि सृष्टि समय तक बना रहो उस कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव अर्थात् गुरूत्व आकर्षण से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्मण्डों को स्थापित किया है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :–

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।
ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

संधिछेद :– प्र यः जज्ञे विद्वानस्य बन्धुः विश्वा देवानाम् जनिमा विवक्ति ब्रह्मः ब्रह्मणः उज्जभार मध्यात् निचैः उच्चैः स्वधा अभिः प्रतस्थौ। (3)

अनुवाद :– (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्मण्डों की (जज्ञे) उत्पति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी (जनिमा) पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को अपने द्वारा सृजन किए हुए सर्व ब्रह्मण्डों तथा सर्व देवों अर्थात् आत्माओं के विषय में (विवक्ति) स्वयं ही ठीक–ठीक विस्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म/क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्मण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः प्रतस्थौ) आकर्षण शक्ति से दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म(क्षर पुरुष/काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्मण्डों (ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21

ब्रह्मण्डों) को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।

जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

इस अथर्ववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 मन्त्र 3 में स्पष्ट है कि ब्रह्म की उत्पति पूर्ण ब्रह्म से हुई है। यही प्रमाण आगे लिखे ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मन्त्र 5 में है तथा यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 14-15 में है कि अविनाशी परमात्मा से ब्रह्म की उत्पति हुई है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

सः हि दिवः स पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।
महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः।।4।।

संधिछेद :– सः हि दिवः सः पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमम् रोदसी अकस्भायत् महान् मही अस्कभायद विजातः धाम् सदम् पार्थिवम् च रजः। (4)

अनुवाद – (सः) वह वही परमात्मा है जिसने (हि) निःसंदेह ही (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक अगम लोक तथा अनामी/अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अविनाशी रूप से स्थिर किया है (सः) वह परमात्मा सर्व रचना करता है उसी ने उन्हीं के समान (मही) पृथ्वी वाले नीचे के सर्व लोक जैसे परब्रह्म के सात संख तथा ब्रह्म/काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड (पृथिव्या) पृथ्वी तत्व से (क्षेमम्) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत्) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्व तथा पृथ्वी तत्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को उसी {**जैसे आकाश एक सुक्ष्म तत्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म/अक्षर पुरूष के सप्त संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म/क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्मण्डों को पृथ्वी तत्व से अस्थाई रचा**} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पृथ्वी वाले (वि) भिन्न–भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पृथ्वी तत्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्मण्ड में छोटे–छोटे लोकों की (जातः) उसी परमात्मा ने रचना की तथा (अस्कभायत्) स्थिर किया।

भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर अस्थाई स्थापित किए।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

स बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्।
अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।

संधिछेद :– सः बुध्न्यात् आष्ट्र जनुषेः अभि अग्रम् बृहस्पतिः देवता तस्य सम्राट अहः यत् शुक्रम् ज्योतिषः जनिष्ट अथ द्युमन्तः वि वसन्तु विप्राः। (5)

अनुवाद :– (सः) वह (बुध्न्यात्) मूल मालिक है जिस से (अभि–अग्रम्) सर्व प्रथम वाले

सतलोक स्थान पर (आष्ट्र) अष्टँगी माया/दुर्गा अर्थात् प्रकृति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई क्योंकि नीचे के परब्रह्म व ब्रह्म के लोकों का प्रथम स्थान सतलोक है यह तीसरा धाम भी कहलाता है (तस्य) इस दुर्गा का भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बृहस्पतिः) सबसे बड़ा पति व जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके पश्चात् (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) ब्राह्मण अर्थात् भक्त आत्माएं (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वि) भिन्न–2 (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी(प्रकृति देवी/दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर(सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन(काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पृथ्वी लोक पर निवास करने लगे।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

संधिछेद :– नूनम् तत् अस्य काव्यः महः देवस्य पूर्व्यस्य धाम हिनोति पूर्वे विषिते एष जज्ञे बहुभिः साकम् इत्था अर्धे ससन् नु। (6)

अनुवाद – (नूनम्) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर अर्थात् तत् ब्रह्म ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है (पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) सृष्टि उत्पति के ज्ञान से यर्थाथता को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) सच्ची लगन से स्तुति करता है।

भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर स्वयं जगत गुरु अर्थात् तत्वदर्शी सन्त के रूप में प्रकट होकर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आऐ थे। वहाँ उस वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।

आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे, तथा सत्य लोक दिखाकर वापस छोड़ा था। तब अपनी अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने कहाः-

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकुँ सतगुरु आन। झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

संधिछेद :– यः अथर्वाणम् पित्तरम देवबन्धुम बृहस्पतिम नमसा अव च गच्छात त्वम विश्वेषाम् जनिता यथा सः कविर्देवः न दभायत् स्वधावान्। (7)

अनुवाद :– (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) सबसे बड़ा मालिक अर्थात् परमेश्वर (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक जा चुके हैं तथा अन्य को सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्मण्डों को (जनिता) रचने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्–देवः) कविर्देव है। भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं। क्योंकि कविर्=कबिर् फिर अपभ्रंश होकर कबीर कहा जाने लगा तथा देव=परमेश्वर अर्थ है। इसलिए कबीर परमेश्वर उसी काशी वाले जुलाहे का सम्बोधन वेदों में है।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) सबसे बड़ा स्वामी अर्थात् परमेश्वर, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, काल(ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्मण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

"पवित्र ऋग्वेद में सृष्टि रचना का प्रमाण"

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्रशीर्षा पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

संधिछेद :– सहस्रशिर्षा पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात् स भूमिम् विश्वतः वृत्वा अत्यातिष्ठत् दशंगुलम्। (1)

अनुवाद :– (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरूष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला

(सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला (स) वह काल (भूमिम्) पृथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्मण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वृत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल-ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल-ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है गीता अध्याय 11 श्लोक 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे सहस्रबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले आप अपने चतुर्भुज में दर्शन दीजिए। क्योंकि अर्जुन काल का वास्तविक रूप भी आँखों देख रहा था तथा अपनी बुद्धि से उसे कृष्ण अर्थात् विष्णु मान रहा था) जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्मण्डों को गोलाकार परिधी में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बैठा है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

संधिछेद :– पुरूष एव इदम् सर्वम् यत् भूतम् यत् च भाव्यम् उत अमृतत्वस्य इशानः यत् अन्नेन अतिरोहति। (2)

अनुवाद :– (एव) परब्रह्म ही कुछ (पुरूष) भगवान जैसे लक्षणों युक्त है (च) और (इदम्) इस के लोक में यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से (अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमृतत्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है। अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस परब्रह्म के लोक में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मृत्यु का समय भले ही काल (क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

संधिछेद :– एतावान अस्य महिमा अतः ज्यायान् च पुरूषः पादः अस्य विश्वा भूतानि त्रि पाद् अस्य अमृतम् दिवि। (3)

अनुवाद :– (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर मात्र है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्मण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश अर्थात् उन्हीं की रचना है।

भावार्थ :- इस उपरोक्त मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्मण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी(अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरुष-अक्षर पुरुष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरुष) का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 संख्या 16-17 में तथा गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 तथा गीता अध्याय 8 श्लोक 18 से 22 में भी है इस प्रकार तीन अव्यक्त प्रभु हैं {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि :- गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय दादू साहेब जी कह रहे हैं कि :-

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार।
दादू दूसरा कोए नहीं, कबीर सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय नानक साहेब जी देते हैं कि :-

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब, पृष्ठ नं. 721, महला 1, राग तिलंग)

कून करतार का अर्थ होता है सर्व का रचनहार, अर्थात् शब्द शक्ति से सर्व रचना करने के कारण शब्द स्वरूपी प्रभु। हक्का कबीर का अर्थ है सत् कबीर, करीम का अर्थ दयालु, परवरदिगार का अर्थ सर्व सुखदाई परमात्मा है।}

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्व ङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

संधिछेद :– त्रि पाद ऊर्ध्वः उदैत् पुरूषः पादः अस्य इह अभवत् पूनः ततः विश्वङ् व्यक्रामत् सः अशनानशने अभि। (4)

अनुवाद :– (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक

हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् उसकी प्रभुता सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं पर है वह कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

भावार्थ :- यही सर्व सृष्टि रचन हार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अन्य रचना से पूर्व का है। फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म/काल विराट शाप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मृत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज(क्षमता) को सर्व ब्रह्मण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए सर्व ओर छोड़ा हुआ है। जैसे मोबाइल फोन का टावर एक देशीय होते हुए अपनी शक्ति अर्थात् मोबाइल फोन की रेंज(क्षमता) सर्वत्र अपनी सीमा में फैलाए रहता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा ने अपनी निराकार शक्ति को सर्वव्यापक किया है। जिससे पूर्ण परमात्मा सर्व ब्रह्मण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।

उपरोक्त तीन प्रभुओं (1. क्षर पुरूष अर्थात् ब्रह्म, 2. अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म 3. परम अक्षर पुरूष अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का प्रमाण पवित्र श्री मद्भगवत्गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 तथा अध्याय 8 श्लोक 1 तथा 3 में भी है। क्योंकि श्रीमद्भगवत् गीता जी पवित्र चारों वेदों का सारांश है)

इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास जी महाराज दे रहे हैं (अमृतवाणी राग कल्याण)

तीन चरण चिन्तामणी साहेब, शेष बदन पर छाए।
माता, पिता, कुलन न बन्धु, ना किन्हें जननी जाये।।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।5।।

संधिछेद :– तस्मात् विराट अजायत विराजः अधि पुरूषः सः जातः अत्यरिच्यत पश्चात् भूमिम्

अथः पुरः। (5)

अनुवाद :– (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरूष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पृथ्वी वाले लोक अर्थात् काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक को (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः) अन्य छोटे–छोटे लोक (सः) वह (जातः) पूर्ण परमेश्वर ही उत्पन्न किया करता है अर्थात् उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व लोकों को स्थापित किया।

भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीनों लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के पश्चात पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव(कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म(काल) की उत्पत्ति हुई {यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 14 में है कि अक्षर पुरूष से अर्थात् अविनाशी परमात्मा से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई।} ***उस पूर्ण ब्रह्म ने भूमिम् अर्थात् पृथ्वी तत्व से ब्रह्म तथा परब्रह्म के उसी ने छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।***

इस ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मन्त्र 5 में स्पष्ट है कि ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष/काल की उत्पति पूर्ण परमात्मा से हुई है। यही प्रमाण पूर्वोक्त अथर्ववेद काण्ड 4 में अनुवाक 1 मन्त्र 3 में है तथा यही प्रमाण श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 3 मन्त्र 14-15 में है कि ब्रह्म की उत्पति अक्षरम् सर्वगतम् ब्रह्म अर्थात् अविनाशी सर्व व्यापक परमात्मा से हुई है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।।15।।

संधिछेद :– सप्त अस्य आसन् परिधयः त्रिसप्त समिधः कृताः देवा यत् यज्ञम् तन्वानाः अबध्नन् पुरूषम् पशुम्। (15)

अनुवाद :– (सप्त) सात संख ब्रह्मण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्मण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कृताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- वह पूर्ण परमात्मा सात संख ब्रह्मण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्मण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बली दिए जाने वाले पशु की तरह जन्म-मृत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर

बन्धन रहित करता है अर्थात् बंध छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है। इसी का प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में है कि कविरंघारिसि=(कविर्) कबिर परमेश्वर (अंघ) पाप का (अरि) शत्रु (असि) है अर्थात् पाप विनाशक कबीर है। बम्भारिसि=(बम्भारि) बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर (असि) है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

संधिछेद :– यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमानि आसन् ते ह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। (16)

अनुवाद :– जो (देवाः) देव स्वरूप भक्तात्मायें (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार से अर्थात् शास्त्रवर्णीत विधि अनुसार (यज्ञम्) यज्ञ रूपी धार्मिक (अयजन्त्) पूजा करते हैं (तानि) वे (धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात् उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन अपनी भक्ति कमाई के बल द्वारा(नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली सृष्टि के (देवाः) देव स्वरूप भक्त आत्मायें (सन्ति) रहती हैं।

भावार्थ :- जो निर्विकार (जिन्होने मांस,शराब, तम्बाकू आदि नशीली व अखाद्य वस्तुओं का सेवन करना त्याग दिया है तथा अन्य बुराईयों से रहित है) देव स्वरूप भक्त आत्माऐं शास्त्रानुकूल साधना करते हैं वे भक्ति की कमाई से धनी होकर काल के ऋण से मुक्त होकर अपनी सत्य भक्ति की कमाई के कारण उस सर्व सुखदाई परमात्मा को प्राप्त करते हैं अर्थात् सत्यलोक में चले जाते हैं जहाँ पर सर्व प्रथम रची सृष्टि के देव स्वरूप अर्थात् पाप रहित हंस आत्माऐं रहती हैं।

जैसे कुछ आत्माऐं तो काल (ब्रह्म) के जाल में फंस कर यहाँ आ गई, कुछ परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्मण्डों में आ गई, फिर भी असंखों आत्माऐं जिनका विश्वास पूर्ण परमात्मा में अटल रहा, जो पतिव्रता पद से नहीं गिरे वे वहीं रह गई, इसलिए यहाँ वही वर्णन पवित्र वेदों ने भी सत्य बताया है। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 के श्लोक संख्या 8 से 10 में वर्णन है कि जो साधक उस पूर्ण परमात्मा (परम दिव्य पुरूष) की साधना अंतिम स्वांस तक करता है वह शास्त्र अनुकूल की गई साधना की कमाई के बल के कारण उस परमात्मा पूर्ण ब्रह्म को प्राप्त होता है अर्थात् उस परम दिव्य पुरूष के पास चला जाता है। इससे सिद्ध हुआ की तीन प्रभु हैं ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म=ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म=अक्षर पुरुष - अक्षर ब्रह्म तथा 3. पूर्ण ब्रह्म=परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।

यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण

परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाईयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। इस कारण से उस परमात्मा को महान कवि की उपाधी से जाना जाता है परन्तु वह कविर्देव वही परमात्मा होता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ब्रह्म (क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम (सतलोक) है, उसमें नराकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदृश अर्थात् नराकार में विराजमान है। अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें वेदों में प्रमाण पृष्ठ 113 से 123 पर इसी पुस्तक में।

''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण''

(दुर्गा अर्थात् प्रकृति तथा सदा शिव अर्थात् काल रूपी ब्रह्म की मैथुन क्रिया से ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की उत्पत्ति)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द (गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पृष्ठ नं. 114 से)

पृष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकृति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा, ब्रह्म (काल) की पत्नी है। एक ब्रह्मण्ड की सृष्टि रचना के विषय में राजा श्री परिक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्मण्ड की रचना कैसे हुई ? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्मण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है ? सच-सच बताने की कृपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे नहीं मालूम इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया ? एक हजार वर्ष तक पृथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर सृष्टि करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षए आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रवेश दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक

विष्णु तथा एक शिव और देखा। (यह ब्रह्म ही तीन रूप बना कर ऊपर लीला कर रहा है। कृप्या देखें एक ब्रह्मण्ड का चित्र पृष्ठ 105) फिर एक देवी देखी, उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पृष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकृति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा-सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देवता नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकृति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मृत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकृति) के पुत्र हैं तथा काल ब्रह्म (सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी ने प्रश्न किया कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद के पृष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकृति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ये तीनों देवता, ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) का विवाह दुर्गा (प्रकृति देवी) ने किया। पृष्ठ नं. 128-129 पर, श्री देवी पुराण तीसरे स्कंद में।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 12

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि। १२।

ये, च, एव, सात्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मतः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि।।12।।

अनुवाद : (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मतः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परंतु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं।(12)

केवल हिन्दी अनुवाद : और भी जो सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति भाव हैं और जो रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति तथा तमोगुण शिव से संहार हैं उन सबको तू मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं ऐसा जान परंतु वास्तवमें उनमें मैं और वे मुझमें नहीं हैं।(12)

भावार्थ :- गीता ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि तीनों देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) द्वारा जो भी उत्पति, स्थिति तथा संहार हो रहा है इसका निमित्त मैं ही हूँ। परन्तु मैं इनसे दूर हूँ। कारण है कि काल को शापवश एक लाख प्राणियों का आहार करना होता है। इसलिए मुख्य कारण अपने आप को कहा है तथा काल भगवान तीनों देवताओं से भिन्न ब्रह्म लोक में रहता है तथा इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में रहता है। इसलिए कहा है कि मैं उनमें तथा वे मुझ में नहीं हैं।

श्री मद्देवीभागवत से लेख :-(प्रथम स्कन्ध अध्याय 23,28,29,31,38,39,41,42 पृष्ठ 1 से 8)

(प्रथम स्कन्ध अध्याय 1 पृष्ठ 23) श्री सूत जी ने कहा :-पौराणिकों एवं वैदिकोंका कथन है तथा यह भलीभाँति विदित भी है कि ब्रह्मा जी इस अखिल जगत के सृष्टा हैं। साथ ही वे यह भी कहते हैं कि ब्रह्माजी का जन्म भगवान् विष्णु के नाभिकमल से हुआ है। फिर ऐसी स्थिति में ब्रह्मजी जी स्वतन्त्र सृष्टा कैसे ठहरे? भगवान् विष्णु को भी स्वतन्त्र सृष्टा नहीं कह सकते। वे शेषनागकी शय्यापर सोये हुए थे। नाभिसे कमल निकला और उसपर ब्रह्मा जी प्रकट हुए। किंतु वे श्रीहरि भी तो किसी आधारपर अवलम्बित थे। उनके आधारभूत क्षीरसमुद्र को भी स्वतन्त्र सृष्टा नहीं माना जा सकता; क्योंकि वह रस है। रस बिना पात्र के ठहरता नहीं, कोई न कोई रसका आधार रहना ही चाहिये। अतएव चराचर जगत् की आधारभूता भगवती जगदम्बिका ही सृष्टा रूप में निश्चित हुई।

(प्रथम स्कन्ध, अध्याय 8 पृष्ठ 41 पर) ऋषियों ने पूछा - महाभाग सूत जी! इस कथा प्रसङ्गको जानकर तो हमें बड़ा ही आश्चर्य हो रहा है; क्योंकि वेद, शास्त्र, पुराण और विज्ञजनों ने सदा यही निर्णय किया है कि ब्रह्मा, विष्णु और शंकर—ये ही तीनों सनातन देवता हैं। इनसे बढ़कर इस ब्रह्माण्ड में दूसरा कोई देवता है ही नहीं। ब्रह्माजी सारे संसार की सृष्टि करते हैं। जगत् का संरक्षण भगवान् विष्णु के अधीन रहता है। प्रलय के अवसर पर शंकर जी उसका संहार किया करते हैं। इस जगत्प्रपञ्च के ये ही तीनों देवता कारण हैं। ये वास्तव में एक ही हैं, किंतु कार्यवश सत्त्व, रज और तम आदि गुणों को स्वीकार करके ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर नाम से विख्यात होते हैं। इन तीनों में परमपुरूष भगवान् विष्णु सबसे श्रेष्ठ हैं। वे जगत् के स्वामी और आदिदेव कहलाते हैं। उनमें सब कुछ करने की योग्यता है। दूसरा कोई भी देवता उन अतुल तेजस्वी श्रीविष्णु के समान शक्तिशाली

नहीं है। फिर ऐसे सर्वसमर्थ परमप्रभु भगवान् श्री विष्णु योगमाया के अधीन होकर कैसे सो गये? महाभाग! हमें यह महान् संदेह हो रहा है! इस मङ्गलमय प्रसङ्ग को सुनाने की कृपा कीजिये। सुव्रत! आप पहले जिसकी चर्चा कर चुके हैं तथा जिसने परमप्रभु विष्णु पर भी अधिकार जमा लिया, वह कौन–सी शक्ति है? कहाँ से उसकी सृष्टि हुई, उसमें कैसे इतना पराक्रम हो गया और क्या उसका परिचय है – सब बताने की कृपा करें।

सूत जी कहते हैं - मुनिवरो! चराचर सहित इस त्रिलोकीमें कौन ऐसा है, जो इस संदेहको दूर कर सके। ब्रह्माजी के पुत्र नारद, कपिल आदि दिव्य महापुरूष भी इस प्रश्न का समाधान करने में निरूपाय हो जाते हैं। महानुभावो ! यह प्रश्न बड़ा ही गहन और विचारणीय है। इसके सम्बन्ध में मैं क्या कह सकता हूँ ?

(पृष्ठ 42) विद्वान पुरूष ऐसा कहते हैं और पुराणों ने भी घोषणा की है कि ब्रह्मा में सृष्टि करने की शक्ति है और विष्णु पालन करने में समर्थ हैं तथा शंकर संहार करने में कुशल है। सूर्य जगत् को प्रकाश देते हैं। शेष और कच्छप पृथ्वी धारण किये रहते हैं। अग्नि में जलाने की और पवन में हिलाने–डुलाने की शक्ति है। सबमें जो शक्ति विराजमान है, वही आद्याशक्ति है। उसी के प्रभाव से शिव भी शिवता को प्राप्त होते हैं। जिसपर उस शक्ति की कृपा न हुई, वह कोई भी हो, शक्तिहीन हो जाता है। बुधजन उसे असमर्थ कहते हैं। सबमें व्यापक रहने वाली जो आद्याशक्ति है, उसी का 'ब्रह्म' इस नाम से निरूपण किया गया है। अतएव विद्वान् पुरूषों को चाहिये कि भलीभाँति विचार करके सदा उसी शक्तिकी उपासना करे। विष्णु में सात्त्विकी शक्ति व्याप्त है। यदि वह उनसे अलग हो जाए तो विष्णु कुछ भी न कर सकें। ब्रह्मा में जो राजसी शक्ति है, उसके बिना वे सृष्टि–कार्य में अयोग्य हैं। शिव में जो तामसी शक्ति है, उसी के प्रभाव से वे संहारलीला करते हैं। मनोयोग–पूर्वक इस प्रकार बार–बार विचार करके सारी बात समझ लेनी चाहिये। वही आद्याशक्ति इस अखिल ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करती और उसका पालन भी करती है। वही इच्छा होने पर इस चराचर जगत् का संहार भी करने में संलग्न हो जाती है। **ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, इन्द्र, अग्नि और पवन-ये सभी किसी प्रकार भी स्वतन्त्ररूप से अपने-अपने कार्य का सम्पादन नहीं कर सकते; किंतु जब वह आद्याशक्ति इन्हें सहयोग देती है, तभी ये अपने कार्य में सफल होते हैं**। अतः इन कार्य–कारणों से यही प्रत्यक्ष सिद्ध होता है कि वह शक्ति ही सर्वोपरि है।

(पहला स्कन्ध अध्याय 6 पृष्ठ 38-39) ब्रह्मा जी के स्तुति करने पर भी भगवान् विष्णु की नींद नहीं टूटी। उन पर योगनिद्रा का पूरा अधिकार जम चुका था। तब ब्रह्मा जी सोचने लगे–'अब श्रीहरि शक्ति के प्रभाव से पूर्ण प्रभावित होकर खूब गाढ़ी नींद में मग्न हो गये हैं।

इससे सिद्ध हो गया, ये भगवती योगनिद्रा इन लक्ष्मीकान्त भगवान् विष्णु की भी अधिष्ठात्री हैं। लक्ष्मी जी भी इन्हीं के अधीन हो गयीं; क्योंकि पतिदेव विष्णु ही जब अधीन हो गये, तब उनकी अलग सत्ता कहाँ। इससे निश्चित होता है कि यह अखिल ब्रह्माण्ड भगवती योगनिद्रा के अधीन है। मैं (ब्रह्मा), विष्णु, शंकर, सावित्री, लक्ष्मी और उमा–सभी इन्हीं योगनिद्रा के शासनसूत्र में बँधे हैं।

ब्रह्मा जी बोले - देवी! मैं जान गया, तुम निश्चय ही इस जगत् की कारणस्वरूपा हो। सम्पूर्ण वेद–वचन इसे प्रमाणित कर रहे हैं। यही कारण है कि चराचर जगत् को प्रबुद्ध करने वाले परमपुरूष भगवान् विष्णु आज गाढ़ी नींद में मग्न हैं।

(पहला स्कन्ध अध्याय 4 पृष्ठ 28-29) नारदजी ने कहा - महाभाग व्यासजी! तुम इस विषय

में जो पूछ रहे हो, ठीक यही प्रश्न मेरे पिताजी ने भगवान् श्रीहरि से किया था। देवाधिदेव भगवान् जगत् के स्वामी हैं। लक्ष्मी जी उनकी सेवा में उपस्थित रहती हैं। दिव्य कौस्तुभमणि उनकी शोभा बढ़ाती है। वे शङ्ख, चक्र और गदा लिये रहते हैं। पीताम्बर धारण करते हैं। चार भुजाएँ हैं। वक्षःस्थलपर श्रीवत्सका चिन्ह चमकता रहता है। वे चराचर जगत् के आश्रयदाता हैं, जगत्गुरु एवं देवताओं के भी देवता हैं। ऐसे जगत्प्रभु भगवान् श्रीहरि महान् तप कर रहे थे। उनकी समाधि लगी थी। यह देखकर मेरे पिता जी ब्रह्माजी को बड़ा आश्चर्य हुआ। अतः उन्होंने उनसे जानने की इच्छा प्रकट की।

ब्रह्मा जी ने पूछा-प्रभो! आप देवताओं के अध्यक्ष, जगत् के स्वामी और भूत, भविष्य एवं वर्तमान–**सभी जीवों के एकमात्र शासक हैं। भगवन्! फिर आप क्यों तपस्या कर रहे हैं और किस देवता की आराधना में ध्यानमग्न हैं?** मुझे असीम आश्चर्य तो यह हो रहा हैं कि आप देवश्वर एवं सारे संसार के शासक होते हुए भी समाधि लगाये बैठे हैं।

ब्रह्माजी के ये विनीत वचन सुनकर भगवान् श्रीहरि (श्री विष्णु) उनसे कहने लगे-'ब्रह्मन्! सावधान होकर सुनो। मैं अपने मनका विचार व्यक्त करता हूँ। देवता, दानव और मानव–सब यही जानते हैं कि तुम सुष्टि करते हो, मैं पालन करता हूँ और शंकर संहार किया करते हैं, किन्तु फिर भी वेद के पारगामी पुरूष अपनी युक्ति से यह सिद्ध करते हैं कि रचने, पालने और संहार करने की यह योग्यता जो हमें मिली है, इसकी अधिष्ठात्री शक्तिदेवी हैं। वे कहते हैं कि संसार की सृष्टि करनेके लिये **तुममें राजसी शक्तिका संचार हुआ है, मुझे सात्त्विकी शक्ति मिली है और रूद्र में तामसी शक्ति का अविर्भाव हुआ है। उस शक्ति के अभाव में तुम इस संसार की सृष्टि नहीं कर सकते, मैं पालन करने में सफल नहीं हो सकता और रूद्रसे संहारकार्य होना भी सम्भव नहीं**। ब्रह्माजी! हम सभी उस शक्ति के सहारे ही अपने कार्य में सदा सफल होते आये हैं। सुव्रत! प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों उदाहरण मैं तुम्हारे सामने रखता हूँ, सुनो। यह निश्चित बात है कि उस शक्ति के अधीन होकर ही मैं (प्रलयकालमें) इस शेषनाग की शय्यापर सोता हूँ और सृष्टि करने का अवसर आते ही जग जाता हूँ। **मैं सदा तप करने में लगा रहता हूँ। उस शक्ति के शासन से कभी मुक्त नहीं रह सकता। कभी अवसर मिला तो लक्ष्मी के साथ सुख-पूर्वक समय बिताने का सौभाग्य प्राप्त होता है। मैं कभी तो दानवों के साथ युद्ध करता हूँ।** अखिल जगत् को भय पहुँचानेवाले दैत्यों के विकराल शरीरोंको शान्त करना मेरा परम कर्तव्य हो जाता है।

मुझे सब प्रकारसे शक्ति के अधीन होकर रहना पड़ता है। उन्हीं भगवती शक्ति का मैं निरन्तर ध्यान किया करता हूँ। ब्रह्माजी! मेरी जानकारी में इन भगवती शक्ति से बढ़कर दूसरे कोई देवता नहीं हैं।

(पहला स्कन्ध अध्याय 5 पृष्ठ 31) सूतजी कहते हैं - इस प्रकार ब्रह्माजी के कहने पर उसी क्षण वम्री ने प्रत्यञ्चा को, जो नीचे भूमि पर थी, खा लिया। फिर तो बन्धन–मुक्त हो गया। प्रत्यञ्चा कटते ही दूसरी ओर की डोरी भी वैसे ही ढीली पड़ गयी। उस समय बड़े जोर से भयंकर शब्द हुआ, जिससे देवता भयभीत हो उठे। चारों ओर अन्धकार छा गया। सूर्य की प्रभा क्षीण हो गयी। फिर तो सभी देवता घबराकर सोचने लगे–'अहो, ऐसे भयंकर समय में पता नहीं क्या होने वाला है।' ऋषियों! समस्त देवता यों सोच रहे थे; इतने में पता नहीं, भगवान् विष्णुका मस्तक कुण्डल और मुकुटसहित कहाँ उड़कर चला गया। कुछ समय के बाद जब घोर अन्धकार शान्त हुआ, तब भगवान् शंकर और

ब्रह्मा जी ने देखा श्रीहरिका श्रीविग्रह बिना मस्तक का पड़ा हुआ है। यह बड़े आश्चर्य की बात सामने आ गयी।

ब्रह्माजी ने कहा - कालभगवान् ने जैसा विधान रच रखा है, वैसा अवश्य ही होता है – यह बिलकुल असंदिग्ध बात है। जैसे बहुत पहले काल की प्रेरणा से भगवान् शंकर ने मेरा ही मस्तक काट दिया था। उसी तरह आज भगवान् विष्णु का भी मस्तक धड़ से अलग होकर समुद्र में जा गिरा है।

श्री देवी भागवत् पुराण से निष्कर्ष :-(1)अध्याय 1 प्रथम स्कन्ध पृष्ठ 23 पर लिखे विवरण से स्पष्ट है कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी सृष्टा नहीं है। सर्व शक्तिमान नहीं हैं।

2. श्री सूत जी अर्थात् पुराण ज्ञान वक्ता दुर्गा को सृष्टा कह रहा है तथा यह भी कह रहा है कि जगदम्बा (दुर्गा) की उत्पति के विषय में कपिल जी तथा नारद जी भी नहीं जानते मैं क्या उत्तर दे सकता हूँ। इस से सिद्ध है कि पुराण वक्ता भी अल्पज्ञ है। इसलिए उसका ज्ञान कि जगदम्बा (दुर्गा) सृष्टा है मान्य नहीं है।

3. प्रथम स्कन्ध अध्याय 4 पृष्ठ 28-29 वाले लेख से स्पष्ट है कि (क) रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव जी है।(ख) श्री विष्णु जी भी दुर्गा देवी की पूजा करता है। (ग) श्री विष्णु जी तप करता है। (घ) श्री विष्णु जी स्वीकार करता है कि मैं महा दुःखी हूँ क्योंकि राक्षसों के साथ युद्ध करने में लगा रहता हूँ। कभी तप करके अपनी बैट्री चार्ज करता हूँ बहुत कम समय ही लक्ष्मी के साथ रहने को मिलता है। (ड़) श्री विष्णु जी दुर्गा देवी को सबसे बड़ा देवता (परमात्मा) मानते हैं। जो श्री विष्णु जी की अल्पज्ञता का प्रमाण है।

4. पहला स्कन्ध अध्याय 5 पृष्ठ 31 वाले विवरण से स्पष्ट है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव भी काल भगवान के आधीन हैं। वह इनको जैसा नाच नचाना चाहता है नचाता है।

5. पहला स्कन्ध अध्याय 8 पृष्ठ 41 वाले विवरण में स्पष्ट है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव समर्थ नहीं हैं।

''पवित्र शिव महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण''

(दुर्गा अर्थात् प्रकृति तथा सदा शिव अर्थात् काल रूपी ब्रह्म की मैथुन क्रिया से ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की उत्पत्ति)

यही प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्त्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पृष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकृति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभु और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ नं.

101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (पृष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए जिस से सिद्ध हुआ कि सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

कृप्या पढ़ें अन्य प्रमाण जो स्वसम वेद (कविर्वाणी) में वर्णित हैं। अन्तर इतना है कि पुराणों के वक्ता व ज्ञान दाता तथा लेखक तत्वज्ञान से अपरिचित थे। जिस कारण से काल ब्रह्म (क्षर पुरूष अर्थात् ज्योति निरंजन) के जाल को नहीं समझ सके। यही कारण रहा की सर्व ऋषिजन व देवता काल ब्रह्म को विष्णु या शिव या ब्रह्मा कह कर अखिल विश्व का सृष्टा बताते रहे। जो ऋषि साधक उस काल ब्रह्म को शिव रूप में ईष्ट देव मानकर उपासना करता था। उसने श्री ब्रह्मा जी द्वारा बताए सृष्टि रचना के अधूरे ज्ञान के आधार पर श्री शिव पुराण की रचना की जिसमें वक्ता व ज्ञान दाता दोनों विचलित हैं। एक तरफ तो कहा है कि भगवान शिव ही श्री ब्रह्मा रूप धारण करके सृष्टि करता है। विष्णु रूप धारण करके स्थिति बनाए रखता है या श्री शिव रूप धारण करके संहार करता है। फिर लिखा है (पृष्ठ 19) जिन से ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र (शिव) आदि पहले प्रकट हुए हैं। वे ही महादेव, सर्वज्ञ एवं सम्पूर्ण जगत के स्वामी हैं। शिव पुराण में ही फिर लिखा है (पृष्ठ 86) :- हमने सुना है कि भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। वे महान दयालु हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश- ये तीनो देवता शिव के ही अंग से उत्पन्न हुए हैं। शिव पुराण में ही लिखा है (पृष्ठ 131पर) श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- मुनि श्रेष्ठ नारद! इस प्रकार मैंने सृष्टि क्रम का तुम से वर्णन किया है। ब्रह्माण्ड का यह सारा भाग भगवान् शिव की आज्ञा से मेरे द्वारा रचा गया है। भगवान शिव को परब्रह्म परमात्मा कहा गया है। मैं, विष्णु तथा रूद्र- ये तीनों देवता उन्हीं के भाग बताए गये हैं। वे मनोरम शिव लोक में शिवा (दुर्गा) के साथ स्वच्छन्द विहार करते हैं। भगवान् शिव स्वतन्त्र परमात्मा हैं। निगुर्ण और सर्गुण भी वे ही हैं। इसी शिव पुराण में (पृष्ठ 115पर) श्री ब्रह्मा जी ने कहा है कि नारद! जो स्फटिक मणी के समान निर्मल, निष्कल (आकार रहित) अविनाशी परम देव है, जो ब्रह्मा, रूद्र और विष्णु आदि देवताओं की भी दृष्टि में नहीं आते। जिनकी शिवत्व नाम से ख्याती है। जो शिव लिंग

के रूप में प्रतिष्ठित है। उन भगवान शिव का शिव लिंग के मस्तक पर प्रणव मन्त्र (ओम्) से ही पूजन करें।

➽ उपरोक्त विवरण श्री शिव पुराण से है। जिसमें स्पष्ट है कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी से भिन्न कोई अन्य प्रभु भी है। परन्तु ऋषिजन उस अन्य प्रभु (काल ब्रह्म) से अपरिचित है। इसीलिए कभी ब्रह्मा जी को सृष्टा बताते हैं कभी विष्णु जी को तथा कभी शिव को सृष्टा बताते हैं। श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी भी काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) से अपरिचित हैं। पूर्वोक्त सृष्टि रचना से आप पाठकों को काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) परब्रह्म (अक्षर पुरूष) तथा इन से भी भिन्न परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण परमात्मा का ज्ञान हुआ। कृप्या पढ़ें श्री शिव पुराण में सृष्टि रचना का सांकेतिक ज्ञान जो श्री ब्रह्मा जी ने पूर्ण परमात्मा से सुना था। परन्तु काल ब्रह्म ने श्री ब्रह्मा जी को आकाशवाणी आदि करके भ्रम में डाल कर गलत ज्ञान से परिपूर्ण कर दिया जो पुराणों में वर्णित है। श्री शिव पुराण में श्री ब्रह्मा जी ने कुछ ज्ञान पूर्ण परमात्मा सतसुकृत जी से सुना हुआ तथा कुछ अपने अनुभव का लिखा है तथा श्री ब्रह्मा जी से सुना हुआ ज्ञान अन्य वक्ताओं ने जो ज्ञान कहा है, लिखा गया है। यही दशा अन्य सत्तरह पुराणों के ज्ञान की है। श्री ब्रह्मा जी ने कुछ सत्य तथा कुछ असत्य तथा कुछ अपना अनुभव तथा कुछ पूर्ण परमात्मा के मुख से सुना ज्ञान पुराणों में कहा है। फिर भी यथार्थ ज्ञान को समझने व परखने के लिए पुराणों व वेदों तथा श्री मद्भगवत् गीता जी का ज्ञान बहुत सहयोगी है। कृप्या आगे पढ़ें श्री शिव पुराण से लेख :-

संक्षिप्त शिवपुराण, (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार) के अध्याय रूद्रसंहिता पृष्ठ 99 से 110 :-

ब्रह्माजीने कहा - ब्रह्मन्! देवशिरोमणे! तुम सदा समस्त जगत् के उपकार में ही लगे रहते हो। तुमने लोगों के हित की कामना से यह बहुत उत्तम बात पूछी है।

जिस समय समस्त चराचर जगत् नष्ट हो गया था, सर्वत्र केवल अंधकार ही अंधकार था। न सूर्य दिखायी देते थे न चन्द्रमा। अन्यान्य ग्रहों और नक्षत्रों का भी पता नहीं था। न दिन होता था न रात; अग्नि, पृथ्वी, वायु और जल की भी सत्ता नहीं थी।

उस समय 'तत्सद्ब्रह्म' इस श्रुति में जो 'सत्' सुना जाता है, एकमात्र वही शेष था। जिस परब्रह्म के विषय में ज्ञान और अज्ञान से पूर्ण उक्तियोंद्वारा इस प्रकार (ऊपर बताये अनुसार) विकल्प किये जाते हैं; उसने कुछ काल के बाद (सृष्टिका समय आने पर) द्वितीय की इच्छा प्रकट की—उसके भीतर एकसे अनेक होने का संकल्प उदित हुआ। तब उस निराकार परमात्मा ने अपनी लीलाशक्ति से अपने लिये मूर्ति (आकार) की कल्पना की।

जो मूर्तिरहित परम ब्रह्म है, उसीकी मूर्ति (चिन्मय आकार) भगवान् सदाशिव हैं। अर्वाचीन और प्राचीन विद्वान् उन्हीं को ईश्वर कहते हैं। उस समय एकाकी रहकर स्वेच्छानुसार विहार करनेवाले **उन सदाशिव ने अपने विग्रहसे स्वयं ही एक स्वरूपभूता शक्ति की सृष्टि की,** जो उनके अपने श्रीअंग से कभी अलग होनेवाली नहीं थी। **उस पराशक्ति को प्रधान, प्रकृत्ति, गुणवती, माया, बुद्धितत्त्वकी जननी** तथा विकाररहित बताया गया है। **वह शक्ति अम्बिका कही गयी है। उसीको प्रकृति, सर्वेश्वरी, त्रिदेवजननी, नित्या, और मूलकारण भी कहते हैं। सदाशिवद्वारा प्रकट की गयी उस शक्तिके आठ भुजाएँ हैं।**

नाना प्रकार के आभूषण उसके श्रीअंगोंकी शोभा बढ़ाते हैं। वह देवी नाना प्रकार की गतियों से सम्पन्न है और अनेक प्रकारके अस्त्र–शस्त्र धारण करती है। एकाकिनी होने पर भी वह माया संयोगवशात् अनेक हो जाती है।

वे जो सदाशिव हैं, उन्हें परमपुरूष, ईश्वर, शिव, शम्भु और महेश्वर कहते हैं। वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन कालरूपी ब्रह्मने एक ही समय शक्ति के साथ 'शिवलोक' नामक क्षेत्र का निर्माण किया था। उस उत्तम क्षेत्र को ही काशी कहते हैं। वह परम निर्वाण या मोक्ष का स्थान है, जो सबसे ऊपर विराजमान है। **वे प्रिया-प्रियतमरूप शक्ति और शिव, जो परमानन्द स्वरूप हैं, उस मनोरम क्षेत्र में नित्य निवास करते हैं।** काशीपुरी परमानन्दरूपिणी है। मुने! शिव और शिवाने प्रलयकालमें भी कभी उस क्षेत्र को अपने सांनिध्यसे मुक्त नहीं किया है।

देवर्षे! एक समय उस आनन्दवन में रमण करते हुए शिवा और शिव के मन में यह इच्छा हुई कि किसी दूसरे पुरूष की भी सृष्टि करनी चाहिए, जिसपर यह सृष्टि–संचालनका महान् भार रखकर हम दोनों केवल काशीमें रहकर इच्छानुसार विचरें और निर्वाण धारण करें।

ऐसा निश्चय करके शक्तिसहित सर्वव्यापी परमेश्वर शिवने अपने वामभाग के दसवें अंगपर अमृत मल दिया। फिर तो वहाँ से एक पुरूष प्रकट हुआ।

तदनन्तर उस पुरूष ने परमेश्वर शिव को प्रणाम करके कहा–'स्वामिन्! मेरे नाम निश्चित कीजिये और काम बताइये। उस पुरूष की यह बात सुनकर महेश्वर भगवान् शंकर हँसते हुए मेघके समान गम्भीर वाणी में उससे बोले–

शिव ने कहा- वत्स! व्यापक होने के कारण तुम्हारा विष्णु नाम विख्यात हुआ। इसके सिवा और भी बहुत–से नाम होंगे, जो भक्तों को सुख देने वाले होगें। तुम सुस्थिर उत्तम तप करो; क्योंकि वही समस्त कार्यों का साधन है।

ऐसा कहकर भगवान् शिवने श्वासमार्गसे श्री विष्णु को वेदों का ज्ञान प्रदान किया। तदनन्तर अपनी महिमा से कभी च्युत न होनेवाले श्रीहरि भगवान् शिवको प्रणाम करके बड़ी भारी तपस्या करने लगे और शक्तिसहित परमेश्वर शिव भी पार्षदगणों के साथ वहाँ से अदृश्य हो गये। भगवान विष्णु ने सुदीर्घ काल तक बड़ी कठोर तपस्या की।

ब्रह्माजी कहते हैं - देवर्षे! तत्पश्चात् कल्याणकारी परमेश्वर साम्ब सदाशिव ने पूर्ववत् प्रयत्न करके मुझे अपने दाहिने अंग से उत्पन्न किया। मुने! उन महेश्वर ने मुझे तुरन्त ही अपनी माया से मोहित करके नारायण देव के नाभी कमल में डाल दिया और लीला पूर्वक मुझे वहाँ से प्रकट किया। इस प्रकार उस कमल से पुत्र के रूप में मुझ हिरण्यगर्भ का जन्म हुआ।

मैंने उस कमल के सिवा दूसरे किसी को अपने शरीर का जनक या पिता नहीं जाना। मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, मेरा कार्य क्या है, मैं किसका पुत्र होकर उत्पन्न हुआ हूँ और किसने इस समय मेरा निर्माण किया है–

ऐसा निश्चय करके मैंने अपने को कमल से नीचे उतारा। मुने! मैं उस कमल की एक–एक नाल में गया और सैकड़ों वर्षों तक वहाँ भ्रमण करता रहा, किन्तु कहीं भी उस कमल के उद्गम का उत्तम स्थान मुझे नहीं मिला। तब पुनः संशय में पड़कर मैं उस कमल पुष्प पर जाने को उत्सुक हुआ और नाल के मार्ग से उस कमल पर चढ़ने लगा। इस तरह बहुत ऊपर जाने पर भी मैं उस कमल के कोश को न पा सका। उस दशा में मैं और भी मोहित हो उठा। मुने! उस समय भगवान शिव की इच्छा से परम मंगलमयी उत्तम आकाशवाणी प्रकट हुई, जो मेरे मोहका विध्वंस करने वाली थी। उस वाणी ने कहा–'तप' (तपस्या) करो। उस आकाशवाणी

को सुनकर मैंने अपने जन्मदाता पिता का दर्शन करने के लिए उस समय पुनः प्रयत्नपूर्वक बारह वर्षों तक घोर तपस्या की तब मुझपर अनुग्रह करने के लिये ही चार भुजाओं और सुन्दर नेत्रों से सुशोभित भगवान् विष्णु वहाँ सहसा प्रकट हो गये।

तदनन्तर उन नारायण देव के साथ मेरी बातचीत आरम्भ हुई। भगवान् शिव की लीला से वहाँ हम दोनों में कुछ विवाद छिड़ गया। इसी समय हम लोगों के बीच में एक महान अग्निस्तम्भ (ज्योतिर्मयलिंग) प्रकट हुआ। मैंने और विष्णु ने क्रमशः ऊपर और नीचे जाकर उसके आदि–अन्त का पता लगाने के लिए बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु हमें कहीं भी उसका ओर–छोर नहीं मिला। मैं थककर ऊपर से नीचे लौट आया और भगवान् विष्णु भी उसी तरह नीचे से ऊपर आकर मुझसे मिले। हम दोनों शिव की माया से मोहित थे। श्री हरि ने मेरे साथ आगे–पीछे और अगल–बगल से परमेश्वर शिव को प्रणाम किया। फिर वे सोचने लगे–'यह क्या वस्तु है?' इसके स्वरूप का निर्देश नहीं किया जा सकता; क्योंकि न तो इसका कोई नाम है और न कर्म ही है। लिंग रहित तत्व ही यहाँ लिंगभाव को प्राप्त हो गया है। ध्यानमार्ग में भी इसके स्वरूप का कुछ पता नहीं चलता। इसके बाद मैं और श्रीहरि दोनों ने अपने चित्त को स्वस्थ करके उस अग्निस्तम्भ को प्रणाम करना आरम्भ किया।

हम दोनों बोले–महाप्रभो! हम आपके स्वरूप को नहीं जानते। आप जो कोई भी क्यों न हों, आपको हमारा नमस्कार है। महेशान! आप शीघ्र ही हमें अपने यथार्थ रूपका दर्शन कराइये।

मुनिश्रेष्ठ! इस प्रकार अहंकार से आविष्ट हुए हम दोनों ही वहाँ नमस्कार करने लगे। ऐसा करते हुए हमारे सौ वर्ष बीत गये।

ब्रह्माजी कहते हैं – मुनिश्रेष्ठ नारद! इस प्रकार हम दोनों देवता गर्व रहित हो निरन्तर प्रणाम करते रहे। हम दोनों के मन में एक ही अभिलाषा थी कि इस ज्योर्तिलिंग के रूपमें प्रकट हुए परमेश्वर प्रत्यक्ष दर्शन दें। भगवान शंकर दीनों के प्रतिपालक, अहंकारियों का गर्व चूर्ण करने वाले तथा सबके अविनाशी प्रभु हैं। वे हम दोनों पर दयालु हो गये। उस समय वहाँ उन सुरश्रेष्ठ से, 'ओ३म्' 'ओ३म्' ऐसा शब्द रूप नाद प्रकट हुआ, जो स्पष्टरूपसे सुनाई देता था।

तब वहाँ एक ऋषि प्रकट हुए, जो ऋषि समूह के परम साररूप माने जाते हैं। उन्हीं ऋषि के द्वारा परमेश्वर श्रीविष्णु ने जाना की इस शब्दब्रह्ममय शरीरवाले परम लिंगके रूप में साक्षात् परब्रह्मस्वरूप महादेवजी ही यहाँ प्रकट हुए हैं।

उस परब्रह्म परमात्मा शिव का वाचक एकाक्षर (प्रणव) ही है, वे इसके वाच्यार्थरूप हैं। वह परम कारण, ऋत,सत्य,आन्नद एवं अमृतस्वरूप परात्पर परब्रह्म एकाक्षर वाच्य है।

तत्पश्चात् परमेश्वर भगवान् महेश प्रसन्न हो अपने दिव्य शब्दमय रूप को प्रकट करके हँसते हुए खड़े हो गये।

परमात्मा के शब्दमय रूप को भगवती उमा के साथ देखकर मैं और श्रीहरि दोनों कृतार्थ हो गये। इस तरह शब्द–ब्रह्ममय–शरीरधारी महेश्वर शिवका दर्शन पाकर मेरे साथ श्री हरि ने उन्हें प्रणाम किया और पुनः ऊपर की ओर देखा। उस समय उन्हें पाँच कलाओं से युक्त ॐकारजनित मन्त्र का साक्षात्कार हुआ। तत्पश्चात् महादेवजी का 'ॐ तत्वमसि' यह महावाक्य दृष्टिगोचर हुआ, जो परम उत्तम मन्त्र रूप है तथा शुद्ध स्फटिक के समान निर्मल है। फिर सम्पूर्ण धर्म और अर्थ का साधक तथा बुद्धिस्वरूप गायत्री नामक दूसरा महान् मन्त्र लक्षित हुआ, जिसमें चौबीस अक्षर हैं तथा जो चारों पुरूषार्थरूपी फल देने वाला है। तत्पश्चात् मृत्युंजय–मन्त्र फिर पञ्चाक्षर–मन्त्र तथा दक्षिणामूर्तिसंज्ञक चिन्तामणि–मन्त्रका साक्षात्कार हुआ। इस प्रकार पाँच

मन्त्रों की उपलब्धि करके भगवान् श्रीहरि उनका जप करने लगे।

जो मुझ ब्रह्मके भी अधिपति, कल्याणकारी तथा सृष्टि, पालन एवं संहार करने वाले हैं, उन वरदायक साम्बशिवका मेरे साथ भगवान् विष्णु ने प्रिय वचनों द्वारा संतुष्टचित्त से स्तवन किया।

तब पापहारी करूणाकर भगवान् महेश्वर ने प्रसन्नचित्त होकर उन श्रीविष्णुदेवको श्वासरूप से वेद का उपदेश दिया। मुने! उसके बाद शिव ने परमात्मा श्रीहरि को गुह्य ज्ञान प्रदान किया। फिर उन परमात्मा ने कृपा करके मुझे भी वह ज्ञान दिया। वेदका ज्ञान प्राप्त करके कृतार्थ हुए भगवान् विष्णु ने मेरे साथ हाथ जोड़कर महेश्वर को नमस्कार करके पुनः उनसे पूजन की विधि बताने तथा सदुपदेश देने के लिये प्रार्थना की।

ब्रह्मा जी कहते हैं - मुने! श्रीहरि की यह बात सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए कृपानिधान भगवान् शिवने प्रीतिपूर्वक यह बात कही।

श्री शिव बोले - सूरश्रेष्ठगण! मैं तुम दोनों की भक्ति से निश्चय ही बहुत प्रसन्न हूँ। तुमलोग मुझ महादेव की ओर देखो। इस समय तुम्हें मेरा स्वरूप जैसा दिखायी देता है, वैसे ही रूपका प्रयत्नपूर्वक पूजन–चिन्तन करना चाहिये। **तुम दोनों महाबली हो और मेरी स्वरूपभूता प्रकृति से प्रकट हुए हो।**

शम्भु की उपर्युक्त बात सुनकर मेरेसहित श्रीहरिने महेश्वर को हाथ जोड़ प्रणाम करके कहा ।

भगवान विष्णु बोले - प्रभो! यदि हमारे प्रति आपके हृदय में प्रीति उत्पन्न हुई है और यदि आप हमें वर देना आवश्यक समझते है तो हम यही वर माँगते है कि आपमें हम दोनों की सदा अनन्य एवं अविचल भक्ति बनी रहे।

श्रीमहेश्वर बोले - मै सृष्टि, पालन और संहारका कर्ता हूँ, सगुण और निर्गुण हूँ तथा सच्चिदानन्दस्वरूप निर्विकार परब्रह्म परमात्मा हूँ । विष्णो! सृष्टि, रक्षा और प्रलयरूप गुणों अथवा कार्यों के भेदसे मैं ही ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र नाम धारण करके तीन स्वरूपों में विभक्त हुआ हूँ।

ब्रह्मन! मेरा ऐसा ही परम उत्कृष्ट रूप तुम्हारे शरीर से इस लोक में प्रकट होगा जो नाम से 'रूद्र' कहलायेगा।

मैं, तुम, ब्रह्मा तथा जो ये रूद्र प्रकट होंगे, वे सब-के-सब एकरूप हैं । ब्रह्मन्! इस कारण से तुम्हे ऐसा करना चाहिये। तुम तो इस सृष्टि के निर्माता बनो और श्रीहरि इसका पालन करें तथा मेरे अंशसे प्रकट होने वाले जो रूद्र हैं, वे इसका प्रलय करने वाले होंगे। ये जो 'उमां नामसे विख्यात परमेश्वरी प्रकृति देवी है, इन्हीं की शक्तिभूता वाग्देवी ब्रह्माजी का सेवन करेगी। फिर इन प्रकृति देवी से वहाँ जो दूसरी शक्ति प्रकट होगी वे लक्ष्मी रूप से भगवान् विष्णु का आश्रय लेंगी। तदनन्तर पुनः काली नाम से जो तीसरी शक्ति प्रकट होगी, वे निश्चय ही मेरी अंश भूत रूद्रदेव को प्राप्त होंगी।

मैं ही सृष्टि, पालन और संहार करने वाले रज आदि त्रिविध गुणों द्वारा ब्रह्मा, विष्णु और रूद्रनाम से प्रसिद्ध हो तीन रूपों में पृथक–पृथक प्रकट होता हूँ। साक्षात् शिव गुणों से भिन्न हैं। वे प्रकृति और पुरूष से भी परे हैं–अद्वितीय, नित्य, अनन्त पूर्ण एवं निरंजन परब्रह्म परमात्मा हैं। तीनों लोकों का पालन करने वाले श्री हरि भीतर तमोगुण और बाहर सत्त्वगुण धारण करते हैं, त्रिलोकी का संहार करने वाले रूद्रदेव भीतर सत्त्वगुण और बाहर तमोगुण धारण करते हैं तथा त्रिभुवन की सृष्टि करने वाले ब्रह्माजी बाहर और भीतर से भी रजोगुणी ही है। **इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र-इन तीन देवताओं में गुण हैं, परंतु शिव गुणातीत माने गये हैं।**

परमेश्वर शिव बोले - उत्तम व्रतका पालन करने वाले हरे! विष्णो! अब तुम मेरी दूसरी आज्ञा सुनों। उसका पालन करने से तुम सदा समस्त लोकों में माननीय और पूजनीय बने रहोगे। ब्रह्माजी के द्वारा रचे गये लोक में जब कोई दुःख या संकट उत्पन्न हो, तब तुम उन सम्पूर्ण दुःखों का नाश करने के लिए सदा तत्पर रहना। तुम्हारे सम्पूर्ण दुस्सह कार्यों में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। तुम्हारे जो दुर्जेय और अत्यन्त उत्कट शत्रु होंगे, उन सबको मैं मार गिराऊँगा। हरे! तुम नाना प्रकार के अवतार धारण करके लोक में अपनी उत्तम कीर्तिका विस्तार करो और सबके उद्धार के लिये तत्पर रहो। तुम रूद्र के ध्येय हो और रूद्र तुम्हारे ध्येय हैं। तुममें और रूद्र में कुछ भी अन्तर नहीं है।

संक्षिप्त शिवपुराण, रूद्रसंहिता पृष्ठ 114 से :-

'ॐ वामदेवाय नमः' इत्यादि वामदेव–मन्त्र से उन्हें आसनपर विराजमान करे।

संक्षिप्त शिवपुराण, रूद्रसंहिता पृष्ठ 126 से :-

वे ब्रह्माण्ड से बाहर जाकर भगवान शिव की कृपा प्राप्त करके वैकुण्ठधाम में जा पहुँचे और सदा वहीं रहने लगे। मैंने सृष्टि की इच्छा से भगवान् शिव और विष्णु का स्मरण करके पहले के रचे हुए जल में अपनी अंजली डालकर जलको ऊपर की ओर उछाला। इससे वहाँ एक अण्ड प्रकट हुआ।

संक्षिप्त शिवपुराण, रूद्रसंहिता पृष्ठ 130 से :-

उस जोड़े में जो पुरूष था, वही स्वायम्भुव मनु के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

विशेष प्रमाण :- श्री शिव महापुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 6 से 9 में (अनुवाद कर्ता विद्यावारिधि पं. ज्वाला प्रसाद जी मिश्र, प्रकाशक=खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन बम्बई-400004 इस शिव महापुराण में मूल संस्कृत भी विद्यमान है। परन्तु यहाँ पुस्तक विस्तार के कारण केवल हिन्दी अनुवाद ही लिखा गया है।) पृष्ठ 11-13,14,17,18 से सारांश ज्ञान :- लिखा है कि ''एक समय श्री ब्रह्मा जी तथा श्री विष्णु जी में प्रभुता के कारण युद्ध हुआ। श्री ब्रह्मा जी ने कहा मैं सर्व सृष्टि का रचनहार हूँ मैं ही आप (श्री विष्णु) का उत्पन्न कर्ता अर्थात् पिता हूँ। इसी का प्रत्युत्तर देते हुए श्री विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी से कहा मैं आप (श्री ब्रह्मा जी) का उत्पन्न कर्ता अर्थात् पिता हूँ। इस बात पर दोनों का युद्ध हुआ।(पृष्ठ 11 पर उपरोक्त विवरण है)

उनके मध्य में एक प्रकाशमान स्तम्भ प्रकट हुआ। दोनों (ब्रह्मा–विष्णु) को उसके आदि अन्त का भेद नहीं पाया तब वह निराकार ब्रह्म शिव रूप में साकार हुआ तथा कहा ''मेरे सकल निष्कल भेद से दो स्वरूप हैं'' पहला स्तम्भ रूप और पीछे मूर्तिमान रूप धारण किया इसमें ब्रह्म निष्कल (निराकार) और ईशरूप सगुण (साकार) मेरे यह दोनों रूप सिद्ध हैं। दूसरे किसी के नहीं। **इस कारण तुम दोनों को (ब्रह्मा व विष्णु को) अथवा दूसरों को ईश्वरत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती तुमने (श्री ब्रह्मा तथा श्री विष्णु जी ने) जो अज्ञानता से अपने आप को ईश (भगवान) माना यह बड़ा अद्भभुत हुआ उसको दूर करने को ही मैं रणस्थान मैं आया हूँ।** अब तुम अपना अभिमान त्याग कर मुझ ईश्वर में अपनी बुद्धि लगाओ मेरे प्रसाद से लोक में सब अर्थ प्रकाश करते हैं। **मैं ही ब्रह्म हूँ और** मेरा ही कल–अकल रूप है, **ब्रह्म होने से मैं ईश्वर हूँ**। मैं इस सबका ईश्वर हूँ यह मेरा है मेरे सिवाय किसी दुसरे का नहीं है। प्रथम तो ब्रह्म ज्ञान के निमित्त निष्कल ब्रह्म का प्रादुर्भाव हुआ है। इसी से मैं अज्ञात स्वरूप हूँ पीछे तुम्हें

प्रगट दर्शन देने के निमित्त साक्षात् ईश्वर तत्क्षण ही में सगुण रूप हुआ हूँ। (पृष्ठ18) हे पुत्रों ! यह कृत्य (उत्पति व स्थिति का कार्य) आपने तप से प्राप्त किया है जो सृष्टि की उत्पति तथा पालन कहलाता हैं। सौ मैंने प्रसन्न होकर तुम्हें दिया है। इसी प्रकार से दूसरे दो कृत्य रूद्र और महेश को प्रदान किए हैं परन्तु अनुग्रह कृत्य कोई भी पाने को समर्थ नहीं है।

''श्री शिव पुराण के उपरोक्त लेखों का सारांश'' :-

उपरोक्त शिव पुराण से निम्न बातें स्पष्ट हुई :-

(1) सदाशिव अर्थात् काल रूपी ब्रह्म, श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री महेश जी का जनक (पिता) है।

(2) प्रकृति अर्थात् दुर्गा जिसकी आठ भुजाऐं हैं यह श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शंकर (रूद्र) जी की जननी (माता) है।

(3) दुर्गा को प्रधान, प्रकृति, शिवा भी कहा जाता है।

(4) श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री महेश ईश (भगवान) नहीं हैं क्योंकि खेमराज श्री कृष्णदास प्रकाशन बम्बई वाली श्री शिवपुराण में श्री शिव अर्थात् काल ब्रह्म ने कहा है कि हे ब्रह्मा तथा विष्णु तुमने अपने आप को ईश (भगवान) माना है यह ठीक नहीं है अर्थात् तुम प्रभु नहीं हो।

(5) श्री शिव अर्थात् काल ब्रह्म से भिन्न तथा इसी के आधीन तीनों देवता (ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश/रूद्र) हैं।

(6) श्री ब्रह्मा, विष्णु ने जो उपाधी प्राप्त की है यह तप करके प्राप्त की है। जो ब्रह्म काल अर्थात् सदाशिव द्वारा तप के प्रतिफल में प्रदान की गई है।

(7) सदाशिव अर्थात् महाशिव ही ब्रह्म है यही काल रूपी ब्रह्म है। दुर्गा ने अपनी शब्द (वचन) शक्ति से सावित्री, लक्ष्मी, पार्वती को उत्पन्न किया।

(8) श्री ब्रह्मा जी से सावित्री, श्री विष्णु *जी से लक्ष्मी तथा श्री महेश/रूद्र से पार्बती/काली का विवाह किया गया।*

(9) श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री महेश को क्षमा करने का अधिकार नहीं है। केवल कर्म फल ही प्रदान कर सकते हैं।

(10) श्री ब्रह्मा रजगुण, श्री विष्णु सतगुण तथा श्री महेश/रूद्र तमगुण युक्त हैं।

''पवित्र श्रीमद्भगवत गीता में सृष्टि रचना का प्रमाण''

(दुर्गा तथा ब्रह्म की मैथुन क्रिया से ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 तक है। ब्रह्म (काल) कह रहा है कि प्रकृति (दुर्गा) तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म(काल) इसका पति हूँ। हम दोनों के संयोग से सर्व प्राणियों सहित तीनों गुणों (रजगुण - ब्रह्मा जी, सतगुण - विष्णु जी, तमगुण - शिवजी) की उत्पत्ति हुई है। मैं (ब्रह्म) सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा प्रकृति (दुर्गा) इनकी माता है। मैं इसके उदर में बीज स्थापना करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है।

यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16, 17 में भी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्। १।

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित्।।1।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित, पीपल का वृक्ष रूप संसार है (यस्य) जिसके (छन्दांसि) छोटे–छोटे हिस्से या टहनियाँ (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसार रूप वृक्षको (यः) जो (वेद) सर्वांगों सहित जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है। (1)

केवल हिन्दी अनुवाद : ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला नीचे को शाखा वाला अविनाशी विस्तारित, पीपल का वृक्ष रूप संसार है जिसके छोटे-छोटे हिस्से या टहनियाँ पत्ते कहे हैं उस संसार रूप वृक्षको जो सर्वांगों सहित जानता है वह पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है। (1)

भावार्थ : गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में जिस तत्वदर्शी संत के विषय में कहा है उसकी पहचान अध्याय 15 श्लोक 1 में बताया है कि वह तत्वदर्शी संत कैसा होगा जो संसार रूपी वृक्ष का पूर्ण विवरण बता देगा कि मूल तो पूर्ण परमात्मा है, तना अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है, डार ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष है तथा शाखा तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी)है तथा पात रूप संसार अर्थात् सर्व ब्रह्मण्ड़ों का विवरण बताएगा वह तत्वदर्शी संत है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः।
अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि
कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ।२।

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः, विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके।।2।।

अनुवाद : (तस्य) उस वृक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवृद्धाः) तीनों गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसृता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार– काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मोमें बाँधने की (अपि) भी (मूलानि) जड़ें मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक अर्थात् पृथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक, चौरासी लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्ततानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।(2)

केवल हिन्दी अनुवाद : उस वृक्षकी नीचे और ऊपर तीनों गुणों ब्रह्मा-रजगुण, विष्णु-सतगुण, शिव-तमगुण रूपी फैली हुई डाली जीवको कर्मोमें बाँधने की भी मुख्य कारण हैं तथा मनुष्यलोक अर्थात् पृथ्वी लोक में नीचे-नरक, चौरासी लाख जूनियों में ऊपर स्वर्ग लोक

ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ
संसार रूपी वृक्ष का चित्र

आदि में व्यवस्थित किए हुए हैं।(2)

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते
नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूल-
मसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा।३।

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा।।3।।

अनुवाद : (अस्य) इस रचना का (न) न (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) न (अन्तः) अन्त है (न) न (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति है का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्) अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूप वाले (असंङ्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी शस्त्र द्वारा (दृढेन्) दृढ़ता से सूक्षम वेद अर्थात् तत्वज्ञान के द्वारा जानकर अर्थात् तत्वज्ञान रूपी शस्त्र से (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।(3)

केवल हिन्दी अनुवाद : इस रचना का नहीं शुरूवात तथा नहीं अन्त है नहीं वैसा स्वरूप पाया जाता है तथा यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी नहीं है क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति है का मुझे भी ज्ञान नहीं है इसे तत्वज्ञान रूपी शस्त्र द्वारा काटकर अर्थात् सूक्षम वेद (तत्वज्ञान के) द्वारा जानकर उसे तत्वज्ञान रूपी शस्त्र से काटकर।(3)

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं-
यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये
यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।४।

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृतिः, प्रसृता, पुराणी।।4।।

अनुवाद : जब तत्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् तत्वज्ञान से सर्व स्थिति को समझकर (तत्) उस परमात्माके (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भलीभाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गये हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसारमें नहीं आते (च) और (यतः) जिस परमात्मा–परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवृतिः) रचना–सृष्टि (प्रसृता) उत्पन्न हुई है (तम्) अज्ञात (आद्यम्) आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) मैं शरण में हूँ अर्थात् उसी पूर्ण परमात्मा की मैं भी पूजा करता हूँ।(4)

केवल हिन्दी अनुवाद : (जब तत्वदर्शी संत मिल जाए तत्वज्ञान से सर्व स्थिति को समझ कर इसके पश्चात् उस परमात्माके परमपद अर्थात् सतलोक को भलीभाँति खोजना चाहिए

जिसमें गये हुए साधक फिर लौटकर संसारमें नहीं आते और जिस परमात्मा-परम अक्षर ब्रह्म से आदि रचना-सृष्टि उत्पन्न हुई है अज्ञात आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन पूर्ण परमात्मा की ही मैं शरण में हूँ अर्थात् उसी पूर्ण परमात्मा की मैं भी पूजा करता हूँ।(4)

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते। १६।

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते।।16।।

अनुवाद : (लोके) इस संसारमें (द्वौ) दो प्रकारके (क्षरः) नाशवान् (च) और (अक्षरः) अविनाशी (पुरुषौ) भगवान हैं (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों प्रभुओं के लोकों में (सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणियोंके शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।(16)

केवल हिन्दी अनुवाद : इस संसार में क्षर पुरूष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) दो प्रकार के भगवान हैं इसी प्रकार इन दोनों प्रभुओं के लोकों में सम्पूर्ण प्राणियोंके शरीर तो नाशवान् और जीवात्मा अविनाशी कहा जाता है।(16)

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः। १७।

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।।17।।

अनुवाद : (उत्तमः) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो (अन्यः) उपरोक्त दोनों प्रभुओं (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से भी अन्य ही है (इति) यह वास्तव में (परमात्मा) परमात्मा (उदाहृतः) कहा गया है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) ईश्+वर =प्रभु श्रेष्ठ अर्थात् समर्थ प्रभु है।(17)

केवल हिन्दी अनुवाद : उत्तम प्रभु तो उपरोक्त दोनों प्रभुओं से भी अन्य ही है यह वास्तव में परमात्मा कहा गया है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण पोषण करता है एवं अविनाशी (ईश्+वर) = प्रभु श्रेष्ठ अर्थात् समर्थ प्रभु है।(17)

''सर्व प्रभुओं की आयु''

अध्याय 8 का श्लोक 17

सहस्त्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं युगसहस्त्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः। १७।

सहस्त्रयुगपर्यन्तम्, अहः,यत्,ब्रह्मणः, विदुः,रात्रिम्,
युगसहस्त्रान्ताम्, ते, अहोरात्रविदः, जनाः।।17।।

अनुवाद : (ब्रह्मणः) परब्रह्म का (यत्) जो (अहः) एक दिन है उसको (सहस्त्रयुगपर्यन्तम्) एक हजार युग की अवधिवाला और (रात्रिम्) रात्रिको भी (युगसहस्त्रान्ताम्) एक हजार युगतककी अवधिवाली (विदुः) तत्वसे जानते हैं (ते) वे (जनाः) तत्वदर्शी संत (अहोरात्रविदः) दिन–रात्री के तत्वको जाननेवाले हैं। (17)

केवल हिन्दी अनुवाद : परब्रह्म का जो एक दिन है उसको एक हजार युग की अवधिवाला और रात्रिको भी एक हजार युगतककी अवधिवाली तत्वसे जानते हैं वे तत्वदर्शी संत परब्रह्म के दिन-रात्री के तत्वको जाननेवाले हैं। (17)

विशेषः- सात त्रिलोकिय ब्रह्मा (काल के रजगुण पुत्र) की मृत्यु के बाद एक त्रिलोकिय विष्णु जी की मृत्यु होती है तथा सात त्रिलोकिय विष्णु (काल के सतगुण पुत्र) की मृत्यु के बाद एक त्रिलोकिय शिव (ब्रह्म-काल के तमोगुण पुत्र) की मृत्यु होती है। (प्रमाण :- कबीर सागर अध्याय ज्ञान सागर पृष्ठ 43) ऐसे 70000 (सतर हजार अर्थात् 0.7 लाख) त्रिलोकिय शिव की मृत्यु के उपरान्त एक ब्रह्मलोकिय महा शिव (सदाशिव अर्थात् काल) की मृत्यु होती है। एक ब्रह्मलोकिय महाशिव की आयु जितना एक युग परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का हुआ। ऐसे एक हजार युग अर्थात् एक हजार ब्रह्मलोकिय शिव (ब्रह्मलोक में स्वयं काल ही महाशिव रूप में रहता है) की मृत्यु के बाद काल के इक्कीस ब्रह्मण्डों का विनाश हो जाता है। इसलिए यहाँ पर परब्रह्म के एक दिन जो एक हजार युग का होता है तथा इतनी ही रात्री होती है। लिखा है।

(1) रजगुण ब्रह्मा की आयुः-*ब्रह्मा का एक दिन एक हजार चतुर्युग का है तथा इतनी ही रात्री है। (एक चतुर्युग में 43,20,000 मनुष्यों वाले वर्ष होते हैं) एक महिना तीस दिन रात का है, एक वर्ष बारह महिनों का है तथा सौ वर्ष की ब्रह्मा जी की आयु है। जो सात करोड़ बीस लाख चतुर्युग की है।*

(2) सतगुण विष्णु की आयुः-*श्री ब्रह्मा जी की आयु से सात गुणा अधिक श्री विष्णु जी की आयु है अर्थात् पचास करोड़ चालीस लाख चतुर्युग की श्री विष्णु जी की आयु है।*

(3) तमगुण शिव की आयुः-*श्री विष्णु जी की आयु से श्री शिव जी की आयु सात गुणा अधिक है अर्थात् तीन अरब बावन करोड़ अस्सी लाख चतुर्युग की श्री शिव की आयु है।*

(4) काल ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष की आयुः-*सात त्रिलोकिय ब्रह्मा (काल के रजगुण पुत्र) की मृत्यु के बाद एक त्रिलोकिय विष्णु जी की मृत्यु होती है तथा सात त्रिलोकिय विष्णु (काल के सतगुण पुत्र) की मृत्यु के बाद एक त्रिलोकिय शिव (ब्रह्म/काल के तमोगुण पुत्र) की मृत्यु होती है। ऐसे 70000 (सतर हजार अर्थात् 0.7 लाख) त्रिलोकिय शिव की मृत्यु के उपरान्त एक ब्रह्मलोकिय महा शिव (सदाशिव अर्थात् काल) की मृत्यु होती है। एक ब्रह्मलोकिय महाशिव की आयु जितना एक युग परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का हुआ। ऐसे एक हजार युग का परब्रह्म का एक दिन होता है। परब्रह्म के एक दिन के समापन के पश्चात् काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों का विनाश हो जाता है तथा काल व प्रकृति देवी(दुर्गा) की मृत्यु होती है। परब्रह्म की रात्री (जो एक हजार युग की होती है) के समाप्त होने पर दिन के प्रारम्भ में काल व दुर्गा का पुनर् जन्म होता है फिर ये एक ब्रह्मण्ड में पहले की भांति सृष्टि प्रारम्भ करते हैं। इस प्रकार परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष का एक दिन एक हजार युग का होता है तथा इतनी ही*

रात्री है।

अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की आयु :- *परब्रह्म का एक युग ब्रह्मलोकीय शिव अर्थात् महाशिव (काल ब्रह्म) की आयु के समान होता है। परब्रह्म का एक दिन एक हजार युग का तथा इतनी ही रात्री होती है। इस प्रकार परब्रह्म का एक दिन-रात दो हजार युग का हुआ। एक महिना 30 दिन का एक वर्ष 12 महिनों का तथा परब्रह्म की आयु सौ वर्ष की है। इस से सिद्ध है कि परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष भी नाशवान है। इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 तथा अध्याय 8 श्लोक 20 से 22 में किसी अन्य पूर्ण परमात्मा के विषय में कहा है जो वास्तव में अविनाशी है।*

नोट :- गीता जी के अन्य अनुवाद कर्ताओं ने ब्रह्मा का एक दिन एक हजार चतुर्युग का लिखा है जो उचित नहीं है। क्योंकि मूल संस्कृत में सहंसर युग लिखा है न की चतुर्युग। तथा ब्रह्मणः लिखा है न कि ब्रह्मा। तत्वज्ञान के अभाव से अर्थों का अनर्थ किया है।

भावार्थ - गीता ज्ञान दाता प्रभु ने केवल इतना ही बताया है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो। ऊपर जड़ें (मूल) तो पूर्ण परमात्मा है। नीचे टहनीयां आदि अन्य हिस्से जानों। इस संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का भिन्न-भिन्न विवरण जो संत जानता है वह तत्वदर्शी संत है जिसके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 2-3 में केवल इतना ही बताया है कि तीनों गुण रूपी शाखा हैं। यहां विचारकाल में अर्थात् गीता में आपको मैं (गीता ज्ञान दाता) पूर्ण जानकारी नहीं दे सकता क्योंकि मुझे इस संसार की रचना के आदि व अंत का ज्ञान नहीं है। उस के लिए गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है कि किसी तत्वदर्शी संत से उस पूर्ण परमात्मा का ज्ञान जानों इस गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में उस तत्वदर्शी संत की पहचान बताई है कि वह संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का ज्ञान कराएगा। उसी से पूछो। गीता अध्याय 15 के श्लोक 4 में कहा है कि उस तत्वदर्शी संत के मिल जाने के पश्चात् उस परमेश्वर के परम पद की खोज करनी चाहिए अर्थात् उस तत्वदर्शी संत के बताए अनुसार साधना करनी चाहिए जिससे पूर्ण मोक्ष(अनादि मोक्ष) प्राप्त होता है। गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मैं भी उसी की शरण में हूँ। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट किया है कि तीन प्रभु हैं एक क्षर पुरूष (ब्रह्म) दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तीसरा परम अक्षर पुरूष (पूर्ण ब्रह्म)। क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष वास्तव में अविनाशी नहीं हैं। वह अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य ही है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है। उस संसार रूपी वृक्ष का चित्र कृप्या देखें पृष्ठ संख्या 150 पर तथा संक्षिप्त विवरण निम्न पढ़ें :-

उपरोक्त श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में यह प्रमाणित हुआ कि उलटे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष की मूल अर्थात् जड़ तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जिससे पूर्ण वृक्ष का पालन होता है तथा वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी के बाहर जमीन के साथ दिखाई देता है वह तना होता है उसे अक्षर पुरुष

अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने से ऊपर चल कर अन्य मोटी डार निकलती है उनमें से एक डार को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष जानों तथा उसी डार से अन्य तीन शाखाऐं निकलती हैं उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जानों तथा शाखाओं से आगे पत्ते रूप में सांसारिक प्राणी जानों। उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट है कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इन दोनों के लोकों में जितने प्राणी हैं उनके स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है अर्थात् उपरोक्त दोनों प्रभु व इनके अन्तर्गत प्राणी नाशवान हैं। भले ही अक्षर पुरुष(परब्रह्म) को अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है। उपरोक्त विवरण में तीन प्रभुओं का भिन्न-भिन्न विवरण दिया है।

उपरोक्त तीनों परमात्माओं की स्थिती को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण :- (1)जैसे एक चाय पीने का प्याला होता है जो सफेद मिट्टी का बना होता है। जो हाथ से छुटते ही जमीन पर गिरते ही टुकड़े-2 हो जाता है। यह क्षर प्याला जानो। ऐसी स्थिती ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष की जाने। (2) एक प्याला इस्पात (स्टील) का बना होता है। जो मिट्टी के प्याले से अधिक स्थाई है। परन्तु विनाश इस्पात का भी होता है। भले ही समय अधिक लगता है। इसी प्रकार परब्रह्म को अक्षर पुरूष अर्थात् अविनाशी प्रभु कहा है क्योंकि परब्रह्म की मृत्यु उस समय होती है जिस समय तक क्षर पुरूष अर्थात् काल की मृत्यु 36000 (छःत्तीस हजार) बार हो चुकी होती है। परन्तु फिर भी अक्षर पुरूष वास्तव में अविनाशी नहीं है।

इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से दूसरा ही है वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है वही वास्तव में परमात्मा कहा जाता है।

यह प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 20,21,22 में भी है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि अध्याय 8 श्लोक 18 में जिस अव्यक्त के विषय में कहा है उससे दुसरा जो सनातन अव्यक्त भाव है वह परम दिव्य पुरूष सब प्राणियों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। (श्लोक 20) वही अव्यक्त अक्षर इस नाम से कहा गया है उसी पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति को परम गति है। जिस सनातन अव्यक्त परमात्मा को प्राप्त होकर साधक वापस नहीं आते वह मेरा भी परम धाम है अर्थात् मेरा भी उपेक्षित धाम है। (श्लोक 21) हे पार्थ जिस परमात्मा के अन्तर्गत सर्व प्राणी आते हैं जिस परम पुरूष से यह समस्त जगत परिपूर्ण है वह सनातन अव्यक्त अर्थात् परम पुरूष तो अनन्य भक्ति से ही प्राप्त होने योग्य है। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15 में भी है कहा है कि सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते है अन्न की उत्पति वर्षा से होती है। वर्षा यज्ञ से होती है। यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान शास्त्रविधि अनुसार कर्मों से होती है। कर्म ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष से उत्पन्न हुए क्योंकि हम ब्रह्म काल के लोक में आए तो कर्म करने पड़े क्योंकि यहां कर्म फल ही मिलता है। सतलोक में बिना कर्म ही सर्व फल प्रभु कृपा से प्राप्त होता है। ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष की प्राप्ति अविनाशी परमात्मा से हुई। इससे

स्पष्ट है कि सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठीत है परम अक्षर परमात्मा के विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 1,8,9,10 में वर्णन हैं

उपरोक्त गीता अध्याय 3 श्लोक 14 से 15 में भी स्पष्ट है कि ब्रह्म काल की उत्पति परम अक्षर पुरूष से हुई वही परम अक्षर ब्रह्म ही यज्ञों में पूज्य है।

"पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुर्आन शरीफ में सृष्टि रचना का प्रमाण"

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुर्आन शरीफ में भी है।

कुर्आन शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टि रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है?

पवित्र बाईबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाऐं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (मांस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टि की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप (आकार) जैसा बनाया। इसलिए सिद्ध हुआ कि परमात्मा नराकार अर्थात् मानव सदृश शरीर युक्त है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टि की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

पवित्र कुर्आन शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्) ।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी–देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुर्आन के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना(लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् – हरूिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा(कबीरा) ।58।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी(पवित्र महिमा)

का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :– अल्लजी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रहमानु फस्अल् बिही खबीरन् (कबीरन्) ।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुर्आन शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टि की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्वदर्शी संत से प्राप्त करो। इस से यह भी सिद्ध हुआ कि कुरान ज्ञान दाता बाखबर अर्थात् पूर्ण ज्ञानी नहीं है।

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी? तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं (कुरान ज्ञान दाता) नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों (ईसाई तथा मुस्लमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टि रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू अर्थात् अल्लाहु अक्बर भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान आज तक यह तत्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुर्आन शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने कहा :-

कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेदों (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेबों (कुर्आन शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) का ज्ञान गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

"पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना"

विशेष :- निम्न अमृतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुस्लमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है

तथा ये तीनों प्रभु अविनाशी है। इनका जन्म मृत्यु कभी नहीं होता न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुर्आन शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है। कहते थे कि सर्वशास्त्रों में परमात्मा तो निराकार लिखा है। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर) गुरुओं पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। कि परमात्मा साकार है। वही पूर्ण परमात्मा ही जब चाहे प्रकट हो जाता है। वही परमात्मा काशी में कबीर नाम से प्रकट हुआ था। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सृष्टि रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी (बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदृश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सृष्टि का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए। कृपा प्रेमी पाठक पढ़े निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारितः-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो एक राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग बेद पुराना। आदि राम का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
मां अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। हे साहेब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग बिलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उसको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।

अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी ने सद्ग्रन्थों के वास्तविक ज्ञान को पांच वर्ष की आयु में सन् 1403 में कविर्गिर्भी अर्थात् कबीर वाणी द्वारा बोलना प्रारम्भ कर दिया था। फिर मथुरा में भक्त धर्मदास जी से मिलने के उपरान्त अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कहा है कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टि की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई ? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म/काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्मण्ड समेत सतलोक से 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (रजगुण श्री ब्रह्मा जी,सत्गुण श्री विष्णु जी तथा तमगुण श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

तीनों देवता (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) भी इस ब्रह्म अर्थात् काल प्रभु की साधना करते हैं। यह ब्रह्म इनको भी नहीं मिला है क्योंकि इसने सौंगन्ध खाई है कि मैं किसी भी वेद वर्णीत विधि से या अन्य किसी जप, तप साधना क्रिया से किसी को दर्शन नहीं दूंगा। प्रमाण गीता अध्याय 11 श्लोक 47-48 में है। परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि सब व्यक्ति ब्रह्म की महिमा से परिचित है परन्तु आदि ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को कोई नहीं जानता। तीनों देवताओं तथा ब्रह्म (काल) को सब पूज रहे हैं। जिसके कारण से काल जाल में ही रह जाते हैं। यह ब्रह्म काल अपने पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) को भी खाता है।

फिर नए ब्रह्मा, विष्णु, शिव उत्पन्न कर लेता है। इस प्रकार अपने ब्रह्मण्डों में सर्व को धोखे में रखता है। स्वयं ऊपर शुन्य स्थान पर भिन्न रहता है। यह कबीर परमेश्वर जी ने सर्व काल का जाल बताया है।

विशेषः- प्रिय पाठक विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की स्थिती अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दु समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मृत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाशवान हैं। इन के पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकृति/अष्टांगी) हैं जैसा आप ने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दु समाज के कलयुगी गुरुओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (विद्वान नही) है, विद्यार्थीयों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरुओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरु, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्तिसाधना करा के परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधी त्यागकर मनमाना आचरण पूजा करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रों युक्त ज्ञान अपनी अमृतवाणी (कविरवाणी) में बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरुओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक नहीं जाने दिया। जो अब स्पष्ट हो रहा है इससे सिद्ध है कि कविंदेव (कबीर प्रभु) तत्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।

कबीर साहिब अपनी (पूर्णब्रह्म की) जानकारी स्वयं बताते हैं कि इन परमात्माओं से ऊपर असंख भुजा का परमात्मा सतपुरुष है जो सत्यलोक (सच्च खण्ड, सतधाम) में रहता है तथा उसके अन्तर्गत सर्वलोक [ब्रह्म (काल) के 21 ब्रह्मण्ड व ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति के लोक तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड व अन्य सर्व ब्रह्मण्ड] आते हैं और वहाँ पर सत्यनाम-सारनाम के जाप द्वारा जाया जाएगा जो पूरे गुरु से प्राप्त होता है। सच्चखण्ड (सतलोक) में जो आत्मा चली जाती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। सतपुरुष (पूर्णब्रह्म) कबीर साहेब (कविर्देव) ही अन्य लोकों में स्वयं ही भिन्न-भिन्न नामों से विराजमान है। जैसे अलख लोक में अलख पुरुष, अगम लोक में अगम पुरुष तथा अकह लोक में अनामी पुरुष रूप में विराजमान है। ये तो उपमात्मक नाम हैं, परन्तु वास्तविक नाम उस पूर्ण पुरुष का कविर्देव (भाषा भिन्न होकर कबीर साहेब) है।

"आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टि रचना का संकेत"

श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र.

पृ. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा। (3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।। (4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।। (10)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व सृष्टि की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्व रचे। अपने द्वारा रची सृष्टि का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिन जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु (अंश) अमृतवाणी महला 1 (गु.ग्र.पृ. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।। (3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।। (9)

उपरोक्त अमृतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सृष्टि रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सर्व शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी है।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार।
हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री सन्त नानक जी ने स्पष्ट कर दिया कि हे (हक्का कबीर) सत्कबीर आप (कून करतार) शब्द शक्ति से रचना करने वाले शब्द स्वरूपी

प्रभु अर्थात् सर्व सृष्टि के रचन हार हो, आप ही (बेएब) निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहा आस ऐहो आधार।
नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का सृजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत् कह रहा हूँ कि यह धाणक अर्थात् कबीर जुलाहा ही पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों के सांकेतिक ज्ञान से प्रमाणित हुआ सृष्टि रचना कैसे हुई? अब पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए।

''राधा स्वामी व धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा पन्थों के सन्तों तथा अन्य संतों द्वारा सृष्टि रचना की दन्त कथा''

अन्य संतों द्वारा जो सृष्टि रचना का ज्ञान बताया है वह कैसा है? कृप्या निम्न पढ़ें :-

पवित्र पुस्तक जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह जी महाराज'' पृष्ठ नं. 102-103 से ''सृष्टि की रचना'' (सावन कृपाल पब्लिकेशन, दिल्ली)

''पहले सतपुरुष निराकार था, फिर इजहार (आकार) में आया तो ऊपर के तीन निर्मल मण्डल (सतलोक – अलखलोक – अगमलोक) बन गया तथा प्रकाश तथा मण्डलों का नाद (धुनि) बन गया।''

पवित्र पुस्तक सारवचन (नसर) प्रकाश राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग आगरा, ''सृष्टि की रचना'' पृष्ठ 81,

''प्रथम धूंधूकार था। उसमें पुरुष सुन्न समाध में थे। जब कुछ रचना नहीं हुई थी। फिर जब मौज हुई तब शब्द प्रकट हुआ और उससे सब रचना हुई, पहले सतलोक और फिर सतपुरुष की कला से तीन लोक और सब विस्तार हुआ।''

यह ज्ञान तो ऐसा है। एक समय कोई बच्चा नौकरी लगने के लिए साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए गया। अधिकारी ने पूछा कि आप ने महाभारत पढ़ा है। लड़के ने उत्तर दिया कि उंगलियों पर रट रखा है। अधिकारी ने प्रश्न किया कि पाँचों पाण्डवों के नाम बताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि एक भीम था, एक उसका बड़ा भाई था, एक उससे छोटा था, एक और था तथा एक का नाम मैं भूल गया। उपरोक्त सृष्टि रचना का ज्ञान तो ऐसा है। यथार्थ जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें पूर्वोक्त सृष्टि रचना।

सतपुरुष व सतलोक की महिमा बताने वाले व पाँच नाम (औंकार - ज्योति निरंजन - ररंकार - सोहं - सत्यनाम) देने वाले व तीन नाम (अकाल मूर्ति - सतपुरुष - शब्द स्वरूपी राम) देने वाले संतों द्वारा रची पुस्तकों से कुछ निष्कर्ष।

संतमत प्रकाश भाग 3 पृष्ठ 76 पर लिखा है कि ''सच्चखण्ड या सतनाम चौथा

लोक है'', यहाँ पर 'सतनाम' को स्थान कहा है। फिर इस सन्तमत प्रकाश पुस्तक के पृष्ठ नं. 79 पर लिखा है कि ''एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम 'मन', तीसरा राम 'ब्रह्म', चौथा राम 'सतनाम', यह असली राम है।'' फिर पुस्तक संतमत प्रकाश पहला भाग पृष्ठ नं. 17 पर लिखा है कि ''वह सतलोक है, उसी को सतनाम कहा जाता है।'' पवित्र पुस्तक 'सार वचन नसर यानि वार्तिक' पृष्ठ नं. 3 पर लिखा है कि ''अब समझना चाहिए कि राधा स्वामी पद सबसे उच्चा मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरुष करके ब्यान किया है।'' पुस्तक सार वचन (नसर) आगरा से प्रकाशित पृष्ठ नं. 4 पर भी उपरोक्त ज्यों का त्यों वर्णन है। पुस्तक 'सच्चखण्ड की सड़क' पृष्ठ नं. 226 ''संतों का देश सच्चखण्ड या सतलोक है, उसी को सतनाम- सतशब्द-सारशब्द कहा जाता है।''

विशेष :- उपरोक्त व्याख्या ऐसी लगी जैसे किसी ने जीवन में न तो शहर देखा, न कार देखी और न पैट्रोल देखा है, न ड्राईवर का ज्ञान हो कि ड्राईवर किसे कहते हैं और वह व्यक्ति अन्य साथियों से कहे कि मैं शहर में जाता हूँ, कार में बैठ कर आनंद मनाता हूँ। फिर साथियों ने पूछा कि कार कैसी है, पैट्रोल कैसा है और ड्राईवर कैसा है, शहर कैसा है? उस गुरु जी ने उत्तर दिया कि शहर कहो चाहे कार एक ही बात है, शहर भी कार ही है, पैट्रोल भी कार को ही कहते हैं, ड्राईवर भी कार को ही कहते हैं, सड़क भी कार को ही कहते हैं।

आओ विचार करें - सतपुरुष तो पूर्ण परमात्मा है, सतनाम वह दो मंत्र का नाम है जिसमें एक ओ३म् तथा तत् सांकेतिक है तथा इसके बाद सारनाम साधक को पूर्ण गुरु द्वारा दिया जाता है। ये सतनाम तथा सारनाम दोनों स्मरण करने के नाम हैं। सतलोक वह स्थान है जहां सतपुरुष रहता है। पुण्यात्माओं से प्रार्थना है कि सत्य का ग्रहण करें असत्य का परित्याग करें।

सन्त रामपाल जी महाराज

❑❑❑

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(प्रथम किस्त)

(8 मार्च 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

श्री कृष्ण सिंह लाठर ट्रस्टी ने बताया कि सतलोक आश्रम करौंथा जि. रोहतक (हरियाणा) में सात दिवसीय सत्संग 6 मार्च को प्रारम्भ हुआ। जो 12 मार्च 2006 तक चलेगा। काशी में 120 वर्ष लीला करके सन् 1518 में मगहर स्थान से सशरीर सतलोक जाने के 209 वर्ष बाद इस दिन (फाल्गुन शुद्धी द्वादशी) को पूर्ण परमात्मा सतपुरूष कविर्देव (कबीर परमेश्वर) सतलोक से चलकर सशरीर गाँव छुड़ानी जि. झज्जर (हरियाणा) में सन् 1727 में दिन के सुबह 10 बजे खेतों में प्रकट हुए थे। जहाँ पर दस वर्षीय बालक गरीबदास साहेब जी गायों को चरा रहे थे। कई अन्य बड़े ग्वाले भी थे। एक कंवारी गाय का दूध अपने आर्शीवाद से निकाला। उसे स्वयं भी पीया तथा बालक गरीब दास जी को भी पिलाया। नाम दान करके उसकी आत्मा को सतलोक ले गए। पीछे से बालक गरीबदास जी को मृत जानकर अन्तिम संस्कार के लिए चिता पर लिटा लिया गया था। लगभग आठ घण्टे के बाद गरीबदास जी की आत्मा को सर्व ब्रह्मण्डों तथा सतलोक का दर्शन करा कर वापिस छोड़ दिया। चिता पर से इकलौते पुत्र को जीवित देख कर माता-पिता की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। परन्तु आदरणीय गरीबदास जी महाराज पहले वाली भाषा नहीं बोल रहे थे। वे आँखों देखा सतलोक का हाल अमृतवाणी (दोहों-लोकोक्तियों) के द्वारा बोलने लगे। जो आज सद्ग्रन्थ साहेब नाम से लिपि बद्ध है। यही ज्ञान परम पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की अमृतवाणी में है। इस दिन (फाल्गुन मास शुद्धी द्वादशी) को प्रति वर्ष आदरणीय गरीबदास जी के बोध दिवस के उपलक्ष में सतलोक आश्रम करौंथा में मनाया जाता है। सत्संग में उपरोक्त जानकारी सन्त रामपाल जी महाराज ने सर्व संगत को दी तथा भक्तों की शंकाओं का समाधान करते हुए राधास्वामी पंथ की पुस्तकों को पर्दे पर प्रोजैक्टर द्वारा सर्व को दिखाया। सर्व तथ्यों को आँखों देख कर सर्व संगत ने दांतों तले ऊंगली दबाई। राधास्वामी पंथ से जुड़े सैकड़ों भक्तों ने सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त किया।

कुछ श्रद्धालुओं ने शंका व्यक्त की कि क्या गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? सन्त रामपाल जी महाराज ने कहा : जैसे एक वैद्य (डाक्टर) से उपचार नहीं होता तो दूसरा बदल लेना हितकर होता है। इसी प्रकार सर्व सृष्टि को जन्म-मृत्यु का रोग लगा है। गुरू बदलने से लाभ होता है हानि नहीं होती।

''राधा स्वामी पंथ'' का मूल सिद्धांतः-

परमात्मा निराकार है। गुरू रूप में प्रकट सन्त ही प्रभु का साकार रूप है। सतलोक(सच्चखण्ड) में केवल प्रकाश ही प्रकाश है। अभ्यासी को शरीर(घट) में जो धुन सुन रही है तथा जो प्रकाश दिखाई देता है यही प्रभु प्राप्ति है। पाँच नामों के जाप से पाँच मण्डलों में साधक पहुँच जाता है। नाम इस प्रकार है- ज्योति निरंजन, ओंकार, ररंकार, सोहं तथा सतनाम। इन नामों के जाप से शब्द खुलता है। धुन सुनाई देती है। जिस के सहारे आत्मा सतलोक में जाकर निराकार सतपुरूष में लीन हो जाती है। जैसे समुन्द्र में बूंद मिल जाती है। सर्व उपलब्धी भी शरीर अर्थात् पिण्ड (घट) में ही मानते हैं।

"राधा स्वामी पंथ की संक्षिप्त जानकारी''

राधा स्वामी पंथ का प्रवर्तक श्री हजूर शिवदयाल जी महाराज को माना जाता है जिनका जन्म आगरा शहर की मुहल्ला पन्ना गली में श्री सेठ दिलवाली सिंह जी के घर माता महामाया जी की पवित्र कोख से 25 अगस्त 1818 (सम्वत् 1875 भादव बदी अष्टमी के दिन) को हुआ। स्वामी शिवदयाल जी महाराज के माता-पिता जी श्री तुलसी साहेब हाथरस वाले सन्त जी के भक्त थे। जो उनके घर पर आते रहते थे। जो उस तुलसी दास गोसांई वाली आत्मा थी जिसने पहले श्री रामचरित्र मानस अर्थात रामायण को लिखा था(यह विवरण घट रामायण भाग पहला के पहले लिखे इनके जीवन चरित्र में है) श्री तुलसी साहेब जी हाथरस वाले का कोई गुरू नहीं था।

इसी तुलसी साहेब हाथरस वाले के वचन श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी पंथ के प्रथम सन्त) सुना करते थे। परन्तु श्री शिवदयाल जी ने भी कोई गुरू धारण नहीं किया था। {उपरोक्त विवरण पुस्तक''सार वचन राधा स्वामी'' नजम यानि छन्द-बन्द भूमिका पृष्ठ क-ख पर तथा पुस्तक ''सार वचन राधास्वामी (वार्तिक) भूमिका पृष्ठ I-II1पर है।}

श्री शिवदयाल जी स्वयं ही छः वर्ष की आयु में हठयोग क्रिया करके, बन्द कमरे में सुरत-शब्द का अभ्यास किया करते थे। दो-दो, तीन-तीन दिन तक बाहर नहीं निकलते थे। इस प्रकार लगभग पंद्रह वर्ष तक करते रहे। संवत् 1917 (सन् 1860) को 42 वर्ष की आयु में पहला सत्संग किया। श्री शिवदयाल जी का विवाह भक्तमति नारायणी देवी से हुआ जिसे बाद में ''राधा'' कहने लगे थे।

प्रमाणः- पुस्तक ''उपदेश राधा स्वामी(प्रकाशक- एस. एल. सौंधी, सैक्रेटरी राधा स्वामी सत्संग ब्यास जि. अमृतसर, प्रांत पंजाब) पृष्ठ 30-31 तथा पुस्तक''जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह'' लेखक संत कृपाल सिंह पृष्ठ 56 पर है।

''वचन आखिरी'' जो संवत् 1935 (1878) को शरीर छोड़ते समय श्री शिवदयाल जी ने अपने मुख कमल से उच्चारण किए।

वचन आखिरी सं. 5 में लिखा है कि अन्त समय में सर्व संगत से कहा था कि मेरे बाद ''राधा जी'' (नारायणी देवी) को मेरे समान समझना (राधा श्री शिवदयाल जी की पत्नी थी)

वचन आखिरी सं. 9-10 में कहा है कि गृहस्थी औरतों के लिए राधा जी मेरा उतराधिकारी है। वे राधा जी के दर्शन व पूजा करें। साधुओं के लिए सनमुख दास जी को ठहराया।

वचन आखिरी सं. 12 में अपने भाई प्रताप सिंह से कहा है कि आप बाग में सत्संग करो और कराओ।

वचन आखिरी सं. 14 में कहा है कि मेरा मत तो सतनाम और अनामी का था और राधा स्वामी मत तो सालगराम का चलाया हुआ है। मेरा है ही नहीं, इसे भी चलने देना। सतसंग जारी रहे और सतसंग पहले से बढ़कर होगा।

उपरोक्त विवरण पुस्तक ''सार वचन राधास्वामी'' नजम यानि छन्द-बन्द की भूमिका पृष्ठ I से ढ तक लिखा है।

विशेष विचारः- उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि (1) श्री शिवदयाल जी का कोई गुरू नहीं था।

(2) श्री शिवदयाल जी मनमाना आचरण (पूजा) करते थे। हठ योग द्वारा बन्द कमरे में दो-तीन दिन तक बैठे रहते थे। जो सन्त मत के विरूद्ध है, क्योंकि सन्त मत तो सहज मार्ग है। जो साधना श्री शिवदयाल जी करते थे उसे जनसाधारण नहीं कर सकता।

(3) उपरोक्त विवरण वचन आखिरी से यह भी प्रमाणित हुआ कि श्री शिवदयाल जी ने श्री जयमल सिंह जी महाराज (जिन्होंने राधास्वामी व्यास डेरा नाम से पंथ पंजाब में चलाया) को नाम दान करने का आदेश नहीं दिया, न श्री सालिगराम जी को नामदान करने का आदेश दिया। यदि नाम दान करने का आदेश दिया होता तो अवश्य आखिरी वचनों में वर्णन होता। राधास्वामी पंथ की पुस्तकों में लिखा है कि वक्त गुरु के बिना जीव मुक्त नहीं हो सकता। कृप्या विचार करें कि श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) तथा श्री जयमल सिंह जी (डेरा बाबा व्यास) तथा उनके अनुयाईयों श्री सावन सिंह जी तथा श्री कृपाल सिंह जी तथा सच्चा सौदा सिरसा के प्रवर्त्तक श्री खेमामल जी उर्फ बिलोचिस्तानी शाह मस्ताना जी जो श्री सावन सिंह जी राधास्वामी के शिष्य हैं। जिन्हें श्री सावन सिंह जी ने कोई नामदान करने का आदेश नहीं दिया। क्या होगा, क्योंकि मुखिया (श्री शिवयाल जी) ही वक्त गुरु रहित थे ?

(4) राधा स्वामी पंथ श्री शिवदयाल जी का चलाया हुआ नहीं हैः-

वचन आखिरी सं. 14 में स्पष्ट है कि स्वामी जी महाराज ने कहा है कि मेरा मत तो सतनाम और अनामी का है। राधा स्वामी पंथ सालगराम जी का चलाया

हुआ है। श्री शिवदयाल ने स्पष्ट संकेत किया है'' बुद्धिमान व्यक्ति को संकेत ही होता है।''

शंका (1) एक श्रद्धालु ने शंका व्यक्त की :- वचन आखिरी सं. 14 में यह भी तो लिखा है कि राधा स्वामी मत सालगराम का चलाया हुआ है। इसे भी चलने देना।

शंका समाधानः- आपके दृष्टिकोण से राधा स्वामी पंथ को चलते रहने का आदेश श्री शिवदयाल जी महाराज का है तो भी राधा स्वामी पंथ के प्रवर्तक श्री सालगराम जी हुए। जिन्होंने वर्तमान में राधा स्वामी नाम से पंथ व आश्रम बनाए हैं। वे श्री सालगराम जी के अनुसार हुए न कि श्री शिवदयाल जी के। क्योंकि श्री शिवदयाल जी ने तो कहा है कि मेरा मत तो सतनाम और अनामी का है राधास्वामी का नहीं है।

वास्तविकता यह है कि :- श्री शिवदयाल जी की धर्मपत्नी श्रीमति नारायणी देवी को राधा कहते थे तथा श्री शिवदयाल जी को राधा का स्वामी (पति) अर्थात राधास्वामी कहने लगे।

उदाहरण जैसेः- भगवान शिव जी को उमा स्वामी भी कहते हैं। उमा (पार्वती) का पति(स्वामी) होने से उमास्वामी नाम श्री शिव जी का ही बोधक है। इसी प्रकार ''राधा स्वामी'' नाम श्री शिव दयाल जी का बोधक है।

श्री सालगराम जी ने श्री शिवदयाल महाराज को पूर्ण परमात्मा मान कर उन्हीं की पूजा का प्रावधान कर दिया तथा नाम जाप भी राधा स्वामी ही दान करने लगा। जिसका प्रमाण पुस्तक सार वचन राधा स्वामी नजम (छन्द-बन्द) में है कि ''राधा स्वामी नाम जो गावे सोई तरे''

अन्य प्रमाण हैः- जिला भिवानी (हरियाणा) गांव दिनोद में श्री ताराचन्द जी महाराज ने यही नाम दान किया है।

प्रश्नः शंका नं. 2 :- स्वामी जी ने यह किसलिए कहा कि यह सालगराम का चलाया हुआ है। इसे भी चलने देना।

उत्तरः शंका समाधानः- स्वामी जी महाराज श्री शिवदयाल जी का अंतिम समय था। उन्होंने देख लिया था कि सालगराम ने मनमुखी मार्ग मेरी आज्ञा के विपरित चला दिया है। मना करने से भी नहीं मानता है। कहीं अधिक जोर देने के कारण यह किसी अन्य नाम से पंथ न चला ले। इसलिए विवश्ता में कहा कि इसे भी कुछ मत कहना, करने दो इस मनमुखी को जो करता है।

उदाहरणः- एक समय श्री नानक जी साहेब अपने शिष्यों के साथ गांव-गांव नगर-नगर में भ्रमण करके सत्संग कर रहे थे। एक गांव में उनको पत्थर मारे तथा अभद्र व्यवहार किया। श्री नानक साहेब ने कहा ''यहीं बसते रहो'' दूसरे गांव में उनका बहुत आदर हुआ तथा भोजन आदि का प्रबन्ध प्रेम व श्रद्धा से किया गया।

चलते समय श्री नानक जी ने कहा ''आप उजड़ जाओ''

शिष्यों ने पूछा है गुरूदेव! आपने शरारती व्यक्तियों को यहीं बसते रहने का आर्शीवाद दिया तथा नेक व्यक्तियों का उजड़ने का श्राप दे दिया, कारण क्या है?

श्री नानक जी ने उत्तर दिया :- जो व्यक्ति नेक नहीं हैं वे एक ही नगर में रहें तो अच्छा है। यदि कहीं अन्य स्थानों पर बसेंगे तो उन्हें भी अपने जैसा बना देगें। जो नेक व्यक्ति है वे किसी अन्य स्थान पर जाकर रहेगें तो अन्य को भी अपने जैसा नेक बनाएगें। इसलिए इनको उजड़ने को कहा है।

उपरोक्त उदारहण से स्पष्ट है कि संत का कहने का दृष्टिकोण कुछ अन्य ही होता है। ठीक इसी तरह श्री शिवदयाल जी ने विवश होकर कहा है कि इसे (राधा स्वामी पंथ को) भी चलने देना। नहीं तो वे नहीं कहते कि मेरा मत राधा स्वामी नहीं है मेरा मत तो सतनाम और अनामी का है।

प्रश्नः शंका 3 :- मैंने पुस्तक ''सन्तमत प्रकाश भाग-3'' पढ़ी है उसमें श्री सावन जी महाराज के सत्संग वचन हैं {श्री सावन सिंह जी, श्री जयमल सिंह जी महाराज के शिष्य तथा उत्तराधिकारी डेरा व्यास (पंजाब) हुए है।} पृष्ठ 76 पर लिखा है कि सतनाम या सचखण्ड चौथा लोक है। फिर पृष्ठ नं. 79 पर चार राम का विवरण करते हुए बताया है किः- एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम मन, तीसरा राम ब्रह्म, चौथा राम सतनाम है, यह असली राम है।

''सार वचन वार्तिक'' नामक पुस्तक (भाग-1) जिसके प्रकाशक हैं एस. एल. सौंधी, सैक्रेटरी, राधा स्वामी व्यास डेरा बाबा जयमल सिंह, जि. अमृतसर(पंजाब) है। पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि ''सार वचन वार्तिक'' हजूर स्वामी जी महाराज (श्री शिवदयाल जी)के वचनों का संग्रह जो बाद में पुस्तक के रूप में छपवाया गया तथा सन् 1902 में बाबा जयमल सिंह द्वारा गुरुमुखी लीपी (पंजाबी) में छपवाया।

पृष्ठ सं. 3 पर वचन सं. 4 में लिखा हैः- (भाग-1) (ज्यों का त्यों लेख)

(4) अब समझना चाहिए की राधा स्वामी पद सबसे ऊंचा मुकाम है और यही नाम कुल मालिक और सच्चे साहिब, और सच्चे खुदा का है और इस मुकाम से दो स्थान नीचे सतनाम का मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सारशब्द और सतशब्द और सतनाम और सतपुरूष करके ब्यान किया है।

पृष्ठ 5 पर वचन सं. 7 में लिखा है (ज्यों का त्यों लेख)

ऊपर जिकर हुआ है कि सतनाम स्थान जिसको सतलोक और सच्चखण्ड भी कहते हैं।*(लेख समाप्त) फिर हमारे को पाँच नाम (ज्योति निरंजन, ओंकार, ररंकार, सोहं तथा सतनाम) दिए हैं। इनमें मन्त्र रूप से सतनाम जाप करने को भी दिया है। मैं बीस वर्ष से इस राधा स्वामी पंथ से जुड़ा हूँ। मैं यह नहीं समझ पाया हूँ कि सतनाम क्या चीज है? सतनाम स्थान है या भगवान है या मन्त्र का*

जाप है या कोई पशु पक्षी है। ऊपर के वचन सं. 7 में लिखा है- सतनाम का स्थान जिसको सतलोक और सच्चखण्ड भी कहते हैं। फिर वचन 4 में लिखा है सारशब्द-सतशब्द-सतपुरूष और सतनाम भी इसी को कहते हैं। फिर वचन सं. 4 में ही एक बार तो लिखा है राधास्वामी पद सबसे ऊंचा मुकाम (स्थान) है। फिर तुरन्त ही लिखा है कि यह नाम सच्चे मालिक का है। जैसे कोई कहे कि दिल्ली बहुत अच्छा स्थान है। इसी को प्रधानमन्त्री भी कहते हैं। इस तरह की दो तरफा बातें अब समझ में आने लगी हैं। जब आप के द्वारा लिखी पुस्तकें ''परमेश्वर का सार संदेश'' तथा ''गहरी नजर गीता में'' तथा आप द्वारा समाचार पत्रों में लिखे लेखों को पढ़कर ध्यान से राधास्वामी पंथ की पुस्तकों को फिर पढ़ा जो पृष्ठ आपने लिखे थे। उन का मिलान किया वे अब समझ में आए। सचमुच हमारे साथ धोखा हो रहा है? नोट :- कृप्या पाठक वृन्द पढ़ें फोटो कापी उपरोक्त पुस्तकों से वचन सं. 4 तथा 7 इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 71-72 पर तथा स्वयं निर्णय करें।

सन्त रामपाल जी महाराज ने सर्व संगत को अवगत कराया कि :- राधास्वामी पंथ वाले सरे आम झूठ बोल रहे हैं कि:- सतनाम स्थान जिसको सतलोक और सच्चखण्ड भी कहते हैं बहुत ऊँचा है और संतों का दरबार है और उसके ऊपर तीन स्थान और हैं जिनको किसी सन्त ने नहीं खोला अब राधास्वामी(श्री शिवदयाल जी) ने खोला है। इन्हीं की पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-1 में प्रथम पृष्ठ पर ही पूज्य कबीर परमेश्वर की अमृत वाणी में एक शब्द लिखा है ''कर नैनों दिदार महल में प्यारा है'' जो 32 कली का है। जिसका अनुवाद श्री सावन सिंह जी महाराज(जो श्री जयमल जी महाराज डेरा व्यास वाले के उतराधिकारी थे) ने अनुवाद किया है। उस शब्द में सर्व स्थानों व लोकों का वर्णन भिन्न-2 है। जो वाणी परमेश्वर कबीर सतपुरूष की राधास्वामी(श्री शिवदयाल जी) के जन्म से भी चार सौ वर्ष पूर्व की लिखी हुई है।

इससे स्पष्ट है कि परमेश्वर कबीर सतपुरूष जी की वाणी को चुरा कर अपनी फोक्ट महिमा बनाई है। जिसकी अब पोल खुल गई है। पुस्तक सारवचन राधास्वामी वार्तिक के पृष्ठ 5 पर वचन 7 से स्पष्ट है कि श्री शिवदयाल जी को ही राधास्वामी कहा गया है। क्योंकि यह पुस्तक ''सारवचन वार्तिक'' की भूमिका में लिखा है कि इस पुस्तक में हजुर जी महाराज शिव दयाल जी के वचनों को संग्रह करके लिखा है। इस वचन 7 में कहा है कि राधास्वामी जी ने भेद खोला है यदि राधास्वामी (श्री शिवदयाल महाराज) का अपना अनुभव होता तो उपरोक्त पुस्तक के फोटो कापी में ऊवा-बाई (कहीं की ईट कहीं का रोड़ा) ज्ञान नहीं बोलते।

शंका समाधान :- वास्तव में ----------

(शेष फिर)

इष्ट वही रख।

सत्तपुरुष सतनाम कहाई।
सत्तलोक निज पाया आई ॥

सचखंड या सतनाम चौथा लोक है और सबके अन्दर है। अगर यह

(पुस्तक संतमत प्रकाश भाग-3 के पृष्ठ 76 की फोटो कॉपी)

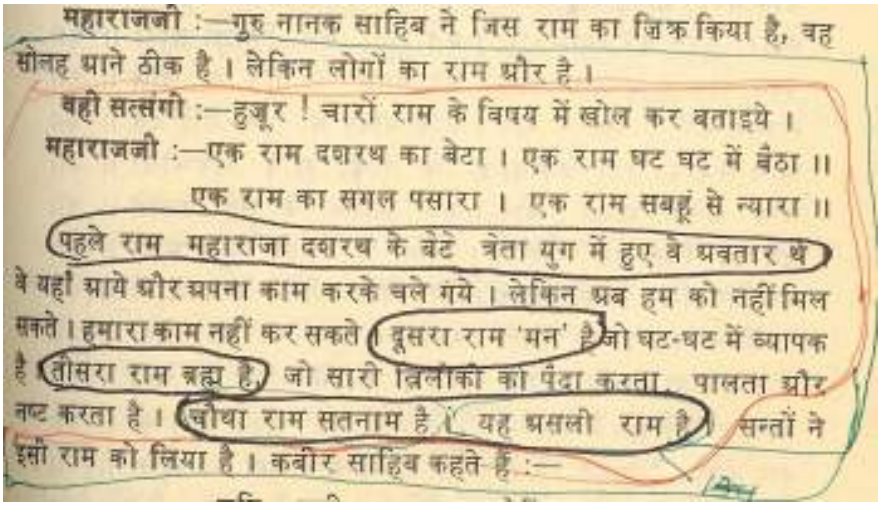
महाराजजी :—गुरु नानक साहिब ने जिस राम का जिक्र किया है, वह सोलह आने ठीक है। लेकिन लोगों का राम और है।

वही सत्संगी :—हुजूर ! चारों राम के विषय में खोल कर बताइये।

महाराजजी :—एक राम दशरथ का बेटा। एक राम घट घट में बैठा ॥
एक राम का सगल पसारा। एक राम सबहूं से न्यारा ॥

पहले राम महाराजा दशरथ के बेटे त्रेता युग में हुए वे अवतार थे वे यहाँ आये और अपना काम करके चले गये। लेकिन अब हम को नहीं मिल सकते। हमारा काम नहीं कर सकते। दूसरा राम 'मन' है जो घट-घट में व्यापक है तीसरा राम ब्रह्म है, जो सारी त्रिलोकी को पैदा करता, पालता और नष्ट करता है। चौथा राम सतनाम है। यह असली राम है। सन्तों ने इसी राम को लिया है। कबीर साहिब कहते हैं :—

(पुस्तक संतमत प्रकाश भाग-3 के पृष्ठ 79 की फोटो कॉपी)

निष्कर्ष :- उपरोक्त फोटो कापी पुस्तक ''संतमत प्रकाश भाग-3 के पृष्ठ 76 व 79 के अंशों की है। जिसके लेखक संत सावन सिंह जी महाराज हैं। उपरोक्त लेखों से पता चलता है कि सन्त सावन सिंह को सन्तमत का कोई ज्ञान नहीं था। उन्हें यही नहीं पता था कि ''सतनाम'' क्या है। पृष्ठ 76 पर सतनाम को सच्चखण्ड (सतलोक) बताया है पृष्ठ 79 पर सतनाम को चौथा राम बताया है तथा पाँच नामों में सतनाम को जाप का मन्त्र बताया है। यही विचार राधास्वामी पंथ के प्रमुख हजूर साहेब शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी जी के हैं जो पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 3 व 5 पर लिखे हैं उन की फोटो कापी कृप्या इसी पुस्तक के पृष्ठ 71-72 पर है।

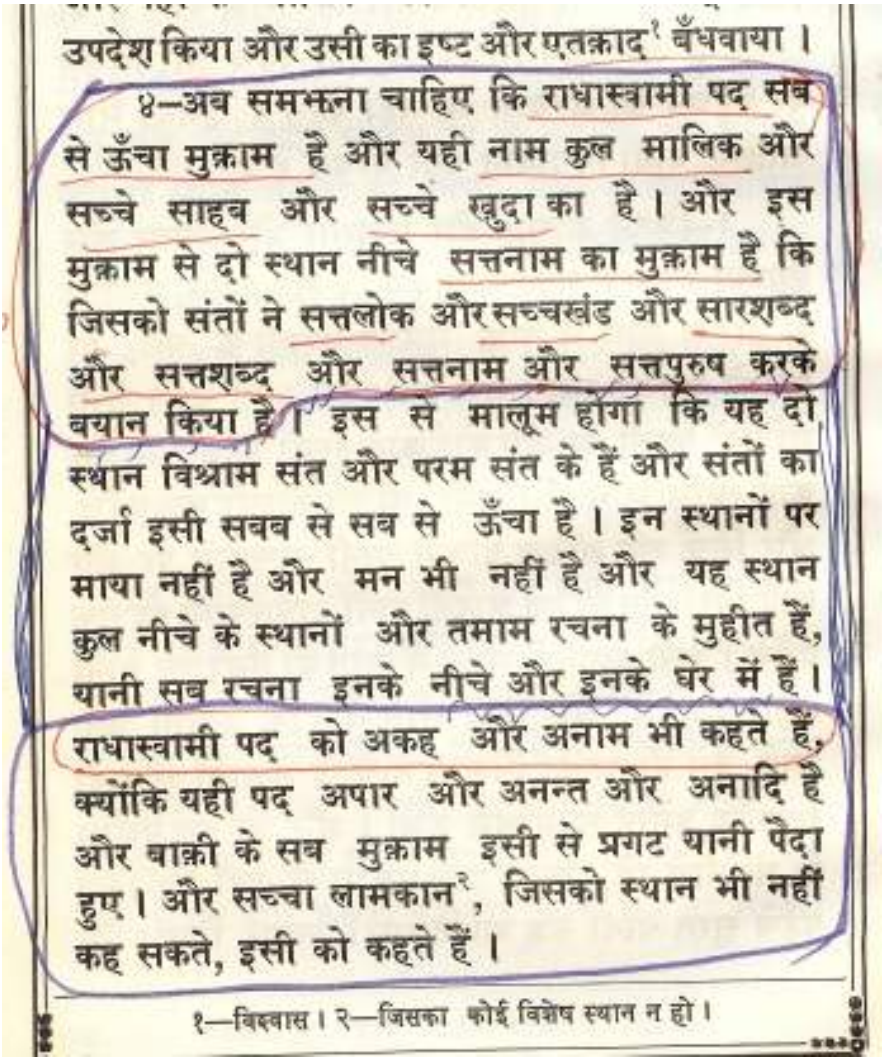

उपदेश किया और उसी का इष्ट और एतक़ाद[1] बँधवाया।

४—अब समझना चाहिए कि राधास्वामी पद सब से ऊँचा मुक़ाम है और यही नाम कुल मालिक और सच्चे साहब और सच्चे ख़ुदा का है। और इस मुक़ाम से दो स्थान नीचे सत्तनाम का मुक़ाम है कि जिसको संतों ने सत्तलोक और सच्चखंड और सारशब्द और सत्तशब्द और सत्तनाम और सत्तपुरुष करके बयान किया है। इस से मालूम होगा कि यह दो स्थान विश्राम संत और परम संत के हैं और संतों का दर्जा इसी सबब से सब से ऊँचा है। इन स्थानों पर माया नहीं है और मन भी नहीं है और यह स्थान कुल नीचे के स्थानों और तमाम रचना के मुहीत हैं, यानी सब रचना इनके नीचे और इनके घेर में हैं। राधास्वामी पद को अकह और अनाम भी कहते हैं, क्योंकि यही पद अपार और अनन्त और अनादि है और बाक़ी के सब मुक़ाम इसी से प्रगट यानी पैदा हुए। और सच्चा लामकान[2], जिसको स्थान भी नहीं कह सकते, इसी को कहते हैं।

१—विश्वास। २—जिसका कोई विशेष स्थान न हो।

(पुस्तक सारवचन राधास्वामी वार्तिक के वचन संख्या 4 पृष्ठ 3 की फोटो कॉपी)

...और दहाका, उस पहुँचने वाले
में बिलकुल नहीं रहती है।

७—ऊपर ज़िक्र हुआ है कि सत्तनाम स्थान, जिसको सत्तलोक और सच्चखंड भी कहते हैं, निहायत ऊँचा है और संतों का दरबार है और उसके ऊपर तीन स्थान और हैं कि जिनको किसी संत ने नहीं खोला[8]। अब परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी दयाल ने जीवों पर निहायत[9] कृपा करके उन मुक़ामों को खोलकर साफ़ साफ़ वर्णन किया है और उनका भेद और कैफ़ियत भी ज़ाहिर की और सबसे ऊँचा और धुर स्थान राधास्वामी पद, जो सब की आदि और भंडार है और परम संतों का निज महल है, उसका भेद दया करके बख़्शा। इसी स्थान से शुरू में सुरत उतरी थी और इसके नीचे जितने स्थान हैं वे सब सुरत के उतार के हैं। और अब

जीवात्मा यानी सुरत या रूह इस जिस्म यानी देह में सहसदलकमल के नीचे ठहरी हुई है और वहाँ से इसकी रोशनी और ताक़त तमाम जिस्म में उतर कर और फैल कर मन और इंद्रियों के द्वारे कुल जिस्मानी[1] और नफ़सानी[2] यानी स्थूल और सूक्ष्म कारज दे रही है।

८—मन दो हैं—एक ब्रह्मांडी और दूसरा पिंडी।

(पुस्तक सारवचन राधास्वामी वार्तिक के पृष्ठ 5 वचन संख्या 7 की फोटो कॉपी)

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

(द्वितीय किस्त)

(12 मार्च 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

भक्त कृष्ण सिंह लाठर ट्रस्टी ने बताया कि सतलोक आश्रम करौंथा में संत गरीबदास जी महाराज के बोध दिवस के उपलक्ष में चल रहे सात दिवसीय सत्संग समारोह में जगत गुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज ने श्रद्धालुओं की शंकाओं का समाधान किया तथा शास्त्रों में छुपी सच्चाई को तथा अन्य संतों व पंथों की पुस्तकों को प्रोजैक्टर के द्वारा पर्दे पर दिखा कर श्रद्धालुओं को सत्य से अवगत कराया।

शंका समाधान :- वास्तव में आदरणीय श्री शिवदयाल जी महाराज (राधास्वामी) जी पूर्व जन्म के भक्ति युक्त पुण्य आत्मा थे। वर्तमान में उन्हें शास्त्र अनुकूल सत्य भक्ति नहीं मिली। जिस कारण से वे अपनी पूर्व जन्म की कमाई के आधार से ही भक्ति के प्यासे थे। 5-6 वर्ष की आयु में बचपन से ही स्वयं समाधिस्थ हो जाते थे। अपनी पूर्व जन्म की कमाई को समाप्त कर गए इसलिए अपनी प्रिय शिष्या बुक्की में प्रवेश हो कर बातें करते थे। श्री प्रताप सिंह जी ने ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज पृष्ठ 54-55-56 वचन 65 में लिखा है कि मैं (प्रताप जी) तथा श्री सालगराम राय साहेब भी कई बार उनसे आदेश प्राप्त करते थे। फिर बुक्की के मुख से स्वामी शिवदयाल जी के प्राप्त आदेश का पालन करते थे। इससे सिद्ध है कि श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) ही अपनी प्रिय शिष्या बुक्की में प्रवेश (प्रकट) होकर बोलते थे। उस आदेश का पालन श्री राय साहब सालगराम जी (जिसने राधास्वामी पंथ चलाया) तथा श्री प्रताप सिंह जी (जो हजूर स्वामी शिवदयाल जी के सगे भाई थे) करते थे। कृप्या देखें फोटो कापी पृष्ठ 54-55-56 वचन सं. 65 (जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज) इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 80 से 83 पर।

उपरोक्त वचन 65 की फोटो कापी में स्पष्ट है कि (1) स्वामी शिवदयाल जी अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश (प्रकट हो) कर भक्तमति बुक्की के मुख द्वारा आदेश देते थे तथा मृत्यु के पश्चात् भी हुक्का व भोग की सेवा अपनी शिष्या बुक्की जी द्वारा ग्रहण करते थे और बुक्की जी में उसकी मृत्यु तक प्रकट (प्रवेश) रहे।

(2) स्वामी शिवदयाल जी हुक्का पीते थे। विचार करें : ऐसी स्थिति तो पितरों तथा प्रेतों की होती है। किसी भी मोक्ष प्राप्त संत के इतिहास में नहीं

मिलती। जब जिस पंथ के मुखिया ही विकार नहीं त्याग सके तो अन्य अनुयाई कैसे विकार रहित हो सकते हैं। इसलिए उस पंथ के भक्ति मार्ग से मोक्ष प्राप्ति की बात कहना ही व्यर्थ है।

जैसे इनवर्टर की बैट्री चार्जड होती है वह सर्व लाभ(पंखा चला देती है, बल्ब जगा देती है) देती रहती है। यदि चार्जर ठीक नहीं होता है तो डीस्चार्ज होने के पश्चात वह लाभ नहीं देती। इसी प्रकार पूर्व जन्म की भक्ति से सम्पन्न हुए भक्त वर्तमान में अच्छे साधक लगते हैं। परन्तु साधना शास्त्रविरूद्ध होने के कारण भविष्य की भक्ति कमाई से वंचित रह जाते हैं। फिर वे पितर या प्रेत बन जाते हैं। फिर अन्य के शरीर में बोलते हैं।

यहाँ सतलोक आश्रम करौंथा में बहुत से व्यक्ति प्रेतों से पीड़ित भी आते हैं। वे नाम प्राप्त करके स्वस्थ हो जाते हैं तथा उनका आत्मकल्याण भी हो जाता है।

प्रश्नः एक श्रद्धालु ने प्रश्न पूछा तथा एक घटना का वर्णन किया। भक्त ने बताया कि मेरा चाचा भला व्यक्ति था। सुबह-शाम दो-दो घण्टे नित्य साधना करता था। मृत्यु के पश्चात वह अपनी पुत्रवधु में बोलता था। जब कोई आपत्ति आती तो उससे पूछते थे और जो समाधान बताता था वह सही हो जाता था। मृत्यु से पूर्व मेरा चाचा हुक्का पीता था तथा चूरमा (घी, खाण्ड, रोटी से बनाया जाता है) खाया करता था। जो उसे बहुत पसंद था। उसकी पुत्र वधू प्रतिदिन उसके कमरे में (जिसमें वह साधना किया करता था) हुक्का भर कर रखती थी तथा चूरमा भी बना कर रखती थी। वह स्वयं हुक्का पीती तथा चूरमा खाती थी। जब कभी नहीं रख पाती थी तो वह उस के मुख से बोलता तथा अन्य को कहता था तुम्हारी ईट से ईट बजा दूंगा। फिर हम डरते ऐसा करते थे। कई बार हमारे घर में होने वाली लाभ-हानि को अपनी पुत्र वधू में प्रकट (प्रवेश) होकर पूर्व ही बता देता था। वह सत्य होती थी। एक ब्राह्मण ने बताया था कि वह पितर बना हुआ है। अब आपसे उपदेश लेने के पश्चात् पीछा छूटा है। मेरा चाचा जी भक्ति भी करता था फिर भी पितर या प्रेत बन गया। क्या कारण है ?

उत्तरः- जो पुण्यात्मा पूर्व जन्म में किसी सन्त की शरण में सत्य साधना किया करता था। वह कुछ भक्ति कमाई तो स्वर्ग में समाप्त कर देता है। शेष पुण्यों के आधार से उसे मानव शरीर प्राप्त हो जाता है। मानव जन्म में भी पूर्व जन्म की कमाई के प्रभाव से भक्ति की प्रेरणा से वह व्यक्ति साधना अवश्य करता है। शास्त्रविधि रहित साधना करने के कारण उसकी पूर्व जन्म की शेष कमाई मानव जन्म में समाप्त हो जाती है। जिस कारण से वह साधक मृत्यु उपरान्त पितर योनि को प्राप्त होता है फिर प्रेत योनि में जाता है। फिर नरक तथा अन्य प्राणियों की योनियां भोगता है। यह प्रभु का विधान है।

इसलिए पवित्र गीता जी अध्याय 16 श्लोक 23 में कहा है कि जो व्यक्ति

शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण(पूजा) करता है। उसे न तो कोई सुख प्राप्त होता है न उसकी गति होती है न कोई सिद्धी अर्थात प्रभु प्राप्ति का कार्य भी सिद्ध नहीं होता।

फिर श्लोक 24 में कहा है कि भक्ति मार्ग की साधना ग्रहण करने तथा त्यागने के लिए शास्त्रों को ही आधार मानें, किसी सन्त के कहने मात्र से विश्वास न करें।

शंका प्रश्न :- आपने प्रथम किस्त में लिखा है कि राधा जी श्री शिवदयाल जी की धर्म पत्नी थी। आपके पास क्या प्रमाण है ? हमें तो बताया गया है कि राधा सुरत को कहते हैं तथा स्वामी शब्द को।

उत्तर :- प्रिय श्रद्धालु आपने वचन संख्या 4 में पढ़ा। जिसमें लिखा है कि राधास्वामी सबसे ऊंचा स्थान है। फिर लिखा है कि यह मालिक का नाम है। फिर लिखा है कि यह ला मकान है अर्थात् स्थान भी नहीं कह सकते। आप ही विचार करें कि इनकी कौनसी बात को सत्य मानोगे। कृप्या पढो प्रमाण पुस्तक ''उपदेश राधास्वामी'', प्रकाशक - एस.एल. सोंधी, सेक्रेटरी राधास्वामी सत्संग, ब्यास, जिला अमृतसर (पंजाब) की फोटो कॉपी पृष्ठ 30-31 तथा यही प्रमाण पुस्तक ''जीवन चरित्र बाबा जयमल सिंह जी'', लेखक श्री कृपाल सिंह जी के पृष्ठ 56 की फोटो कॉपी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 82 पर और स्वयं निर्णय करें सत्य और असत्य का।

शंका प्रश्न : आपने प्रथम किस्त में यह भी लिखा है कि तुलसी साहेब हाथरस वाले ने पांचों नाम काल के कहे हैं। क्या प्रमाण है ? यदि सचमुच ऐसा है तो हमारे साथ धोखा हुआ है।

उत्तर :- प्रिय श्रद्धालु कृप्या पढ़ो फोटो कॉपी घट रामायण पहिला भाग पृष्ठ 27 की। इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 84 पर जिसमें स्पष्ट किया है कि पांचों नाम तो काल के हैं। इन पांचो नामों से भिन्न दो नाम अन्य हैं - 1. आदिनाम जिसे सारनाम भी कहते हैं। वह कोई और मन्त्र है जो उपदेशी को गुरु द्वारा दिया जाता है। दूसरा सतनाम है। (सतनाम कहते हैं सच्चे नाम को। सतनाम-सतनाम जाप करने का नहीं है।) जिन दोनों नामों आदिनाम अर्थात् सारनाम तथा सतनाम (जो दो मंत्रों का योग है) का राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरु अर्थात् सच्चा सौदा पंथ वाले संतों को पता नहीं है। इसलिए तो पुस्तक सार वचन वार्तिक पृष्ठ 3 पर सत्संग वचन 4 में स्वयं श्री शिवदयाल जी महाराज (राधास्वामी) सतनाम, सारशब्द अर्थात् आदिनाम तथा सतशब्द, सतपुरुष, सतलोक को एक बताया है। यह भी कहा है कि राधास्वामी पद सबसे ऊंचा मुकाम (स्थान) है। यही सच्चे मालिक का नाम है। इसे ला मकान जिसका कोई स्थान भी नहीं कह सकते फिर लिखा है इसी को कहते हैं। विचार : प्रिय पाठक स्वयं विचार करें।

क्या यह पूरे संतों के विचार हैं? यह तो ऐसा है जैसे किसी ने जीवन में कभी न कार देखी, न पैट्रोल, न शहर, न सड़क और न ड्राईवर का ज्ञान हो। वह कहे कि मैं कार की सवारी करने शहर में जाता हूँ। वह पैट्रोल व ड्राईवर से सड़क पर चलती है।

फिर कहे कार चलती थोड़े ही है। कार बताऊँ किसे कहते हैं। कार को पैट्रोल, ड्राईवर, सड़क तथा शहर कहा जाता है। वास्तव में कार है ही नहीं जिसे कार कहा जाए। ऐसे विचार हैं श्री शिवदयाल जी महाराज (राधास्वामी) जी के इससे सिद्ध है कि राधास्वामी पंथा तथा धन-धन सतगुरु व सच्चा सौदा पंथ के मुख्य मार्ग दर्शक श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) को भक्ति का क-ख भी ज्ञान नहीं था तो उनके अनुयाईयों का क्या हाल होगा ? जिन की थ्यूरी ही ठीक नहीं है तो प्रैक्टीकल कैसे ठीक हो सकता है? उनका लिखित अनुभव ही कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा है तो साधना भी व्यर्थ है।

हजूर स्वामी जी महाराज श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) का कोई गुरु नहीं था। कृप्या देखें फोटो कॉपी पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज'' लेखक प्रताप सिंह जी के पृष्ठ 19 पर वचन संख्या 31 इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) में पृष्ठ 84 पर।

विशेष विचारः-सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि सर्व प्रमाणों को पढ़ें तथा निष्पक्ष निर्णय करें। सत्य साधना केवल मुझ दास (रामपाल दास) के पास है। वर्तमान में यह साधना किसी के पास नहीं है।

राधास्वामी तथा सच्चा सौदा सिरसा तथा जगमालवाली (धन धन सतगुरू) वाले कहते हैं कि हमारा ज्ञान तो गीता जी तथा वेदों से भी आगे है वेद तथा गीता ज्ञान को हम नहीं मानते।

विचार करें:- पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों का ज्ञान ब्रह्म तक की साधना का श्रेष्ठ ज्ञान है इसे ऐसा जानो जैसे दसवीं कक्षा तक पाठ्यक्रम है। सुक्ष्म वेद(कबीर वाणी) पूर्ण परमात्मा की भक्ति का श्रेष्ठ ज्ञान है। यह ग्यारहवीं कक्षा से एम. ए. तथा पी. एच. डी तक का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का ज्ञान जानो।

जो कोई कहे कि हम तो सीधे एम. ए. की पढाई कर रहे हैं। हम दसवीं तक की पुस्तकों को नहीं मानते। हमें दसवीं कक्षा पास करने की आवश्यकता नहीं है। क्या वह व्यक्ति ठीक विचार व्यक्त कर रहा है ? यही दशा राधास्वामी तथा उसकी शाखाओं (धन धन सतगुरू-सच्चा सौदा) की है। पाठकों को प्रथम किस्त ''राधास्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी'' में श्री शिवदयाल (राधास्वामी) के सत्संग वचनों की फोटो कापी से स्पष्ट हुआ कि उस पंथ में क्या ज्ञान प्रचार किया जा रहा है। उनका अपना ज्ञान सर्व निराधार है। गीता जी तथा वेदों के ज्ञान को स्वीकार नहीं करते सर्व अनुयाईयों का जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। जो थोड़ा बहुत लाभ हवन यज्ञ

(देशी घी की ज्योति जो सर्व घरों में जलाई जाती थी) से होता था। वह भी बंद करवा दी तथा कहते हैं कि हम तो शरीर (पिण्ड) में वास्तविक ज्योति जगाते हैं। बाहर की ज्योति(हवन) की आवश्यकता नहीं।

इस प्रकार के विचार प्रकट करके सर्व अनुयाईयों को पुण्यहीन बना रहे हैं।

प्रिय श्रद्धालु, संतमता स्वयं पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) जी ने चलाया है। श्री तुलसी साहेब हाथरस वाले ने परमेश्वर कबीर जी की वाणी को पढ़ा। फिर अपनी चतुराई से निष्कर्ष निकाल कर सतलोक, आदि लोकों का वर्णन करने लगा। ''घट रामायण'' जो उनके द्वारा लिखी है भाग पहला पृष्ठ सं. 30 पर लिखा है कि शरीर(घट) अर्थात् पिण्ड में ही सोलह द्वार हैं। सर्व वस्तु जो देखी हैं वे पिण्ड(घट) में ही हैं। जबकि पूज्य कबीर परमेश्वर जी शब्द ''कर नैनों दिदार महल में प्यारा है'' की कली सं. 31-32 में कहा है कि यह जो पिण्ड(घट) में दिखाई दे रहा है। यह नकली सतलोक आदि है। यह तो माया ने ऊपर के लोकों की नकल की है, जो झूठी है। हमारा वास्तविक सतलोक आदि तो पिण्ड(घट/शरीर) अर्थात अण्ड से पार अर्थात बाहर है (यह शब्द आपके पंथ की पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-1 में प्रथम पृष्ठ पर लिखा है)।

(जिसे ब्रह्माण्ड भी कहते हैं क्योंकि एक ब्रह्माण्ड का चित्र शरीर अर्थात पिण्ड में है। ब्रह्मण्ड का आकार अण्डे जैसा है। इसलिए ब्रह्मण्ड को ही अण्ड कहा जाता है। जब की राधास्वामी पंथ वाले पिण्ड अलग बताते हैं ब्रह्माण्ड अलग बताते हैं तथा अण्ड भिन्न बताते हैं)

विचारणीय बात है कि श्री तुलसी साहेब हाथरस वाले की आत्मा पूर्व जन्म में वही थी जिसने त्रिलोकी भगवान रामचन्द्र जी की जीवनी ''रामचरित्र मानस'' अर्थात ''रामायण'' रूप में लिखी थी। इसलिए श्री तुलसी दास हाथरस वाले को सतलोक आदि का ज्ञान कैसे हो सकता है ? जबकि उनका कोई वक्त गुरू भी नहीं है। फिर शिवदयाल जी महाराज ने भी श्री तुलसी साहेब हाथरस वालों के विचार सुने हैं। श्री शिवदयाल जी महाराज(जो राधा स्वामी पंथ के मुखिया व प्रवर्तक कहे जाते हैं) का भी कोई गुरू नहीं है। इसलिए इनको भी सतलोक व सतपुरूष का ज्ञान नहीं हो सकता। फिर अन्य सालगराम आदि का तो नम्बर ही कहाँ हो सकता है जिन्होंने राधास्वामी पंथ चलाया है।

राधा स्वामी पंथ में पांच नाम दान करते हैं। जिन पांचों नामों को श्री तुलसीदास हाथरस वाले भी काल के नाम बताते हैं तथा इनसे अतिरिक्त दो सतनाम तथा सतशब्द से ही सतलोक जाने की विधि बताई है जो श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) को ज्ञान नहीं। क्योंकि स्वयं श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) को यही पता नहीं कि सतनाम कोई स्थान है या सतलोक है या सतपुरूष है या सतशब्द है या सारशब्द है। इसलिए सतलोक जाने की विधि से राधास्वामी पंथ

वाले श्रद्धालु पूर्ण रूप से वंचित हैं। श्री शिवदयाल जी के शिष्य श्री जयमल सिंह जी महाराज हैं (जिन्होंने राधास्वामी डेरा ब्यास जि. अमृतसर पंजाब में स्थापित किया है)श्री जयमल सिंह जी के उतराधिकारी श्री सावन सिंह जी महाराज हुए हैं।

श्री सावन सिंह से दो अन्य साखाऐं निकली हैं। एक सच्चा सौदा सिरसा :- श्री खेमामल उर्फ बिलोचिस्तानी शाह मस्ताना जी, जो श्री सावन सिंह जी महाराज के शिष्य थे। जिन्हें श्री सावन सिंह जी द्वारा नाम दान का आदेश नहीं दिया गया। क्योंकि सन्त केवल एक ही उतराधिकारी बनाते हैं जो श्री जगत सिंह को अपना उतराधिकारी श्री सावन जी सिंह जी ने बना दिया था। श्री खेमामल उर्फ शाहमस्ताना जी ने बेगु रोड़, सिरसा में अलग नाम से पंथ स्थापित कर दिया। ज्ञान श्री शिवदयाल जी वाला ही है। वही पांच नाम देते थे। बाद में श्री सतनाम दास जी ने तीन नाम दान करने प्रारम्भ कर दिए जो श्री शाहमस्ताना जी की आज्ञा का उलंघन है। नाम हैं :- 1.) सतपुरुष, 2.) अकाल मूर्त, 3.) शब्द स्वरूपी राम ये तीन नाम किसी सन्त के इतिहास में नहीं है।

दूसरी शाखा : श्री सावन कृपाल रूहानी मिशन दिल्ली में श्री कृपाल सिंह महाराज ने स्थापित किया जो श्री सावन सिंह जी के शिष्य थे। परंतु उत्तराधिकारी न बनाने के कारण स्वयं ही अलग शाखा खोल ली। श्री कृपाल सिंह जी को श्री सावन सिंह जी महाराज की ओर से नामदान का कोई आदेश नहीं था। (क्योंकि संत केवल एक ही उतराधिकारी बनाते हैं।)

तीसरी शाखा : डेरा ब्यास, पंजाब में श्री जगत सिंह महाराज को उत्तराधिकारी बनाया। श्री कृपाल सिंह जी के शिष्य श्री ठाकुर सिंह ने अलग शाखा चलाई। वही पांच नाम ही दान करते हैं जिनको श्री कृपाल सिंह जी महाराज की ओर से नामदान करने का आदेश नहीं था। आगरा से शिवदयाल जी वाली परम्परा से श्री घूरेलाल जी के शिष्य ने ''जय गुरुदेव'' नाम से मथुरा में अन्य पंथ की स्थापना की। श्री घूरेलाल जी वाला मथुरा में जयगुरूदेव पंथ के सन्त भी वही पांच नामदान करते हैं।

नोट :- इससे सिद्ध हुआ कि (1) राधास्वामी पंथ, डेरा ब्यास पंजाब (2) श्री कृपाल सिंह जी वाला राधास्वामी पंथ दिल्ली वाला (3) श्री ठाकुर सिंह जी वाला राधास्वामी पंथ तथा जयगुरुदेव मथुरा में। सर्व शास्त्र विधि अनुसार साधना से वंचित हैं तथा गुरू मर्यादा की धज्जियाँ उड़ाते गए हैं। अपनी-2 मर्जी से नए-2 स्थानों पर शिवदयाल जी वाला कहीं की ईट कहीं का रोड़ा अर्थात मनघड़ंत ज्ञान प्रचार किया है। नामदान भी काल तक के देते हैं। सतनाम, सारनाम, सारशब्द का कोई ज्ञान नहीं जिनके बिना सतलोक वास तथा सतपुरुष की प्राप्ति नहीं हो सकती। करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं के अनमोल जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। यह भी सिद्ध हुआ कि सच्चा सौदा सिरसा तथा धन-धन सतगुरु पंथ जगमाल वाली

जिला सिरसा वाले भी सतलोक तथा सतपुरुष की प्राप्ति की विधि से वंचित हैं। क्योंकि जगमालवाली में मैनेजर साहब नाम से प्रसिद्ध संत जी ने अलग से स्वयं ही पंथ चला लिया जो पूर्ण रूप से सत्य साधना से वंचित है।

आगरा के राधास्वामी पंथ से एक श्री रामसिंह जी अध्यापक के शिष्य श्री ताराचन्द जी ने भिवानी जिले के दिनोद गांव में राधास्वामी पंथ की अलग से स्थापना कर ली। केवल एक नाम ''राधास्वामी'' दान किया जाता है जो पूर्ण रूप से शास्त्र विरुद्ध है। परमात्मा प्राप्ति का नहीं है। यह राधास्वामी नाम तो शिवदयाल जी का जानों जो प्रेत बन कर अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश हुआ। राधा स्वामी नाम का जप तो एक प्रेत का जाप हुआ। अन्य क्रियाएँ भी जैसे कान बंद करके धुन सुनना, आंखे बंद करके हठ योग करना तथा प्रकाश देखना वही है जो संतमत के विरुद्ध है।

कबीर परमेश्वर कहते हैं - ''कोई सतगुरु संत कहावै, जो नैनन अलख लखावै। आँख ना मूंदे, कान ना रूंधै ना अनहद उलझावै। जो सहज समाधी बतावै।।''

मनघड़ंत ज्ञान व शास्त्र विधि रहित साधना बताकर भोले-भाले श्रद्धालुओं के अनमोल जीवन के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। वास्तविक भक्ति विधि सतलोक तथा सतपुरुष प्राप्ति की शास्त्रानुसार मुझ दास (रामपाल दास) के पास उपलब्ध है, कृप्या निःशुल्क तथा अविलम्ब प्राप्त करें तथा अपना मानव जीवन सफल करें। झूठे गुरु को त्याग देने से कोई पाप नहीं होता। जैसे एक वैद्य (डॉक्टर) से ईलाज नहीं हो रहा है तो उसे त्याग कर अन्य वैद्य से ईलाज करवाना हितकर होता है। ऐसे ही शास्त्र विधि विरूद्ध साधना बताने वाले गुरु को त्याग कर पूर्ण संत से उपदेश प्राप्त करना लाभदायक तथा न्याय संगत है।

शेष अगले अंक में ------

उन्होंने यह जवाब दिया कि यह वह दर्शन नहीं है, कि जो मुझ को दो तीन रोज पेश्तर अंतर में हुआ करते थे । तब स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि जा भजन पर ज़ोर दे दर्शन होंगे, तब से फ़िर दर्शन होने लगे । शिब्बो जी आधी रात से सुबह तक और सिपहर से शाम तक भजन करती रहती थीं, ग़रज़ कि दस बारह घंटे भजन में मशग़ूल रहती थीं, और राय साहब से घंटों चरचा करके नसीहत लेती रहती थीं ।

(६५) अब बुक्की जी का कि जो शिब्बो जी की छोटी बहिन थीं थोड़ा सा हाल लिखा जाता है । यह शिब्बो जी से कुछ अर्से बाद स्वामीजी महाराज के चरनों में आई थीं । जब इन्हों ने कुछ दिन सतसंग किया, और बचन स्वामीजी महाराज के सुने और वे बचन हिरदे में समा गये, तब इन के प्रेम की हालत अजीब थी, कि जब स्वामीजी महाराज बचन या अर्थ पोथियों का करते, तब इनकी आँखें सुर्ख़ अंगारा सी हो जाती थीं और आँसू बराबर टपकते रहते थे और बहुत देर तक यानी घंटों उन बचनों का नशा बना रहता था और फ़िर जब स्वामीजी महाराज कथा से फ़ुर्सत पाकर हुक्का पीते थे या अभ्यास का रस लेते हुए या कथा कहने को बैठते थे तो बुक्कीजी महाराज के चरनों का अंगूठा मुंह में रक्खे हुए घंटों चरनामृत का रस लेती रहती थीं । और जब कोई मत्था टेकने के वास्ते हटाना चाहता तो वे चरन नहीं

(पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज (शिवदयाल जी) पृष्ठ 54 की फोटो कॉपी)

छोड़ा चाहती थीं । तब मत्था टेकने वाले से कह दिया जाता था कि तुम दूसरे चरन पर मत्था टेक लो और उस प्यासी को मत हटाओ । और वह बयान किया करती थीं कि मुझे इसमें ऐसा रस आता है कि जैसे कोई दूध पीता है । इनके भजन का यह हाल था कि आठ घंटे नौ घंटे रोज़ भजन किया करती थीं, इन को स्वामीजी महाराज के दर्शनों का पूरा आधार हो गया था और सुरत भी ऊँचे देश में पहुँचती थी । जब स्वामीजी महाराज अंतरध्यान हुए तब बुक्की जी की यह कैफ़ियत हुई कि दिन रात बेहोश पड़ी रहती थीं और दो २ दिन हाजात ज़रूरी[१] को भी रफ़ा करने नहीं जाती थीं और सुरत स्वामीजी महाराज के चरनों में लगी रहती थी । क़रीब डेढ़ महीने के यह हाल रहा, सबको ख़ौफ़ हुआ कि शायद इनकी देह छूट जावे। तब स्वामीजी महाराज ने इनको दर्शन दिये और फ़रमाया कि जिस तरह तुम सेवा पेश्तर किया करती थीं उसी तरह से करो । और फिर उसी रोज़ से बुक्की जी भोग भी तइयार करती थीं, और मेरे पत्नी गली के मकान पर पहिले दस्तूर के माफ़िक़ पलँग बिछाती और हुक़्क़ा भरती थीं । वह पलँग अभी तक बिछा रहता है । ग़रज़ कि जिस तरह से कि पेश्तर सेवा किया करती थीं उसी तरह से कुल काम करने लगीं । और स्वामीजी महाराज उनको ध्यान के समय में प्रगट दर्शन देते थे, और कुल सेवा उसी तरह पर क़बूल फ़रमाते थे, जैसा कि

१ –दिशा फ़राग़त ।

(पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज (शिवदयाल जी) पृष्ठ 55 की फोटो कॉपी)

अंतरध्यान होने के पेश्तर करते थे । बुक्की जी को महाराज उनके अख़ीर दम तक प्रगट रहे, यहाँ तक कि जिस किसी को जब कोई बात स्वामीजी महाराज से अर्ज़ करनी होती थी तो वे बुक्की जी के ज़रीये से दरियाफ़्त कर लिया करते थे, यानी बुक्कीजी अभ्यास के समय स्वामीजी महाराज को प्रगट करके हम-कलाम[1] हुआ करती थीं । इस नियाज़मन्द को भी जब कभी भीड़ के समय पर घबराहट होती थी, और किसी तरह से अक़्ल काम नहीं देती थी, तब बुक्की जी के ज़रिये से स्वामीजी महाराज का हुक्म लिया करता था, और जैसा हुक्म होता था उसी के मुवाफ़िक़ बंदा कारबंद होता था और इसी तरह पर राय साहब ने भी मौज की थी कि बुक्की जी के ज़रीये से दो चार बार हुक्म हासिल किये थे ।।

(६६) जब बुक्की जी का देहान्त होने को था, तब एक सेवक ने कुछ गुफ़्तगू नाउम्मेदी की सी की, और अपने दिल से बड़ा अफ़सोस ज़ाहिर किया । तब बुक्की जी ने यह फ़रमाया कि—

हम नहिं मरें मरे संसारा । हमको मिला जिलावना हारा ।।

और उस वक्त हँसीं और तालियाँ बजाईं, और फिर देह छोड़ दी ।।

(६७) बुक्की जी और बिश्नो जी यह दोनों ख़ास कर स्वामीजी महाराज की सेवा में रहती थीं । बिश्नो जी

१ — बातचीत ।

(पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज (शिवदयाल जी) पृष्ठ 56 की फोटो कॉपी)

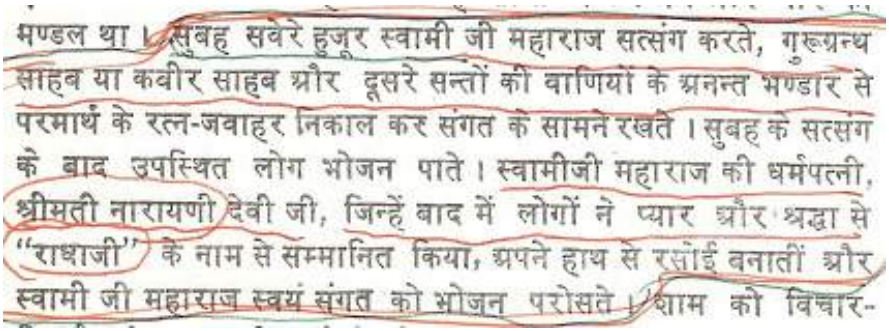

मण्डल था। सुबह सवेरे हुजूर स्वामी जी महाराज सत्संग करते, गुरुग्रन्थ साहब या कबीर साहब और दूसरे सन्तों की वाणियों के अनन्त भण्डार से परमार्थ के रत्न-जवाहर निकाल कर संगत के सामने रखते। सुबह के सत्संग के बाद उपस्थित लोग भोजन पाते। स्वामीजी महाराज की धर्मपत्नी, श्रीमती नारायणी देवी जी, जिन्हें बाद में लोगों ने प्यार और श्रद्धा से "राधाजी" के नाम से सम्मानित किया, अपने हाथ से रसोई बनातीं और स्वामी जी महाराज स्वयं संगत को भोजन परोसते। शाम को विचार-

(पुस्तक ''जीवन चरित्र बाबा जयमल सिंह जी'' पृष्ठ 56 की फोटो कॉपी)

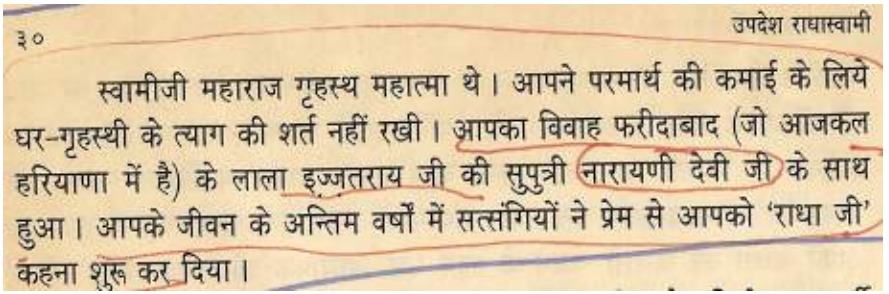

३० उपदेश राधास्वामी

स्वामीजी महाराज गृहस्थ महात्मा थे। आपने परमार्थ की कमाई के लिये घर-गृहस्थी के त्याग की शर्त नहीं रखी। आपका विवाह फरीदाबाद (जो आजकल हरियाणा में है) के लाला इज्जतराय जी की सुपुत्री नारायणी देवी जी के साथ हुआ। आपके जीवन के अन्तिम वर्षों में सत्संगियों ने प्रेम से आपको 'राधा जी' कहना शुरू कर दिया।

(पुस्तक ''उपदेश राधास्वामी'' पृष्ठ 30 की फोटो कॉपी)

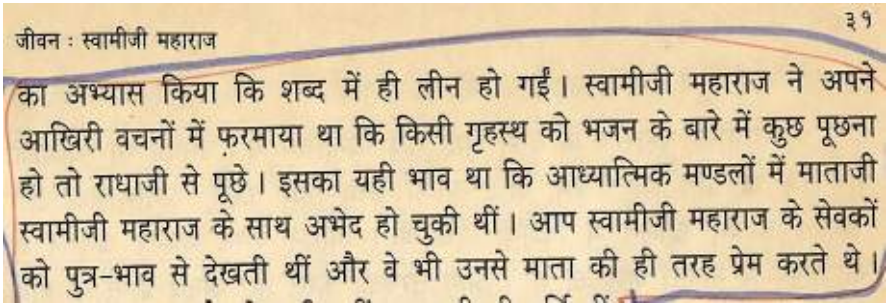

जीवन : स्वामीजी महाराज ३१

का अभ्यास किया कि शब्द में ही लीन हो गईं। स्वामीजी महाराज ने अपने आखिरी वचनों में फ़रमाया था कि किसी गृहस्थ को भजन के बारे में कुछ पूछना हो तो राधाजी से पूछे। इसका यही भाव था कि आध्यात्मिक मण्डलों में माताजी स्वामीजी महाराज के साथ अभेद हो चुकी थीं। आप स्वामीजी महाराज के सेवकों को पुत्र-भाव से देखती थीं और वे भी उनसे माता की ही तरह प्रेम करते थे।

(पुस्तक ''उपदेश राधास्वामी'' पृष्ठ 31 की फोटो कॉपी)

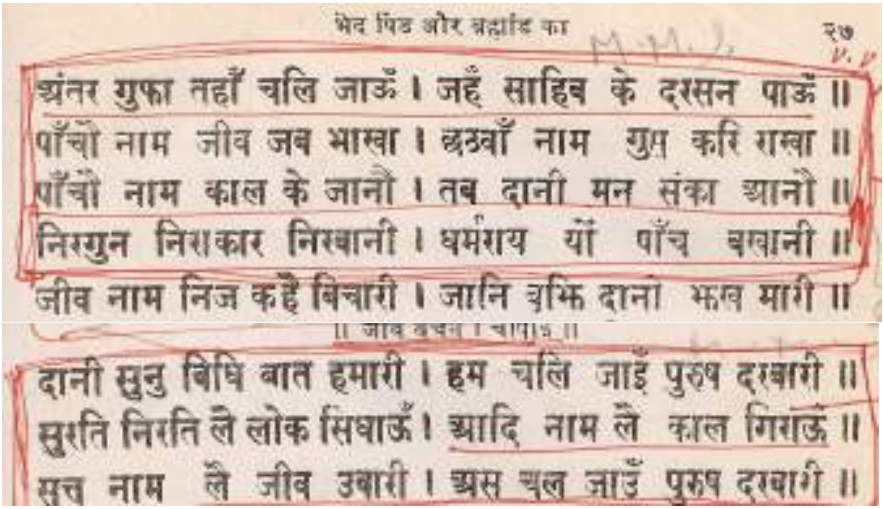

भेद पिंड और ब्रह्मांड का २७

अंतर गुफा तहाँ चलि जाऊँ । जहँ साहिब के दरसन पाऊँ ॥
पाँचो नाम जीव जब भाखा । छठवाँ नाम गुप्त करि राखा ॥
पाँचो नाम काल के जानो । तब दानी मन संका आनो ॥
निरगुन निराकार निरबानी । धर्मराय यों पाँच बखानी ॥
जीव नाम निज कहै बिचारी । जानि शब्द दानो भय भागी ॥

॥ जीव वचन । चौपाई ॥

दानी सुनु बिधि बात हमारी । हम चलि जाइँ पुरुष दरबारी ॥
सुरति निरति लै लोक सिधाऊँ । आदि नाम लै काल गिराऊँ ॥
सत्त नाम लै जीव उबारी । अस चल जाउँ पुरुष दरबारी ॥

(पुस्तक ''घट रामायण'' पहला भाग के पृष्ठ 27 की फोटो कॉपी)

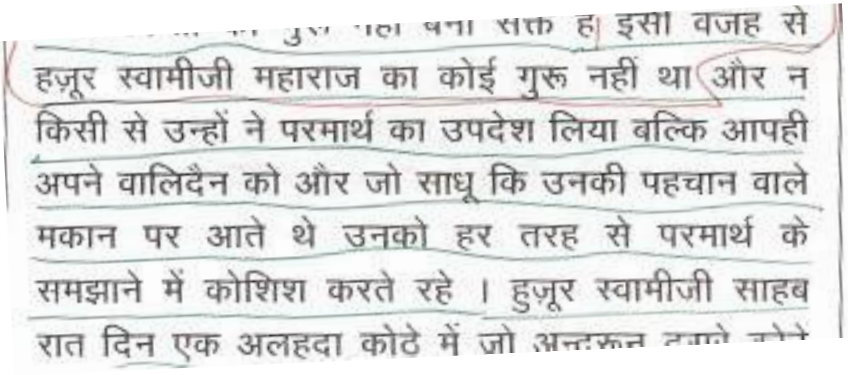

... गुरु नहीं बना सक्त है इसी वजह से हज़ूर स्वामीजी महाराज का कोई गुरू नहीं था और न किसी से उन्हों ने परमार्थ का उपदेश लिया बल्कि आपही अपने वालिदैन को और जो साधू कि उनकी पहचान वाले मकान पर आते थे उनको हर तरह से परमार्थ के समझाने में कोशिश करते रहे । हुज़ूर स्वामीजी साहब रात दिन एक अलहदा कोठे में जो ...

(पुस्तक ''जीवन चिरत्र हजूर स्वामी जी महाराज'' लेखक प्रताप सिंह जी के पृष्ठ 19 पर वचन सं. 31की फोटो कापी)

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

(तीसरी किस्त)

(26 मार्च 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

(गतांक से आगे-----)

प्रश्नः- आपके द्वारा लिखे लेख समाचार पत्र दैनिक पंजाब केसरी में पढ़े। ''राधास्वामी पंथ की कहानी उन्हीं की जुबानी'' किस्त 1 तथा 2 को पढ कर मालूम हुआ कि सचमुच राधास्वामी पंथ के सन्तों से तो दूसरी कक्षा का विद्यार्थी भी कुछ अच्छा लिख सकता है। परन्तु राधास्वामी पंथ व इसकी शाखाओं (धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा आदि) में लाखों की संख्या में अनुयाई हैं। क्या सर्व मूर्ख हैं? इस संस्था में बहुत शिक्षित वर्ग भी है जिसमें आई.ए.एस., आई.पी.एस. तथा वकील व मजिस्ट्रेट भी जुड़े हैं। क्या उन्होंने नहीं पढ़ा होगा? अब उन पुस्तकों को पढ़ते हैं तो रोना आता है मेरे 20 वर्ष व्यर्थ कर दिये अब मैं क्या करूं ? घर का रहा न घाट का मेरी आयु 65 वर्ष है। अब सन्तों से विश्वास उठ गया।

उत्तरः- प्रिय श्रद्धालु जो शिक्षित वर्ग व उच्च अधिकारी गण राधास्वामी पंथ तथा उस की शाखाओं (धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा, जय गुरूदेव) से जुड़े हैं। वे मूर्ख नहीं हैं अपितु प्रभु प्रेमी व नेक हैं। जो पढ़ाई पढ़ कर वे उच्चधिकारी बने हैं। उस पढ़ाई से अध्यात्मिक ज्ञान का कोई मेल नहीं है। जैसे वैद्य(डाक्टर) के पास रोगी जाता है वह उस वैद्य के द्वारा दी गई दवाई के विषय में नहीं सोचता कि यह ठीक है या गलत। वैद्य के पास चाहे आई.ए.एस. चाहे पी.एच.डी. वाला भी जाए तो भी डाक्टर की दवाई को नहीं परख सकता। डाक्टर(वैद्य) वाली पढ़ाई भिन्न होती है। उस को अन्य वैद्य(डाक्टर) ही परख सकता है।

जो अब मुझ दास(रामपाल दास) द्वारा परखी गई है जो साधना विधि अन्य सन्तों तथा पन्थों द्वारा भक्त समाज को बताई गई है वह शास्त्रविरूद्ध है, इसलिए व्यर्थ है। अतः आप सर्व को चाहिए कि पुनर् विचार करें तथा स्वयं शास्त्रों को मुझ दास द्वारा बताए तरीके से समझें और तुलना करें। आसानी से निष्कर्ष निकल जाएगा। रही बात लाखों की संख्या में जमघट होने की यह सब एक दुसरे की देखा देखी लगे हैं।

जैसे यह दास(रामपाल दास) श्री हनुमान जी की साधना करता था। राजस्थान प्रांत के चूरू जिला के गाँव सालासर में प्रतिवर्ष पूजा के लिए जाता था। वहाँ देखता था कि कोई राजस्थान प्रांत का मंत्री पूजा के लिए आया होता, कोई

हरियाणा प्रान्त का मंत्री पूजा के लिए आया होता था। लाखों की संख्या में अन्य श्रद्धालु पूजा के लिए जाते थे। उन बड़े व्यक्तियों को तथा अधिक समूह को देख कर संतुष्ट हो जाता था कि जब यहाँ पर इतने बड़े-बड़े मंत्री जी तथा अन्य सेठ लोग आते हैं तो हमारी साधना सही है।

परन्तु जब पूर्ण सन्त मिला सर्व शास्त्रों का अध्ययन किया तो यह दास स्तब्ध रह गया। पूरे पवित्र हिन्दु समाज को अपने सद्ग्रन्थों (पवित्र गीता जी, पवित्र चारों वेदों तथा पवित्र पुराण) के विपरीत ज्ञान प्राप्त है तथा साधना भी शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण(पूजा) कर रहे हैं। अभी तक पवित्र हिन्दु समाज को यह नहीं पता था कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी के माता पिता कौन है। इन्हें अजरो-अमर-मृत्युंज्य-सर्व लोकों के रचनहार कुल के कर्त्ता ही बताया जाता रहा है। जबकि पवित्र देवी महापुराण(तीसरे स्कंद) तथा पवित्र शिवपुराण में रूद्र संहिता 6 तथा 7 अध्याय में स्पष्ट लिखा है कि सदाशिव अर्थात कालरूपी ब्रह्म तो इनका पिता है तथा दुर्गा(प्रकृति) इनकी माता है। तीनों ने स्वयं कहा है कि हमारा तो आविर्भाव अर्थात जन्म तथा तिरोभाव अर्थात मृत्यु होती है। हम अविनाशी नहीं हैं। यह भी लिखा है कि रजगुण ब्रह्मा जी हैं, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी हैं। पवित्र गीता जी अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में तीनों भगवानों(रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) की पूजा करने वालों को मूर्ख कहा है। गीता अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 में स्पष्ट लिखा हैः- प्रकृति(दुर्गा) तो सर्व प्राणियों की माता है और मैं ब्रह्म(काल/क्षर पुरूष) सर्व का पिता हूँ। प्रकृति(दुर्गा) से तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) उत्पन्न हुए हैं। ये तीनों प्रभु जीवात्मा को शरीर में बांधते हैं अर्थात मुक्त नहीं होने देते।

नोटः- पवित्र गीता जी पवित्र चारों वेदों का सारांश है इसलिए इस में सांकेतिक शब्दों का प्रयोग भी अधिक है।

यदि बहु संख्या या उच्च शिक्षायुक्त व्यक्तियों या उच्च पद को देख कर ही सत्य साधना का प्रमाण माना जाए तो पवित्र हिन्दु समाज की जनसंख्या लगभग सत्तर करोड़ है तथा प्रधानमन्त्री तथा जज तक हिन्दु भी लोक वेद अनुसार अर्थात शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण(पूजा) कर रहे हैं। क्योंकि अध्यात्मिक ज्ञान सर्व शिक्षाओं से भिन्न है। इसलिए अध्यात्मिक ज्ञान को समझने के लिए शास्त्रों को ही आधार माना जाता है जो आज भी साक्षी हैं। पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों में भी सतलोक का विवरण विस्तृत वर्णित है परन्तु कोई नहीं समझ सका। केवल सतलोक जाने तथा सतपुरूष प्राप्ति की विधि पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों में वर्णित नहीं है। वह परमेश्वर कबीर साहेब जी ने अपनी अमृतवाणी में बताई है फिर भी सारशब्द गुप्त रखा था जो अब मुझ को बताया है।

इसलिए पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में स्पष्ट किया है कि शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण(पूजा) करना व्यर्थ है तथा सत्य साधना जो करनी चाहिए तथा असत्य साधना जो त्यागनी चाहिए उसके लिए शास्त्रों को ही आधार माने। किसी सन्त विशेष के कहने मात्र से ही साधना स्वीकार न करें। पवित्र हिन्दु समाज के श्रद्धालुओं को समझाना अति आसान है क्योंकि वे पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों तथा पवित्र पुराणों को सत्य मानते हैं। अब प्रमाण देखकर मुझ दास(रामपाल दास) द्वारा बताए भक्ति मार्ग को स्वीकार कर रहे हैं। परन्तु राधास्वामी पंथ तथा इसी की शाखाओं (धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा-जय गुरूदेव-ठाकुर सिंह वाला समूह) के सन्तों ने तो अनुयाई श्रद्धालुओं को कहीं का नहीं छोड़ा। सन्तजन कहते हैं कि हम गीता तथा वेदों को नहीं मानते क्योंकि हमारा ज्ञान तो इन से ऊपर का है। कबीर साहेब जी कहते हैंः-

''कच्ची सरसौं पेली, खल भया न तेल''

प्रिय श्रद्धालु कृप्या पढ़ें राधास्वामी पंथ तथा उसकी शाखाओं(धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा जय गुरूदेव मथुरा वाले-कृपाल सिंह तथा ठाकुर सिंह आदि) के प्रथम परम सन्त परमधनी हजूर स्वामी शिवदयाल जी(राधास्वामी जी) का ज्ञान जो पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों से भी बढ़कर है या कोरा अज्ञान है।

राधास्वामी कोई स्थान है या भगवान है या सतपुरूष है या नाम मन्त्र है या कोई सन्त है? कोरा अज्ञान है :-

कृप्या पढ़ें पुस्तक ''सार वचन राधास्वामी वार्तिक'' पहला भाग तथा दूसरा भाग (प्रकाशकः- एस.एल. सौंधी सैक्रेटरी राधास्वामी सत्संग ब्यास, डेरा बाबा जैमल सिंह, जिला-अमृतसर पंजाब) के भूमिका पृष्ठ 1 तथा वचन सं. 1, 3, 4, 12, 28, 52, 67- भाग-2 के वचन 31 की फोटो कॉपी। इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) पृष्ठ 94 से 96 पर।

पुस्तक सार वचन वार्तिक की भूमिका में लिखा हैः- यह पुस्तक हजूर स्वामी जी महाराज(शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी) जी के सत्संग वचनों का संग्रह है जो उनके मुख कमल से निकले हैं। जिनको बाद में पुस्तक सारवचन वार्तिक के रूप में छपवाया गया। जिन का शुभ नाम सेठ शिवदयाल सिंह जी था माता जी का नाम महामाया जी तथा पिता जी का नाम सेठ दिलवाली सिंह जी था। फोटो कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 94 पर।

वचन 1 में लिखा हैः- जीवात्मा अर्थात सुरत को रूह कहते हैं यह सबसे ऊँचे स्थान यानी सतनाम और राधास्वामी पद से उतरी है(इसमें राधास्वामी तथा सतनाम को स्थान कहा है) फोटो कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 94 पर।

वचन 3 में कहा है कि पाँचवीं मंजिल सतनाम तथा आठवीं मंजिल राधास्वामी

(इसमें भी दोनों को स्थान कहा है) फोटो कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 94 पर।

वचन 4 में राधास्वामी पद को सबसे ऊँचा स्थान(मुकाम) भी कहा है तथा भगवान भी कहा है। फिर अन्त की पंक्तियों में कहा है कि राधास्वामी ला मकान है जिसे स्थान भी नहीं कह सकते फिर लिखा है इसी को कहते हैं। इसी वचन 4 में सतनाम के विषय में लिखा है राधास्वामी स्थान से दो स्थान छोड़कर सतनाम का स्थान है। फिर सतनाम और सतशब्द और सारशब्द और सतलोक और सतपुरूष को एक बताया है(भगवान-स्थान-नाम-शब्द एक कर दिया)। फोटो कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 94 पर।

इस वचन सं. 12 में एक बार लिखा है सतनाम का स्थान सतलोक प्रकाशवान है महानाद-सतशब्द-सतपुरूष और आदि पुरूष भी इसी सतलोक को कहते हैं। फिर कहा है कि सन्त इसी पुरूष का रूप यानी अवतार है। यह स्थान दयाल पुरूष का है। इस स्थान में अत्यधिक आत्माऐं अर्थात भक्त भिन्न-2 द्वीपों में बसते हैं तथा सतपुरूष का दर्शन आन्नद लेते हैं। साधना सतपुरूष राधास्वामी की बताई है। कृप्या पढ़ें फोटो कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 95 पर।

विचार करें:-राधास्वामी पंथ का सिद्धान्त है कि सतपुरूष निराकार है। सतलोक में सतपुरूष साकार नहीं है। केवल प्रकाश ही प्रकाश है। सतलोक में जाने वाली रूह परमात्मा में ऐसे समा जाती हैं जैसे समुद्र में बूंद। यहाँ वचन 12 में सतपुरूष साकार लिखा है कहा है कि आत्माऐं सतलोक में सतपुरूष का दर्शन करती हैं। यह भी लिखा है कि सन्त इसी सतलोक स्थान के अवतार हैं। फिर सतपुरूष राधास्वामी एक लिख दिया।

कृप्या प्रेमी पाठक स्वयं निर्णय करें क्या श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) को प्रभु प्राप्ति हुई होगी ? जिसको यही पता नहीं सतनाम क्या है? सतपुरूष किसे कहते हैं? सारशब्द क्या है? सारनाम क्या है?

सतनाम तो नाम जाप है, जो दो मन्त्र का है। जिसमें एक ॐ मन्त्र व दूसरा तत्(जो सांकेतिक है यह दास केवल उपदेशी को बताएगा) मन्त्र है। सतलोक वह स्थान है जहाँ पूर्ण परमात्मा रहता है। सतपुरूष अर्थात् पूर्ण परमात्मा साकार है। सारनाम भी जाप करने का है यह भी साँकेतिक है।

वचन 28 में सतपुरूष तथा राधास्वामी को एक बताया है तथा इसे सन्त रूप में प्रकट होकर जीव उद्धार करने वाला बताया है। कृप्या पढ़ें फोटो कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 95 पर।

वचन 52 में लिखा:- उस सन्त रूप में आए सतपुरूष राधास्वामी के बताए मार्ग से साधक ''स्थान सतपुरूष राधास्वामी'' में पहुँच जाता है। कृप्या पढ़ें फोटो

कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 96 पर।

विचार करें:- वाह रे गीता तथा वेदों से श्रेष्ठ ज्ञान देने वालो ! ऐसे वचन तो कोई भांग के नशे में बोल सकता है। ऐसे विचार परमात्मा प्राप्त सन्त के नहीं हो सकते। ये विचार राधास्वामी पंथ के सर्वोपरी महात्मा श्री शिवदयाल जी जिसे ही राधास्वामी नाम से जाना जाता था के हैं।

वचन 67 तथा 31 का निष्कर्ष :- वचन 67 में लिखा है कि सच्चा मालिक सतपुरूष राधास्वामी है जो पारब्रह्म से भी परे है अर्थात बड़ा है। फिर वचन 31 में कहा है कि वह पारब्रह्म परमात्मा सन्त-सतगुरू रूप धार कर जीवों को सतमार्ग बताता है। यहाँ पर सतपुरूष राधास्वामी तथा पारब्रह्म एक बताया है, वचन 67 में पारब्रह्म से भी परे अर्थात् बड़ा कहा है। फिर वचन 67 में ही कहा है कि वह सतपुरूष राधास्वामी सन्त रूप में आया उसी ने ''राधास्वामी'' नाम प्रकट किया जो इस नाम ''राधास्वामी'' का जाप राधास्वामी की शरण लेकर जाप करता है या धुन सुनता है उसका उद्धार हो जाता है। वह (वचन 52 के अनुसार) ''स्थान सतपुरूष राधास्वामी'' में पहुँच जाता है। कृप्या पढ़ें फोटो कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 96 पर।

विचार करें:- उपरोक्त विवरण में कहीं तो राधास्वामी नाम जाप का कहा है। कहीं सन्त, कहीं स्थान कहा है, कहीं कुल मालिक कहा है। फिर यह भी कहा है कि राधास्वामी ने राधास्वामी नाम प्रकट किया। राधास्वामी का जाप करने वाला स्थान सतपुरुष राधास्वामी में पहुंच जाता है। यह तो ऐसा विवरण है जैसे कोई कहे कि रोहतक शहर अपने स्थान रोहतक से संत बन कर आया है, रोहतक शहर ने अपना रोहतक नाम प्रकट किया जो रोहतक की शरण होकर रोहतक नाम जाप करे वह स्थान संत रोहतक में पहुंच जाएगा।

वाह रे सन्त मत का नाश करने वाले विद्वानों! खूब मूर्ख बनाया भोले श्रद्धालुओं को। फिर कहा है कि राधास्वामी नाम का चाहे जाप करले, चाहे धुन सुन ले, एक जैसा ही लाभ होता है।

विचार करें:- सतनाम अर्थात सच्चे नाम (निज नाम अर्थात वास्तविक नाम है जो दो अक्षर/मन्त्र का होता है) का जाप तो मजदूरी करके नाम की कमाई करनी होती है तथा धुन तो नाम के जाप से प्रकट होती है जो नाम की मजूदरी का फल है।

यदि कोई कहे, चाहे तो मजदूरी करले, चाहे प्राप्त धन को देखता रहे वह अवश्य धनी हो जाएगा। क्या ऐसे विचार समझदार व्यक्ति के हो सकते हैं?

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) को कुछ भी ज्ञान नहीं था। उसी के विचारों पर आधारित धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा, श्री कृपाल सिंह दिल्ली वाले श्री ठाकुर सिंह वाले तथा जयगुरूदेव मथुरा वाला पंथों

के अनुयाई हैं। जो सर्व अपने मानव जीवन को व्यर्थ कर रहे हैं।

निष्कर्ष :- वास्तव में श्री शिवदयाल जी की धर्मपत्नी का नाम नारायणी देवी था। उसी का उर्फ नाम ''राधा'' था। राधा जी का पति (स्वामी) होने के कारण श्री शिवदयाल जी को राधास्वामी कहने लगे। जैसे उमा (पार्वती) का पति (स्वामी) होने के कारण भगवान शिव उमास्वामी कहलाते हैं। जहाँ भी शिवपुराण में उमास्वामी शब्द आता है तो श्री शिव जी का बोध होता है। इसी प्रकार राधास्वामी भी श्री शिवदयाल का ही बोधक है। श्री सालगराम जी ने श्री शिवदयाल (राधास्वामी) को पूर्ण परमात्मा मान कर इन्हीं के नाम से पंथ चला दिया। इस पुस्तक सार वचन वार्तिक में कोरे गपौड़ लिखे हैं। पाठकों ने किस्त-2 में पढ़ा कि श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) हुक्का पीते थे तथा हठयोग साधना करते थे जो सन्त मत के विरूद्ध है। शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करते थे। श्री शिवदयाल जी का कोई वक्त गुरू नहीं था। राधास्वामी पंथ का परम सिद्धान्त है कि वक्त गुरू बिना मोक्ष कभी नहीं हो सकता। जिस कारण श्री शिवदयाल जी मोक्ष से वंचित रह गए। इसलिए मृत्यु पश्चात् अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश करके पितरों व भूतों की तरह बोल कर आदेश देते थे तथा बुक्की के माध्यम से प्रतिदिन हुक्का ग्रहण करते थे अर्थात बुक्की जी के मुख से हुक्का पीते थे तथा खाने की भी सेवा पहले की तरह बुक्की के मुख द्वारा ग्रहण करते थे। बुक्की के शरीर में उसके अन्तिम स्वांस तक प्रवेश रहे।

यह विवरण वचन सं. 65, 31 जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज आगरा से प्रकाशित में है जो आपने दूसरी किस्त में इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 73-74 पर तथा फोटो कापी पृष्ठ 80.84 पर पढ़ा था।

विचार करें:- क्या ये मोक्ष प्राप्त प्राणी के लक्षण हो सकते हैं? श्री सालगराम जी जैसे मनमुखी व्यक्तियों ने एक अधूरे ज्ञान युक्त व्यक्ति को परम धनी परम पुरूष बताकर लाखों भोले-भाले श्रद्धालुओं को गुमराह कर दिया। तीन-तीन पीढ़ियों को नरकगामी करा दिया। राधास्वामी पंथ, धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा पंथ तथा शाखाओं का सिद्धांत है कि परमात्मा एक है। वह सतलोक में तो निराकार है, केवल प्रकाश है। वही परमात्मा जब संसार में मनुष्य रूप में आता है तो जीव उद्धार करता है।

विचार करें : श्री सावन सिंह के बाद तीन परमात्मा हो गए। शाहमस्ताना जी बेगु रोड़ सिरसा में, श्री कृपाल सिंह जी दिल्ली में तथा श्री जगत सिंह जी और उनके बाद श्री चरण सिंह जी ब्यास में। तीनों समकालीन थे प्रत्येक श्रद्धालु अपने गुरुजी को मनुष्य रूप में परमात्मा आया मानता है यह ज्ञान गीता जी से श्रेष्ठ है या कोरा अज्ञान है। कृप्या श्रद्धालु स्वयं निर्णय करें। श्री शिवदयाल (राधास्वामी) जी तथा अन्य अनुयाईयों (धन धन सतगुरू-सच्चा सौदा-जयगुरूदेव, कृपाल सिंह

वाला पंथ-ठाकुर सिंह वाला पंथ) को सतलोक तथा सतपुरूष की भक्ति का क-ख का भी ज्ञान नहीं। श्रद्धालु इन्हें पूर्ण सन्त-पूर्ण धनी मान कर आश्रित हैं। कृप्या अब शिक्षित समाज है स्वयं निर्णय कर सकता है। उस के लिए कृपा दो पुस्तकें :-

1. ''गहरी नजर गीता में'' जिसमें 552 पृष्ठ है तथा

2. ''परमेश्वर का सार संदेश'' जिसमें 770 पृष्ठ है मुफ्त प्राप्त करें दोनों पुस्तकों का डाक खर्च केवल 35 रूपये पुस्तक लेते समय डाकिए को देने होगें, फोन द्वारा अपना पता लिखवाएं पुस्तकें आपके पास पहुँच जाऐंगी।

सन्त रामपाल जी महाराज की ज्ञान युक्त पुस्तकों में आपको अनमोल ज्ञान पढ़ने को मिलेगा।

शिक्षित वर्ग से प्रार्थना है कि सत्य को देखकर आत्म कल्याण का मार्ग ग्रहण करें तथा मुझ दास को प्रभु कबीर जी का भेजा हुआ कुत्ता जानों जो आप भक्ति धन के धनियों को जगाने के लिए भौंक रहा है। आप के मानव जीवन रूपी धन की हानि हो रही है। भक्त समाज कुम्भकर्ण वाली नींद सो रहा है न जाने कब जागेगा।

तम्बाखु सेवन या शराब-मांस आदि सेवन प्रभु भक्ति को साथ-2 नष्ट करता है। जैसे देशी घी का हलवा बनाकर उसमें बालु रेत भी डाल दिया जाए तो वह हलवा खराब हो गया। इसी प्रकार साधना करके तम्बाखु-शराब-मांस सेवन भक्ति नाशक है।

यदि उपरोक्त प्रमाणों को पढ़ कर भी व्यक्ति सावधान नहीं होता तो वह भक्ति चाहने वाला नहीं है।

कुछ श्रद्धालु इस उपकार के कार्य को निन्दा कहते हैं। यह तो ऐसा प्रयत्न जानों जैसे सरकार ने एक समय पाँच सौ रूपये के नकली नोट पकड़े थे। नकली तथा असली नोटों को समाचार पत्रों में छापकर जनता को नकली-असली की पहचान बताई थी। सरकार निन्दा नहीं कर रही थी। अपितु महा उपकार किया था। यही प्रयत्न मुझ दास (रामपाल दास) का है। दूसरे शब्दों में मुझ दास का ऐसा प्रयत्न जानों जैसे एक रेल की पटरी वर्षा से टूट गई थी। एक स्कूल के 12 वर्ष के बच्चे ने देखा कि पटरी टूटी पड़ी है। रेल गाड़ी आ रही है । न जाने कितने यात्रियों की जानें जाएगीं। लड़के ने अपना कमीज निकाला, जोर-2 से हिलाते हुए संकेत करने लगा। बुद्धिमान चालक था। उसने बच्चे की गतिविधि को समझा तथा रेल गाड़ी को रोका तथा बच्चे से कारण पूछा तो पता चला कि भयंकर दुर्घटना टल गई है। ठीक यह दास(रामपाल दास) आप जी को संकेत कर रहा है। जिस राम नाम की गाड़ी में आप बैठे हैं वह ठीक रास्ते नही जा रही है। आपका जीवन व्यर्थ हो रहा है। सर्व सन्तों तथा पंथों के संचालकों(ड्राईवरस) से प्रार्थना है कृपा अपने पंथ की पुस्तकों को जो शास्त्र अनुसार ज्ञानयुक्त नहीं हैं। उस शास्त्रविरूद्ध ज्ञान को(टूटी पटरी को) उतर कर उसे देख लें। आप की लापरवाही से लाखों व्यक्तियों का जीवन नष्ट हो जाएगा। आप स्वयं भी उपदेश मुझ दास से प्राप्त करें तथा अनुयाईयों को भी समझाऐं। नहीं तो आप महापाप के पात्र बनोगे। पहले जो

भी हो चुका है उसे भूलें, नए सिरे से ज्ञान तथा उपदेश प्राप्त करके अपना मानव जीवन सफल बनाऐं। मुझे अपना दास या छोटा-बड़ा भाई जानकर अविलम्ब दिक्षा प्राप्त करें। आज पृथ्वी पर पूर्ण ज्ञान पूर्ण परमात्मा(सतपुरूष) का मुझ दास के पास है जो पूर्ण परमात्मा कविर्देव जी(कबीर प्रभु जी) तथा मेरे पूज्य गुरूदेव की असीम कृपा से प्राप्त है। जैसे माननीय प्रधान मन्त्री या माननीय राष्ट्रपति जी को भी कोई रोग हो जाता है तो अपने कर्मचारी डाक्टर से उपचार कराते हैं। उनका मान नहीं घटता अपितु जीवन रक्षा होती है। ठीक इसी प्रकार आप सर्व को(श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव सहित) जन्म-मृत्यु का रोग लगा है। इसकी एक मात्र औषधी(सत्यनाम तथा सारनाम) मुझ दास के पास है। अपना उपचार(जन्म-मरण के रोग का निवारण) करवाऐं। राधास्वामी पंथ की पुस्तक संतमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261-262 पर नानक साहेब जी की वाणी तथा परमेश्वर कबीर जी की वाणी का प्रमाण दे कर कहा है कि -

सोई गुरु पूरा कहावै, दोय अख्खर का भेद बतावै। एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर जावै।। जे तू पढया पंडित बीना, दूय अक्षर दूय नावां।

कबीर जी की वाणी – कह कबीर अक्षर दुय भाख। होयगा खसम त लेयगा राख।।

उपरोक्त वाणी में स्पष्ट है कि मुक्ति के लिए दोय अक्षर का नाम जाप है। वह सतनाम मंत्र है। सतनाम में दो अक्षर हैं एक ऊँ + तत् जो साँकेतिक है। केवल उपदेशी को बताया जाएगा। फिर सारनाम भी गुरुदेव द्वारा दिया जाता है। ओम मंत्र ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का ऋण मुक्त करा कर छुटाएगा तथा तत् नाम परमात्मा तक पहुँचाएगा और सारनाम परमात्मा मिलाएगा। उपरोक्त वाणी में यह भी स्पष्ट है कि पूरा गुरु ही यह दो अक्षर का भेद बताएगा।

विचार करें : यह मंत्र राधास्वामी पंथ व उसकी शाखाओं के पास नहीं है।

कुछेक श्रद्धालु कहते हैं कि गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? उन श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जैसे एक डाक्टर(वैद्य) से उपचार नहीं होता है तो दूसरा डाक्टर बदलने में लाभ होता है हानि नहीं होती। ठीक इसी प्रकार गुरू को जानो। इसलिए शास्त्रविधि विरूद्ध ज्ञान वाले गुरू को त्यागकर पूर्ण गुरू धारण करना हितकर है। पाप नहीं पूण्य है। कुछ श्रद्धालु संकोच करते हैं कि हम तीस वर्ष से राधास्वामी पंथ से जुड़े हैं अब तीस वर्ष की साधना का क्या होगा? अब कैसे छोड़ें? उन श्रद्धालुओं से निवेदन हैं कि विचार करें कि आपको किसी शहर में जाना है, तीस किलोमीटर जाने के बाद पता चले कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं तो तुरंत मुड़ जाना चाहिए। नहीं तो मंजिल दूर होती जाएगी। फिर भी कोई कहे कि हम तो तीस किलोमीटर सफर तय कर चुके हैं, अब कैसे छोड़ें इस रास्ते को? यह विचार तो बालक के या शराबी के हो सकते हैं। समझदार तो तुरंत मुड़ जाएगा। इसलिए उस साधना को तुरंत त्यागकर वास्तविक शास्त्रविधि अनुसार साधना ग्रहण करें।

कबीर परमेश्वर कहते हैं किः-

झूठे गुरू को त्यागन में तनिक न लावे वार। द्वार न पावै शब्द का भटकै द्वार–द्वार।

कृप्या निशंकोच अधुरे गुरू को त्याग दें तथा पूर्ण सन्त की शरण ग्रहण करें।

दासन दास रामपाल दास

प्रश्नः- पूर्ण सन्त की पहचान कैसे करें? जहाँ भी जाते हैं वह सन्त पूर्ण लगता है।

उत्तरः----------

-------(शेष अगले अंक में)

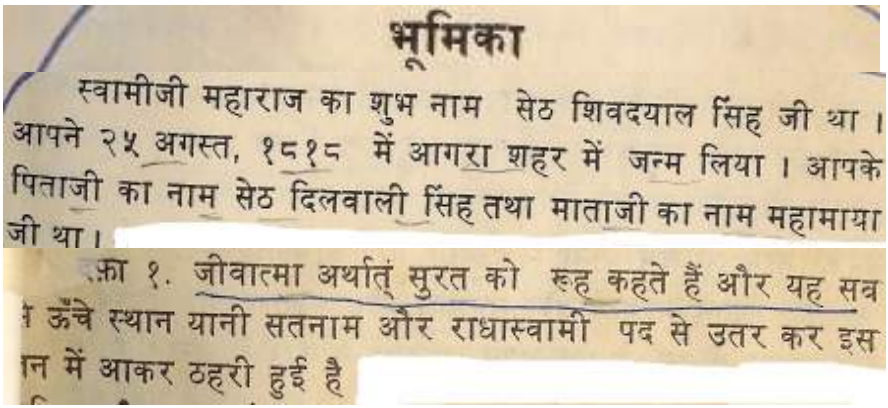

भूमिका

स्वामीजी महाराज का शुभ नाम सेठ शिवदयाल सिंह जी था। आपने २५ अगस्त, १८१८ में आगरा शहर में जन्म लिया। आपके पिताजी का नाम सेठ दिलवाली सिंह तथा माताजी का नाम महामाया जी था।

क़ा १. जीवात्मा अर्थात् सुरत को रूह कहते हैं और यह सब ऊँचे स्थान यानी सतनाम और राधास्वामी पद से उतर कर इस न में आकर ठहरी हुई है

पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 1 वचन - 1 की फोटो कॉपी

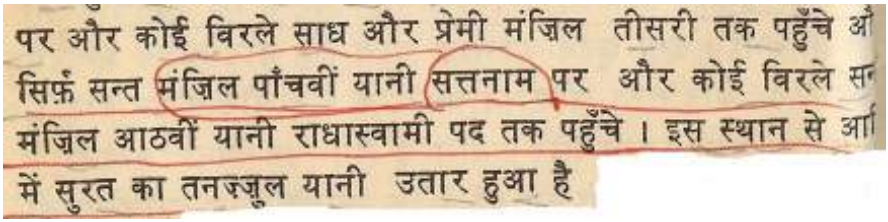

पर और कोई विरले साध और प्रेमी मंज़िल तीसरी तक पहुँचे औ सिर्फ़ सन्त मंज़िल पाँचवीं यानी सत्तनाम पर और कोई विरले स मंज़िल आठवीं यानी राधास्वामी पद तक पहुँचे। इस स्थान से आ में सुरत का तनज़्ज़ुल यानी उतार हुआ है

पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 2 वचन - 3 की फोटो कॉपी

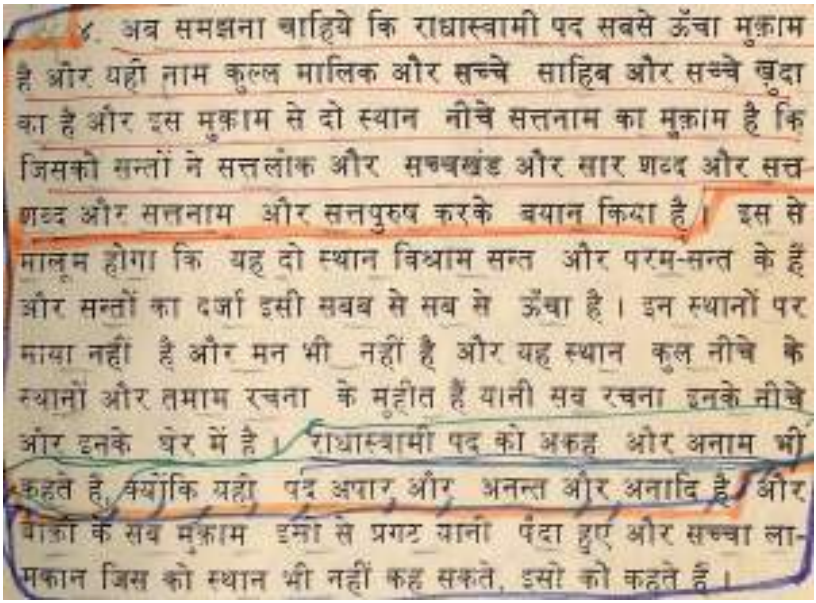

४. अब समझना चाहिये कि राधास्वामी पद सबसे ऊँचा मुक़ाम है और यही नाम कुल मालिक और सच्चे साहिब और सच्चे ख़ुदा का है और इस मुक़ाम से दो स्थान नीचे सत्तनाम का मुक़ाम है कि जिसको सन्तों ने सत्तलोक और सचखंड और सार शब्द और सत्त शब्द और सत्तनाम और सत्तपुरुष करके बयान किया है। इस से मालूम होगा कि यह दो स्थान विश्राम सन्त और परम-सन्त के हैं और सन्तों का दर्जा इसी सबब से सब से ऊँचा है। इन स्थानों पर माया नहीं है और मन भी नहीं है और यह स्थान कुल नीचे के स्थानों और तमाम रचना के मुहीत हैं यानी सब रचना इनके नीचे और इनके घेर में है। राधास्वामी पद को अकह और अनाम भी कहते हैं, क्योंकि यही पद अपार और अनन्त और अनादि है और बाक़ी के सब मुक़ाम इसी से प्रगट यानी पैदा हुए और सच्चा ला-मकान जिस को स्थान भी नहीं कह सकते, इसी को कहते हैं।

पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 3 वचन - 4 की फोटो कॉपी

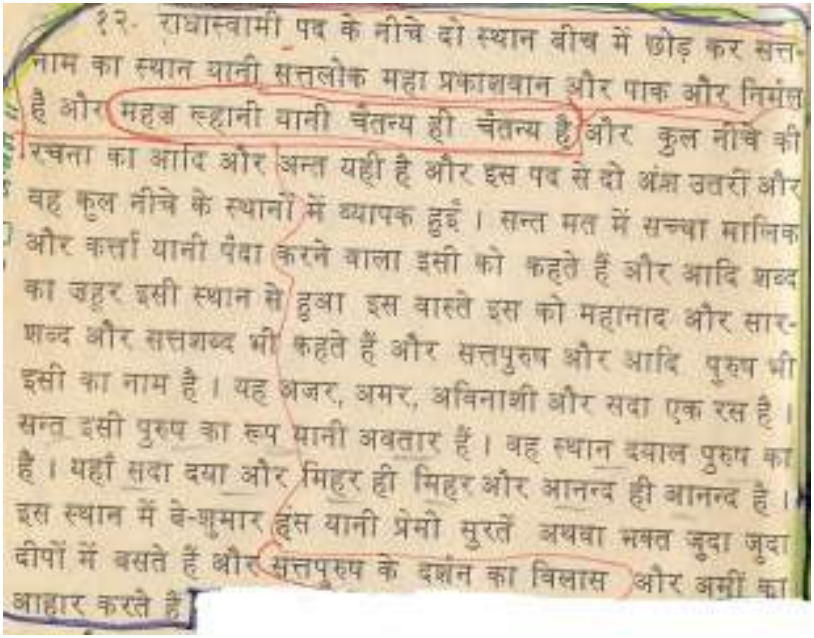

१२. राधास्वामी पद के नीचे दो स्थान बीच में छोड़ कर सत्तनाम का स्थान यानी सत्तलोक महा प्रकाशवान और पाक और निर्मल है और महज़ रूहानी यानी चैतन्य ही चैतन्य है और कुल नीचे की रचना का आदि और अन्त यहीं है और इस पद से दो अंश उतरीं और वह कुल नीचे के स्थानों में व्यापक हुईं। सन्त मत में सच्चा मालिक और कर्ता यानी पैदा करने वाला इसी को कहते हैं और आदि शब्द का ज़हूर इसी स्थान से हुआ इस वास्ते इस को महानाद और सारशब्द और सत्तशब्द भी कहते हैं और सत्तपुरुष और आदि पुरुष भी इसी का नाम है। यह अजर, अमर, अविनाशी और सदा एक रस है। सन्त इसी पुरुष का रूप यानी अवतार हैं। वह स्थान दयाल पुरुष का है। यहाँ सदा दया और मिहर ही मिहर और आनन्द ही आनन्द है। इस स्थान में बे-शुमार हंस यानी प्रेमी सुरतें अथवा भक्त जुदा जुदा दीपों में बसते हैं और सत्तपुरुष के दर्शन का विलास और अमी का आहार करते हैं

पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 8 वचन - 12 की फोटो कॉपी

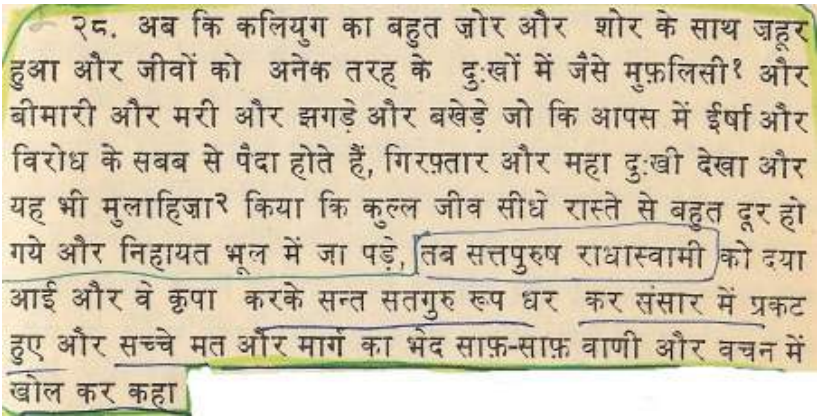

२८. अब कि कलियुग का बहुत ज़ोर और शोर के साथ ज़हूर हुआ और जीवों को अनेक तरह के दुःखों में जैसे मुफ़लिसी[1] और बीमारी और मरी और झगड़े और बखेड़े जो कि आपस में ईर्षा और विरोध के सबब से पैदा होते हैं, गिरफ़्तार और महा दुःखी देखा और यह भी मुलाहिज़ा[2] किया कि कुल्ल जीव सीधे रास्ते से बहुत दूर हो गये और निहायत भूल में जा पड़े, तब सत्तपुरुष राधास्वामी को दया आई और वे कृपा करके सन्त सतगुरु रूप धर कर संसार में प्रकट हुए और सच्चे मत और मार्ग का भेद साफ़-साफ़ वाणी और वचन में खोल कर कहा

पुस्तक सार वचन राधास्वामी वार्तिक पृष्ठ 15 वचन 28 की फोटो कॉपी

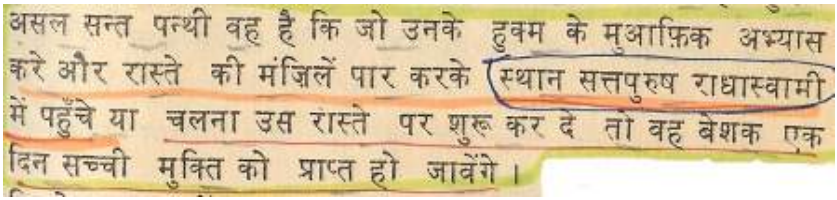
असल सन्त पन्थी वह है कि जो उनके हुक्म के मुआफ़िक अभ्यास करे और रास्ते की मंज़िलें पार करके स्थान सत्तपुरुष राधास्वामी में पहुँचे या चलना उस रास्ते पर शुरू कर दे तो वह बेशक एक दिन सच्ची मुक्ति को प्राप्त हो जावेंगे।

पुस्तक सारवचन वार्तिक पृष्ठ 31 वचन 52 की फोटो कॉपी

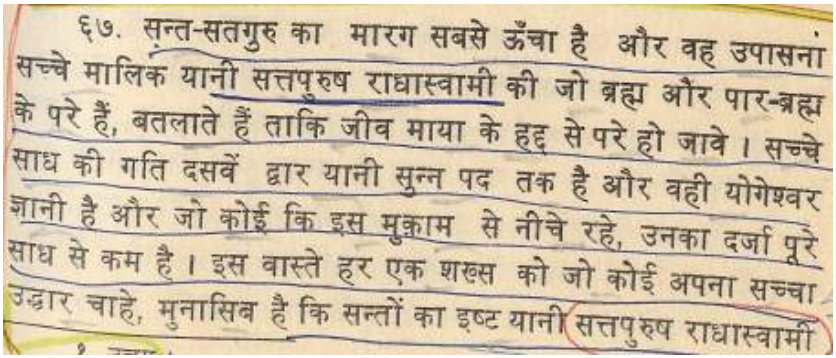
६७. सन्त-सतगुरु का मारग सबसे ऊँचा है और वह उपासना सच्चे मालिक यानी सत्तपुरुष राधास्वामी की जो ब्रह्म और पार-ब्रह्म के परे हैं, बतलाते हैं ताकि जीव माया के हद्द से परे हो जावे। सच्चे साध की गति दसवें द्वार यानी सुन्न पद तक है और वही योगेश्वर ज्ञानी है और जो कोई कि इस मुक़ाम से नीचे रहे, उनका दर्जा पूरे साध से कम है। इस वास्ते हर एक शख़्स को जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहे, मुनासिब है कि सन्तों का इष्ट यानी सत्तपुरुष राधास्वामी

''पुस्तक सार वचन वार्तिक पृष्ठ 45-46 वचन 67 की फोटो कॉपी''

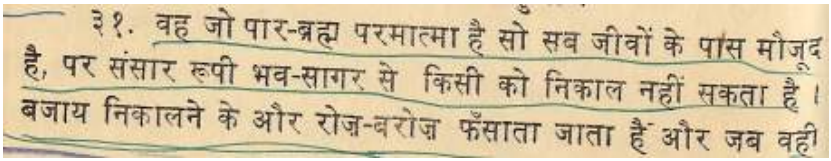
३१. वह जो पार-ब्रह्म परमात्मा है सो सब जीवों के पास मौजूद है, पर संसार रूपी भव-सागर से किसी को निकाल नहीं सकता है। बजाय निकालने के और रोज़-बरोज़ फँसाता जाता है और जब वही

''पुस्तक सार वचन वार्तिक भाग 2 पृष्ठ 54-55 वचन 31 की फोटो कॉपी''

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

(चौथी किस्त)

(8 अप्रैल 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

(---- गतांक से आगे)

प्रश्नः- पूर्ण सन्त की पहचान कैसे करें? जिस भी सन्त के विचार सुनते हैं वह पूर्ण लगता है।

राधास्वामी पंथ में तो हमें बताया है कि सतलोक अर्थात सतनाम में सतपुरूष निराकार है। केवल प्रकाश ही प्रकाश है। आत्मा का सतपुरूष में विलीन हो जाना ही मोक्ष है। धुन सुनना ही सतपुरूष प्राप्ति है। मैंने 4 से 8 घण्टे तक अभ्यास कर के देख लिया कोई मण्डल दिखाई नहीं दिए। जो प्रकाश व धुन कुछ दिन बाद दिखने तथा सुनने लगा था वही चल रहा है, कान भी खराब हो गए, पैरों में भी कमजोरी आ गई है। आप के द्वारा लिखी पुस्तकों ''परमेश्वर का सार संदेश'' तथा ''गहरी नजर गीता में'' ने तो आँखें खोल दी हैं। समाचार पत्रों में आप के लेख पढ़ने से लग रहा है कि शायद परमात्मा फिर से निकट आ रहा है। कृप्या पूर्ण सन्त की प्रमाणित पहचान बताऐं।

उत्तरः- पूर्ण सन्त की पहचान(1):- राधास्वामी पंथ के प्रथम सन्त माने जाने वाले श्री शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी जी को ज्ञान ही नहीं कि सतनाम क्या वस्तु है। श्री शिव दयाल जी तथा उनके अनुयाई मोक्ष प्राप्त ही नहीं कर सकते। वे सतनाम को स्थान भी कहते हैं कहीं पर कहा है सतनाम हमारी जाति है, कहीं पर सतपुरूष कहते हैं, कहीं पर सारनाम कहते हैं, कहीं पर सतलोक कहते हैं तथा पांच नाम सतनाम का जाप भी है। जब की सतनाम दो अक्षर का मन्त्र है। जिसमें एक ओम् तथा दूसरा तत्(जो सांकेतिक है केवल उपदेशी को ही बताया जाएगा) तथा इस दो अक्षर के सतनाम की कमाई करने के पश्चात् एक मन्त्र और दिया जाएगा जो सारनाम (सत शब्द) कहा जाता है।

कृप्या पढ़ें पूर्ण सन्त की पहचान :- *जैसे राजा का संविधान है। ऐसे ही पवित्र शास्त्र परमात्मा का संविधान है जो किसी व्यक्ति विशेष का बनाया हुआ नहीं है। स्वयं प्रभु प्रदत्त है। पवित्र चारों वेद ब्रह्म सृष्टि के आदि ग्रन्थ हैं जो ब्रह्म(काल अर्थात ज्योति निरंजन) द्वारा बोले गए हैं। इन्हीं चारों वेदों का सारांश पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी है जो काल भगवान(ब्रह्म/क्षर पुरूष) द्वारा श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके बोला*

गया अमृत ज्ञान है। जिसमें काल प्रभु की भक्ति तक का ज्ञान है तथा पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष) का तथा सतलोक का भी ज्ञान है। परन्तु भक्ति विधि केवल काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) तक की ही है परन्तु पूर्ण परमात्मा की साधना तथा तत्व ज्ञान को किसी तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त से जानने को कहा है (गीता अध्याय 4 श्लोक 34)। क्योंकि पवित्र चारों वेद तथा पवित्र श्री मद्भगवत गीता जी को ऐसा ज्ञान जानो जैसे दसवीं कक्षा तक का पाठ्यक्रम। पाँचवां वेद जिसे स्वसम वेद(सूक्ष्म वेद) कहते हैं जिसमें चारों वेद तथा गीता जी तथा इनसे ऊपर का भी ज्ञान है। वह पूर्ण परमात्मा अर्थात सत्पुरूष कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ने स्वयं सतलोक से आकर काल लोक में अपनी अमृत वाणी(कबीर वाणी) द्वारा स्वयं प्रकट किया है। जो काल भगवान(क्षर पुरूष) ने समाप्त कर दिया था। जैसे किसी अपराध की धारा के विषय में पाँच वकील अपना-2 मत व्यक्त कर रहे हैं। एक कहता है इस अपराध पर संविधान की धारा 304 लगेगी, दूसरा कहता है 307 लगेगी, तीसरा कहता है 305 लगेगी, चौथा कहता है 376 लगेगी, पाँचवा कहता है 311-बी लगेगी। वे पाँचों वकील ठीक नहीं हो सकते। कौन सी धारा ठीक है यह निर्णय देश के संविधान से ही होगा। संविधान में लिखा विवरण अन्तिम तथा सत्य मान्य होता है।

ठीक इसी प्रकार परमात्मा के ज्ञान तथा भक्ति मार्ग की जांच के लिए पवित्र सद्ग्रन्थों को ही आधार माना जाएगा। पवित्र गीता जी में तथा पवित्र चारों वेदों में तथा(पांचवें वेद) कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की अमृत वाणी में सर्व ज्ञान तथा भक्ति विधि स्पष्ट लिखी है। पहले पवित्र गीता जी को आधार मान कर ज्ञान ग्रहण करते हैं। पवित्र गीता जी में तीनों प्रभुओं {ब्रह्म (क्षर पुरूष/काल) तथा परब्रह्म (अक्षर पुरूष) तथा पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरूष अर्थात सतपुरूष)} की भी जानकारी है।

गीता जी का ज्ञान ब्रह्म (क्षर पुरूष/काल) द्वारा दिया गया है। गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए ॐ-तत्-सत् इस तीन मन्त्र के जाप करने का निर्देश है। गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा कि पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का ॐ-तत्-सत् तीन मन्त्र का जाप है उस मन्त्र में मेरी भक्ति (साधना) का केवल एक ओम् (ॐ) अक्षर है जिसका उच्चारण करके स्मरण करना है। जो साधक अन्तिम स्वांस तक मेरा स्मरण करता हुआ प्राण त्याग जाता है उसे परमगति प्राप्त होती है। अकेला ॐ नाम का जाप काल ब्रह्म की साधना का है। तथा ब्रह्म साधना का प्रतिफल स्वर्ग- महास्वर्ग प्राप्ति, फिर पाप कर्म आधार से नरक का भोग तथा चौरासी लाख योनियों में जन्म-मृत्यु का कष्ट सदा बना रहेगा। केवल जैसा कर्म प्राणी (पाप-पुण्य) करता है वह दोनों का फल भोगता है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता (केवल पूर्ण परमात्मा की साधना करने से पाप कर्म दण्ड समाप्त होता है)।

इसी का प्रमाण गीता ज्ञान दाता प्रभु गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में कहता है कि

अर्जुन तेरे तथा मेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में भी यही प्रमाण है तथा गीता अध्याय 2 श्लोक 17 तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62, गीता अध्याय 15 श्लोक 4, 17 में अपने से अन्य पूर्ण परमात्मा (परमेश्वर) के विषय में कहा है तथा वही वास्तव में अविनाशी परमात्मा है। वही सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार है। उसी की शरण में जाने से जन्म-मृत्यु का रोग पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगा अर्थात पूर्ण मोक्ष प्राप्त हो जाएगा।

उसे पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष अर्थात अविनाशी परमेश्वर) के तत्वज्ञान तथा भक्ति विधि के विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा हे कि परमेश्वर को प्राप्त करने के लिए बहुत विस्तृत साधनाओं का ज्ञान स्वयं परमेश्वर ने अपने मुख से मुख्य ज्ञान में अर्थात् तत्वज्ञान में कहा फिर गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा कि उस तत्वज्ञान को समझ उसको समझने के लिए तत्वदर्शी सन्तों की खोज कर। फिर उन तत्वदर्शी सन्तों को विनम्र भाव से डण्डवत् प्रणाम करके प्रार्थना पूर्वक प्रश्न करने पर वे तत्व ज्ञान को जानने वाले तत्वदर्शी सन्त तुझे तत्वज्ञान सुनाऐंगे। उस पूर्ण परमात्मा के तत्व ज्ञान को समझ तथा जैसे वे साधना बतायें वैसे कर। (प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में है।)

गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो जिसकी मूल तो ऊपर को है तथा शाखाएं नीचे को हैं। ऊपर को जड़ें तो पूर्ण परमात्मा जानो तथा तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्माजी, सतगुण-विष्णुजी तथा तमगुण-शिवजी) रूपी शाखाऐं जानो। गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि मेरे तथा तेरे इस विचार काल में अर्थात् गीता ज्ञान में आपको मैं पूर्ण रूप से इस संसार रूपी वृक्ष (सृष्टि रचना) का ज्ञान नहीं बता सकता।

क्योंकि इसके आदि तथा अंत से मैं अपरीचित हूँ। इस उलझी हुई ज्ञान गुत्थी को तत्व ज्ञान रूपी शस्त्र द्वारा ही काटा जा सकता है अर्थात समझा जा सकता है। सृष्टि रचना के विषय में तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त ही बता सकता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में तत्वदर्शी (पूर्ण) सन्त की पहचान बताते हुए कहा है कि इस उल्टे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष के भिन्न-2 भागों को जो सन्त बतावे(सः वेद वित्) वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है अर्थात तत्वदर्शी (पूर्ण) सन्त है। क्योंकि गीता ज्ञान दाता ने तो केवल इतना ही बताया है कि ऊपर को तो जड़(मूल) है तथा नीचे को तीनों गुण रूपी शाखाएं हैं। फिर कहा है कि मुझे पूर्ण ज्ञान नहीं है। जो संसार रूपी वृक्ष के सर्व भागों जैसे मूल, तना, डार, शाखाऐं, पत्तों का ज्ञान भिन्न-2 बताए उसे तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त जानना।

परमेश्वर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने स्वयं अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान दिया।

''कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।''

कृपा देखें उल्टा लटके हुए संसार रूपी वृक्ष का चित्रः-

इस उल्टे संसार रूपी वृक्ष की जड़ें तो पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म अर्थात पूर्ण ब्रह्म/सतपुरूष) है। जमीन से बाहर तुरन्त जो हिस्सा दृष्टिगोचर होता है जिसे तना कहते हैं वह अक्षर पुरूष (परब्रह्म) जानो तथा मोटी डार को क्षर पुरूष (ब्रह्म/काल) जानो तथा डार की तीनों शाखाओं को श्री ब्रह्माजी(रजगुण), श्री विष्णुजी(सतगुण) तथा श्री शिवजी(तमगुण) रूपी तीनों देव जानो तथा पात रूप में संसार समझें। अब समझें कि पूर्ण परमात्मा (जड़ों) से सर्व वृक्ष का पालन होता है। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 16 में लिखा है। दो प्रभु तो इस पृथ्वी लोक में हैं (ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों को पृथ्वी वाला लोक कहा जाता है। क्योंकि यह नाशवान है) एक क्षर पुरूष (ब्रह्म/काल) तथा दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तथा दोनों ही प्रभुओं (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) के लोकों में दोनों प्रभुओं के तथा इनके अन्तर्गत प्राणियों के स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम पुरूष (वास्तव में श्रेष्ठ परमात्मा) तो इन (उपरोक्त) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य ही है। जो परमात्मा(परम अक्षर ब्रह्म) कहा जाता है वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।

उदाहरणार्थः- जैसे एक मूर्ति तो मिट्टी की बनी हो जो स्पष्ट नाशवान दिखाई देती है। गिरते ही टुकड़े-2 हो जाएगी। ऐसी स्थिती तो क्षर पुरूष (ब्रह्म) की जानो तथा दूसरी मूर्ति स्टील(इस्पात) की बनी हो जो मिट्टी वाली मूर्ति की तुलना में अधिक टिकाऊ है। परन्तु स्टील (इस्पात) को भी जंग लगेगा। एक दिन नष्ट हो जाएगी। भले ही समय अधिक लगे। इसी प्रकार अक्षर पुरूष को भी अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी तो तीसरी धातु स्वर्ण की बनी मूर्ति होती है जिसका कभी विनाश नहीं होता। ऐसी स्थिति परम अक्षर ब्रह्म अर्थात पूर्ण ब्रह्म (सतपुरूष) की जानो। वही तीसरा पूर्ण परमात्मा जो संसार रूपी वृक्ष की जड़(मूल) है सर्व का पालन पोषण करने वाला है। उसी पूर्ण परमात्मा की साधना तत्वदर्शी सन्त बताएगा। इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि पूर्ण सन्त(तत्वदर्शी) के मिल जाने के पश्चात् उस परमेश्वर(सतपुरूष) के उस स्थान की खोज करनी चाहिए जिस स्थान(सतलोक) में जाने के पश्चात् साधक पुनर् लौटकर संसार में नहीं आते अर्थात् जन्म-मृत्यु से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाते हैं तथा जिस आदि पुरूष अर्थात पूर्ण परमात्मा(सतपुरूष) से संसार रूपी वृक्ष का विस्तार हुआ है अर्थात जिसने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है। स्वयं गीता ज्ञान दाता प्रभु ने भी कहा है कि मैं भी उसी की शरण में हूँ। उसी परमात्मा की भक्ति विश्वास के साथ करनी चाहिए। यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में है कि गीता ज्ञान दाता प्रभु किसी अन्य पूर्ण परमात्मा की ओर संकेत कर रहा है। कहा है कि हे अर्जुन ! तू सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कृपा से तू परम

शान्ति तथा सतलोक(शाश्वत स्थान) को प्राप्त होगा। गीता अध्याय 18 श्लोक 64 में कहा है कि मेरा पूज्य देव भी यही पूर्ण परमात्मा है।

विशेषः- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि तत्वदर्शी अर्थात पूर्ण सन्त वह है जो संसार रूपी उल्टे वृक्ष के सर्वांगों का भिन्न-2 विवरण बताए। जिसे गीता ज्ञान दाता प्रभु भी नहीं जानता। वह विवरण आप जी ने ऊपर पढ़ा तथा उल्टे संसार रूपी वृक्ष का चित्र भी देखा। आगे पढ़े पूर्ण सन्त की अन्य पहचान तथा कैसे मिले वह पूर्ण परमात्मा जिस के विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में व अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है।

-दासन दास रामपाल दास

''एक श्रद्धालु की आत्म कथा''

शेष अगले अंक में ----------

ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

(पांचवी किस्त)

(18 अप्रैल 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

(---- गतांक से आगे)

''एक श्रद्धालु की आत्म कथा''

मैं राजेन्द्र दास 200-बी पश्चिम बिहार एक्सटैन्शन नई दिल्ली-63 का रहने वाला हूँ। मैंने राधास्वामी पंथ के सन्त चरणसिंह जी महाराज(डेरा बाबा जैमल सिंह ब्यास जि. अमृतसर पंजाब) से सन् 1980 में नाम दान लिया। गुरू जी के बताए अनुसार 2:30 घण्टे सुबह तथा 2:30 घण्टे शाम साधना शुरू की अभ्यास बढाते-2 अधिक समय करने लगा। मेरे दोनों कुल्हे भी पीड़ा करने लग जाते थे। फिर भी परमात्मा प्राप्ति की तड़फ से कष्ट को सहन करते हुए साधना की। कुछ प्रकाश भी दिखाई देता था तथा कुछ आवाजें भी सुनने लगी। अपने पंथ की साधना को सर्वोच्च मानकर अन्य की बात नहीं सुनता था। शरीर में कष्ट, घर में निर्धनता बढ़ती गई। कोई कार्य सिद्ध नहीं होता था। महा परेशानी का जीवन जीता रहा। गुरू चरण दास जी सत्संगों में कहते थे कि प्रारब्ध का कर्म भोग तो जीव को भोगना ही पड़ता है। इस दृष्टिकोण से अपने महाकष्टमय जीवन को जी रहा था।

एक दिन आस्था टी.वी. चैलन पर सन्त रामपाल दास आश्रम करौंथा जि. रोहतक का सत्संग सुना तो मुझे बहुत गुस्सा आया तथा सोचा यह तो हमारे पंथ की निन्दा कर रहा है। न चाहते हुए भी देखता रहा। जब सन्त रामपाल जी ने हमारे ही पंथ की पुस्तकों को टी.वी. पर दिखाया तथा अन्य शास्त्रों से तुलना की बताया कि श्री सावन सिंह महाराज ने श्री जगत सिंह जी को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। तीन वर्ष पश्चात् श्री जगत सिंह जी का निधन हो गया उसके पश्चात श्री सावन सिंह के शिष्य श्री चरण सिंह जी जो नाते में श्री सावन सिंह के पौत्र थे को व्यास गद्दी पर नियुक्त किया गया। श्री चरण सिंह को श्री सावन सिंह जी ने नाम दान का आदेश भी नहीं दिया था। यदि कहें कि श्री जगत सिंह जी ने आदेश दिया तो श्री सावन सिंह जी का शिष्य नहीं रहा। श्री चरण सिंह जी तथा श्री जगत सिंह जी गुरु भाई थे। एक शिष्य दूसरे शिष्य को आदेश नहीं दे सकता। जैसे एक सिपाही दूसरे सिपाही को सिपाही नियुक्त नहीं कर सकता। यह प्रमाण देख कर मुझे करंट जैसा लगा कि सचमुच राधास्वामी पंथ का ज्ञान तथा साधना पूर्ण रूप से शास्त्रविरूद्ध है। वह कार्यक्रम आस्था टी.वी. पर बन्द हो गया। कुछ समय उपरान्त एक समाचार पत्र पढ़ा उसमें भी सन्त रामपाल जी ने सर्व पुस्तकों

का तथा पृष्ठों का हवाला देकर लेख लिखा था।

राधास्वामी पंथ की साधना करते-2 भी घर तथा परिवार व कारोबार में अत्यधिक परेशानियों के कारण शराब तथा तम्बाखु का आदी भी हो गया था। उस समाचार पत्र को तथा उसके सम्बन्धित पुस्तकों को लेकर में ब्यास डेरा राधास्वामी पंजाब में गया तथा सन्त रामपाल दास द्वारा बताई गई त्रुटियों के समाधान के लिए श्री रोहतास चन्द्र बहल जी तथा परिचर कथा वाचक श्री खुराना जी से मिला। उनको तुलसी साहेब हाथरस वाले द्वारा रचित घट रामायण भाग पहला के पृष्ठ 27 पर दिखाया। जिसमें लिखा है कि पाँचों नाम काल के हैं। इनसे भिन्न आदि नाम तथा सतनाम(दो नाम) हैं। उनसे ही काल जाल से छुटकारा हो सकता है। वो दो नाम हमें नहीं मिले तो कैसे काल जाल से छुटेगें। कबीर साहेब जी की वाणी दिखाई ''शब्द'' ''सन्तों शब्द शब्द बखाना, शब्द फांस फंशा सब कोई शब्द नहीं पहचाना। प्रथम ही ब्रह्म(काल) स्वईच्छा से पांचों शब्द उच्चारा, सोहं, जोत निरंजन, ररंकार, शक्ति और ओंकारा।'' जब यह पुस्तके दिखाई तो दाँतों तले उंगली दबाई। परन्तु अपनी चतुरता दिखाई की छटवां नाम अन्दर ध्यान में मिलेगा। मैंने पूछा तुलसी साहेब तो कह रहे हैं कि दो नाम और है जो पांचों से अन्य हैं। आदि नाम तथा सतनाम। फिर सातवां कहाँ मिलेगा? इस बात पर उन्होंने कहा आप गुरू जी(सन्त गुरूइन्द्र सिंह जी) से मिल कर पूछो। मैंने कहा मिलाओ मुझे गुरू जी से, टालते हुए कहा कि करोड़ों शिष्य हैं गुरू जी के, किस-2 से मिलेगें। आप पत्र द्वारा समाधान प्राप्त करना। मैं रोता हुआ वापिस दिल्ली आ गया। पत्र डाला। उसका जवाब मिला, जो बेतुका था, कहा था आप अभ्यास और बढाते जाओ अपने आप ही सब मन्त्र मिल जाएगें।

डेरा ब्यास के उत्तर से कोई सन्तुष्टि नहीं हुई। उसके पश्चात सन्त रामपाल जी महाराज के बताए अनुसार राधास्वामी पंथ की पुस्तकों को पढा तो रोना आने लगा। यह क्या मजाक कर रखा है।

1. हजूर स्वामी शिवदयाल जी का कोई गुरू नहीं था।

2. स्वामी जी हुक्का पीते थे।

3. स्वामी जी प्रेत की तरह अपनी परम शिष्या बुक्की में प्रवेश होकर बोलते थे। मृत्यु उपरान्त भी बुक्की के मुख से हुक्का पीते थे तथा भोजन भी ग्रहण करते थे। सारवचन वार्तिक वचन 4 में कहा है कि सतनाम को सतनाम, सारनाम, सतशब्द, सतलोक, सतपुरूष भी कहते हैं।

आदि व्याख्याओं को पढ़ कर रोना आया। क्या करूं? कहाँ जाऊँ? सन्त रामपाल दास जी महाराज ने बताया कि हठ योग सन्त मार्ग नहीं है। हठ योग का प्रमाण रूहानी फूल पुस्तक पृष्ठ-82 पर श्री जैमल सिंह जी महाराज अभ्यास में आलस आने पर अपने शरीर पर बैंत मारते थे तथा हजूर स्वामी शिवदयाल जी महाराज कई-2 दिन तक बन्द कमरे में हठ योग से साधना करते थे जो किसी भी

सन्त के इतिहास में नहीं है। सन्त नानक जी हल चलाते थे तथा स्मरण भी करते थे, सन्त रविदास जी जूते बनाने का कार्य भी करते थे तथा स्मरण भी करते थे तथा परमेश्वर कबीर जी ने लीला करके दिखाया की जुलाहे का कार्य करते-2 भी प्रभु नाम का स्मरण कर सकते हैं। सन्त गरीब दास जी(छुडानी वाले) हल भी चलाते थे तथा स्मरण भी करते थे। हठ योग करने से श्री तुलसीदास साहेब हाथरस वाले के दोनों पैर कमर से नीचे सुन्न हो गए थे (अधरंग हो गया था) उनके शिष्य पालकियों में बैठा कर ले जाते थे (पुस्तक जीवन चरित्र तुलसी साहेब पृष्ठ - 7 पर प्रमाण है)। यह साधना जनसाधारण नहीं कर सकता तथा शास्त्रविरूद्ध होने के कारण व्यर्थ है। पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ-126 पर श्री सावन सिंह जी ने लिखा है कि अभ्यास में आत्मा सिमट कर आँखों के पीछे चली जाती है शरीर सो जाता है तो यह शरीर मुर्दा दिखाई देता है। यही जीवित मरना है।

उपरोक्त प्रमाणों को आँखों देख कर मैंने(राजेन्द्र ने) परम सन्त रामपाल दास जी महाराज से उपदेश ग्रहण कर लिया। मेरे सर्व कार्य सिद्ध हो गए तथा सर्व नशा छूट गया। मेरे शरीर का रोग भी समाप्त हो गया।

मेरी सर्व भक्त समाज से प्रार्थना है कि सत्य को आँखों देख कर सन्त रामपाल जी महाराज से नाम दान लेकर अपना मानव जीवन सफल बनाऐं।

आपका अपना
राजेन्द्र दास

कुछेक श्रद्धालु कहते हैं कि क्या गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? उन श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जैसे एक डाक्टर(वैद्य) से उपचार नहीं होता है तो दूसरा डाक्टर बदलने में लाभ होता है हानि नहीं होती। ठीक इसी प्रकार गुरू को जानो। इसलिए शास्त्रविधि विरूद्ध ज्ञान वाले गुरू को त्यागकर पूर्ण गुरू धारण करना हितकर है। पाप नहीं अपितु पूण्य है। कुछ श्रद्धालु संकोच करते हैं कि हमारी तीस वर्ष की साधना का क्या होगा? अब कैसे छोड़ें? उन श्रद्धालुओं से निवेदन हैं कि विचार करें कि आपको किसी शहर में जाना है, तीस किलोमीटर जाने के बाद पता चले कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं, तो तुरंत मुड़ जाना चाहिए। नहीं तो मंजिल दूर होती जाएगी। फिर भी कोई कहे कि हम तो तीस किलोमीटर सफर तय कर चुके हैं, अब कैसे छोड़ें इस रास्ते को? यह विचार तो बालक के या शराबी के हो सकते हैं। समझदार तो तुरंत मुड़ जाएगा। इसलिए उस साधना को तुरंत त्यागकर वास्तविक शास्त्रविधि अनुसार साधना संत रामपाल जी महाराज से ग्रहण करें।

कृप्या पूर्ण सन्त की अन्य पहचान (2) में पढ़ें :-

नानक साहेब कहते हैं कि -

सोई गुरु पूरा कहावै, दोय अख्खर का भेद बतावै। एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर जावै।

शेष अगले अंक में ----------

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

(छठी किस्त)

(23 अप्रैल 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

(---- गतांक से आगे)

पूर्ण सन्त की पहचान (2)

नानक साहेब जी कहते हैं :-

सोई सतगुरू पूरा कहावै। दोय अख्खर का भेद बतावै।।
एक छुड़ावै एक लखावै। तो प्राणी निज घर जावै।।

गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में उस पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष) की साधना का भी संकेत दिया है। कहा है कि उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का तो केवल ॐ-तत्-सत् इस तीन मन्त्र के जाप का निर्देश है। जिसका तीन विधि से स्मरण किया जाता है। यही साधना साधक जन सृष्टि के प्रारम्भ में करते थे। तीन मन्त्र के स्मरण की विधि तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त बताएगा। क्योंकि गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा के विषय में तत्वदर्शी सन्त से पूछो।

ओम् शब्द- यह ब्रह्म(क्षर पुरूष) का जाप है। तत् शब्द यह परब्रह्म का जाप है। यहाँ तत् शब्द सांकेतिक है। जो यह दास केवल उपदेशी को ही बताएगा।

ओम्+तत् (सांकेतिक) मिलकर सतनाम (दो अक्षर का मन्त्र) बनता है तथा सत् शब्द(सांकेतिक) तीसरा मन्त्र है इसे सारनाम भी कहते हैं। इसी को आदि नाम भी कहते हैं। जो गुप्त है उसको पूर्ण सन्त ही बताएगा जो स्मरण करने का है। ओम मन्त्र का जाप काल (ब्रह्म) के ऋण से मुक्त कराएगा (काल से छुड़वाएगा) तथा दूसरा तत्(सांकेतिक) परब्रह्म का मन्त्र है। जिसका जाप परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों को पार करने का किराया है। यह भंवर गुफा तक पहुँचाएगा अर्थात पूर्ण परमात्मा को दिखाएगा(लखाएगा) तथा तीसरा मन्त्र सारनाम पूर्ण परमात्मा के सतलोक में स्थाई करेगा। फिर साधक का जन्म-मृत्यु सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। सतलोक में पूर्ण परमात्मा अर्थात् सतपुरूष मानव सदृश आकार में है। जिसके एक रोम कूप की शोभा करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है। जीव आत्मा भी साकार मानव सदृश शरीर में रहती है तथा आत्मा के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान है। आत्मा अपने साकार परमात्मा के सिर पर चंवर करती है(प्रमाण कबीर परमेश्वर की अमृतवाणी शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' जो सन्तमत प्रकाश भाग-3 के प्रथम पृष्ठ पर लिखा है)।

राधास्वामी पन्थ तथा धन-धन सतगुरू पंथ वाले सन्तों का कहना है कि सतलोक में तो केवल प्रकाश ही प्रकाश है। सतपुरूष निराकार है। आत्मा सतलोक में जा कर परमात्मा में ऐसे समा जाती है जैसे बूंद समुंद्र में समा जाती है। परमात्मा और आत्मा का भिन्न अस्तित्व नहीं रहता। जबकि वास्तविकता ऊपर वर्णित है वह सही है जो परमात्मा पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) ने स्वयं बताई है। मुझ दास को अपनी कृपा से दर्शन कराए हैं।

उपरोक्त सतनाम जो दो अक्षर (ओम् + तत् सांकेतिक) के योग से बनता है का उदाहरण स्वयं श्री सावन सिंह जी महाराज (जो श्री खेमामल उर्फ शाहमस्ताना जी के गुरु जी है। शाहमस्ताना जी ने धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा सिरसा में स्थापित किया है) ने पुस्तक संतमत प्रकाश भाग-4 के पृष्ठ 261-262 पर लिखा है। परन्तु स्वयं ज्ञान नहीं है, ग्रंथ साहेब का प्रमाण लिया है। नानक साहेब कहते हैं कि -

सोई सतगुरु पूरा कहावै, दोय अख्खर का भेद बतावै। एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर जावै।

फिर कहते हैं - जे तू पढ़या पंडित बीना दोय अख्खर दुयनावां। प्रणवत नानक एक लंघाए जे कर सच्च समावां। ***(आदि गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 1171)***

फिर कबीर परमेश्वर जी की वाणी का प्रमाण दिया है :- **कह कबीर अक्षर दुय भाख। होयगा खसम त लेयगा राख।** ***(आदि गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 329)***

फिर लिखा है :- ओम् शब्द, सोहं शब्द, सतशब्द

विचार करें :- उपरोक्त मंत्र पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति तथा सतलोक निवास के हैं जिसका पवित्र गीता जी में तथा पवित्र अमृत वाणी कबीर साहेब तथा प्रभु प्राप्त संतों की अमृतवाणी में भी प्रमाण है। परंतु राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरु पंथ तथा जयगुरुदेव तथा दिनोंद भिवानी आदि राधास्वामी वाले पंथों के संतों को ज्ञान नहीं है। सतनाम जो दो अक्षर के योग से बनता है उस के विषय में गोल-मोल लिख दिया कि ये आगे पारब्रह्म में हैं तथा एक अक्षर(सारनाम) के विषय में लिखा है कि वह भी पारब्रह्म में मिलेगा। स्वयं वे ''ज्योति निरंजन'', ''औंकार'', ''ररंकार'', ''सोहं'' तथा ''सतनाम'' ये पांच नाम देते हैं तथा धन-धन सतगुरू सच्चा सौदा वाले सन्त पहले तो यही पांच नाम देते थे अब, ''सतपुरुष'', ''अकाल मूर्ति'', ''शब्द स्वरूपी राम'' ये अन्य तीन नाम देते हैं। दिनोंद भिवानी वाले ताराचन्द जी महाराज वाला पंथ केवल ''राधास्वामी'' नाम देता है, स्वयं दो अख्खर के वास्तविक मंत्र से अपरिचित हैं। इसलिए कबीर परमेश्वर की अमृतवाणी तथा श्री नानक जी की अमृतवाणी के आधार से जो दो अक्षर का भेद नहीं जानता वह पूरा गुरु (पूर्ण संत) नहीं है। इससे सिद्ध हुआ कि राधा स्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा पंथ तथा श्री ठाकुर सिंह, श्री कृपाल सिंह तथा जय गुरूदेव मथुरा वाले तथा दिनोद भिवानी वाले राधास्वामी के सन्त जी पूर्ण सन्त नहीं हैं क्योंकि उनको दो अक्षर का ज्ञान नहीं है।

पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 262 में लिखा है सतनाम हमारी जाति है, सतपुरूष हमारा धर्म है, सच्चखण्ड(सतलोक) हमारा देश है। यहाँ पर सतनाम, सतपुरूष, सच्चखण्ड तीनों को भिन्न-2 बताया है। इसी पुस्तक के पृष्ठ 21 पर सतनाम को स्थान कहा है। पुस्तक सारवचन वार्तिक प्रथम भाग के वचन 4 में सतनाम, सच्चखण्ड, सतपुरूष, सारशब्द, सतशब्द को एक बताया है। क्या ये विचार परम सन्त के हो सकते हैं? {कृप्या पढ़ें सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261-262 से फोटो कापी इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 109-110 पर}

अधूरे सन्तों के विषय में पूज्य कबीर परमेश्वर जी कहते हैं:-

सतगुरू बिन काहु न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुस छिड़ै मूढ किसाना।
सतगुरू बिन बेद पढें जो प्राणी, समझे ना सार रहे अज्ञानी।
वस्तु कहीं खोजे कहीं, किस विद्य लागे हाथ।
एक पलक में पाईए, भेदी लिजै साथ।

एक समय एक व्यक्ति की अचानक मृत्यु हो गई। उसने बहुत सारा धन जमीन में दबा रखा था। उस का विवरण एक बही(पैड) में लिखा था जो सांकेतिक था। उस व्यक्ति ने अपने मकान के एक कोने में मन्दिर बनवा रखा था। बही में लिखा था चाँदनी चौदस रात्रि के बारह बजे मन्दिर के गुमज में सर्व धन दबा रखा है। लड़कों ने रात्री में मन्दिर का गुमज फोड़ा। उसमें कुछ नहीं पाया। उनके पिता का एक दोस्त दूसरे गांव में रहता था। बच्चों ने उसको सर्व विवरण बताया तथा कहा कि पिता जी ने झूठ लिखा है। मन्दिर के गुमज में धन नहीं मिला। पिता जी के दोस्त ने उस लेख को पढ़ा तथा कहा कि आप मन्दिर के गुमज का पुनर् निर्माण् करवाएं। मन्दिर के गुमज का पुनर् निर्माण होने के पश्चात् चांदनी चौदस (शुद्धि चतुर्दशी) को रात्रि के बारह बजे जहां पर गुमज की छाया थी उस स्थान को खोदा गया तो सर्व धन मिल गया।

अपने सद्ग्रन्थों में प्रभु ज्ञान का अपार धन छुपा है जो सांकेतिक है। वह पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) के बिना किसी को नहीं मिला। इसीलिए राधास्वामी तथा धन-धन सतगुरू वाले पंथों के सन्तों ने श्रद्धालुओं को भ्रमित कर दिया कि वेद तथा गीता आदि शास्त्र तो व्यर्थ हैं। कबीर परमेश्वर तो कहते हैं :-

वेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहीं।

भावार्थ है कि वेद तथा गीता जी व कुर्आन झूठे नहीं हैं। जो इन्हें समझ नहीं सके वे अज्ञानी हैं। राधास्वामी तथा धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा वाले पंथों के सन्त जी कहते हैं कि गीता व वेदों में पूर्ण परमात्मा का ज्ञान नहीं है। स्वयं लोक वेद(दंत कथाओं) के आधार पर ढेर सारी पुस्तकें रच कर गलत ज्ञान प्रचार कर डाला। अब श्रद्धालुओं को शास्त्रों का ज्ञान समझाना कठिन हो रहा है। वर्तमान में मुझ दास को पूर्ण परमात्मा ने आप सर्व प्रभु प्रेमियों को छुपा धन बताने भेजा है। कृप्या अविलम्ब प्राप्त करें। वर्तमान में दो अक्षर से बने ''सतनाम'' का तथा एक अक्षर ''सारनाम''

का केवल मुझ दास (रामपाल दास) ही को दान करने का अधिकार पूज्य गुरूदेव तथा परमात्मा कबीर साहेब ने स्वयं प्रदान किया है। मुझ दास से विमुख एक-दो पापात्माऐं तीनों मंत्रों को प्राप्त करके स्वयंभू गुरू बन कर नाम दान करने लगे हैं। वे अधिकारी नहीं। उन्हें भक्त समाज के पक्के दुश्मन जानना। न तो वे स्वयं पार हो सकते हैं तथा न ही उनसे उपदेश प्राप्त भक्तजन पार हो सकते हैं। ऐसे ही लालची व्यक्तियों ने परमात्मा कबीर जी के साथ भी धोखा किया था जो अभी तक तत्वज्ञान समझने में बाधक सिद्ध हो रहा है। उनके तो दर्शन करना भी पाप है। जिनके विषय में ''परमेश्वर का सार संदेश'' पुस्तक के अध्याय पन्द्रह में ''शंका समाधान विषय'' में विस्तृत वर्णन है। एक समय में सन्त एक ही होता है वह पूरे विश्व को नाम देकर पार कर सकता है। जैसे परमपूज्य कबीर परमेश्वर जी काशी में आए थे उस समय पूरे विश्व में अकेले ही नाम दान करते थे। उनके चौसठ लाख शिष्य सर्व धर्मों के हुए थे। अपने रहते उन्होंने कोई उत्तराधिकारी नहीं बनाया था। इसलिए नकली संतों से सावधान रहें।

किस्त संख्या चार तथा किस्त संख्या छः के प्रमाणों से आपजी को स्पष्ट हुआ कि पूर्ण संत की क्या पहचान है ?

''कैसे मिले भगवान?''

शेष अगले अंक में ----------

है। गुरु ग्रन्थ साहिब में बड़े गहरे और गुप्त रहस्य हैं। एक स्थान पर आता है :

बावन अच्छर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहे।
ऐ अक्खर खिर जाहेंगे ओय अक्खर इन मह नाहे।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 340)

बावन अक्षर संस्कृत भाषा के हैं। शायद ही कोई ऐसी भाषा हो, जिसके बावन अक्षर हों। इस संसार का सारा मसाला बावन अक्षरों में आ जाता है। पिण्ड, अण्ड का हाल तो बावन अक्षरों में आ गया। आगे दो अक्षर और हैं जो पारब्रह्म में हैं। इसके विषय में ग्रन्थ साहिब में लिखा है :

सोई गुरु पूरा कहावै। दोय अखखर का भेद बतावै।
एक छुड़ावै एक लखावै। तो प्राणी निज घर को पावै।

फिर कहते हैं :

जे तू पड़या पंडित बीना दुय अक्खर दुय नावां।
प्रणवत नानक एक लंघाए जे कर सच समावां।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 1171)

यदि तुम गुणी हो, ज्ञानी हो तो वे अक्षर बताओ ? वे अक्षर पारब्रह्म में हैं। एक अक्षर ने दुनिया बनाई है और एक ने सतलोक बनाया है। यही कबीर साहिब कहते हैं :

कह कबीर अक्षर दुय भाख। होयगा खसम त लेयगा राख।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 329)

गुरु नानक साहिब भी कहते हैं :

इक अक्खर हरि मन वसै नानक होत निहाल।

(पुस्तक 'संतमत प्रकाश' भाग-4 पृष्ठ 261 से फोटो कॉपी)

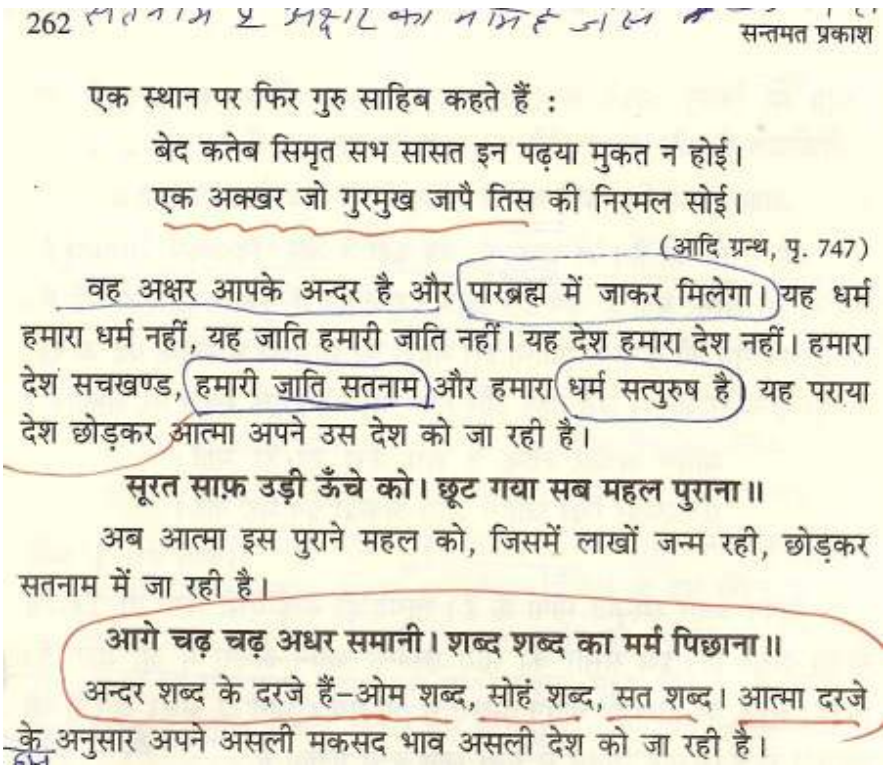

262 सन्तमत प्रकाश

एक स्थान पर फिर गुरु साहिब कहते हैं :

बेद कतेब सिमृत सभ सासत इन पढ़या मुकत न होई।
एक अक्खर जो गुरमुख जापै तिस की निरमल सोई।

(आदि ग्रन्थ, पृ. 747)

वह अक्षर आपके अन्दर है और पारब्रह्म में जाकर मिलेगा। यह धर्म हमारा धर्म नहीं, यह जाति हमारी जाति नहीं। यह देश हमारा देश नहीं। हमारा देश सचखण्ड, हमारी जाति सतनाम और हमारा धर्म सत्पुरुष है यह पराया देश छोड़कर आत्मा अपने उस देश को जा रही है।

सूरत साफ़ उड़ी ऊँचे को। छूट गया सब महल पुराना॥

अब आत्मा इस पुराने महल को, जिसमें लाखों जन्म रही, छोड़कर सतनाम में जा रही है।

आगे चढ़ चढ़ अधर समानी। शब्द शब्द का मर्म पिछाना॥

अन्दर शब्द के दरजे हैं–ओम शब्द, सोहं शब्द, सत शब्द। आत्मा दरजे के अनुसार अपने असली मकसद भाव असली देश को जा रही है।

(पुस्तक 'संतमत प्रकाश' भाग-4 पृष्ठ 262 से फोटो कॉपी)

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

(सातवीं किस्त)

(-- गतांक से आगे)

''कैसे मिले भगवान?''

सावधान :- राधास्वामी पंथ में पाँच नाम देते हैं। ज्योति निरंजन, ओंकार, रंरंकार, सोहं और सतनाम, इसी पंथ की शाखा धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा सिरसा वाले अब तीन नाम 1. सतपुरूष 2. अकाल मूर्ति 3. शब्द स्वरूपी राम तथा जगमालवाली वाले ''धन-धन सतगुरू तेरा ही आसरा'' एक नाम देते हैं, पहले पांच नाम ही दान किए जाते थे। दिनोंद (जिला भिवानी) हरियाणा में श्री ताराचन्द जी वाला पंथ एक ''राधा स्वामी'' नाम देता है इसी को सारनाम बताता है

श्री आसाराम जी (अहमदाबाद वाला) सोहं मन्त्र को दो भागों में स्मरण करने को कहता है तथा कई अन्य मन्त्र भी देता है। जिन में से रूची अनुसार साधक को स्वयं चुनना होता है।

1. गायत्री मन्त्र (ओम् भूर्भुवः ------) 2. ओम् नमः शिवाय 3. ओम् नमः भगवते वासुदेवाय 4.------

श्री सुधांशु जी (बकरवाला दिल्ली वाले) हरि ओम्-तत्-सत् का जाप मन्त्र देता है। श्री शिव भगवान को अजन्मा-अजर-अमर अर्थात् मृत्युंज्य तथा सर्वेश्वर आदि बताते हैं। जब कि श्री देवी महापुराण तथा शिव महापुराण में श्री शिव का जन्म मृत्यु लिखा है।

''निरंकारी '' पंथ वाले एक नाम'' तू ही एक निरंकार। मैं तेरी शरण मुझे बख्स लो'' देते हैं तथा परमात्मा को निराकार बताते हैं। जबकि परमात्मा सशरीर है।

उपरोक्त मन्त्र शास्त्रविरूद्ध होने से मोक्ष दायक नहीं हैं।

''हंसा देश पंथ''(श्री सतपाल जी महाराज पंजाबी बाग दिल्ली वाला तथा श्री प्रेम रावत उर्फ बालयोगेश्वर जी महरौली दिल्ली वाला) हंस का जाप दो हिस्से करके जाप करने को देते हैं। इसको उल्टा करके सहं करके सोहं को भी दो हिस्से करके जाप करने को देते है तथा आँख बन्द करके हठ योग क्रियाऐं देते हैं जो शास्त्रविरूद्ध हैं मोक्ष दायक नहीं हैं।

भावार्थ है कि ओम्-तत्(सांकेतिक) तथा सत्(सांकेतिक) के अतिरिक्त सर्व साधना शास्त्र विरूद्ध अर्थात् मनमाना आचरण (पूजा) है। जो पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक (मन्त्र) 23 में व्यर्थ कहा है तथा (श्लोक) मन्त्र 24 में कहा है कि परमात्मा की

भक्ति के लिए शास्त्रों(वेदों) को ही आधार मानें।

उपरोक्त साधना शास्त्र विरूद्ध है, मोक्ष दायक नहीं है।

कृप्या पढ़ें मोक्ष दायक साधना :-

सर्वप्रथम उपदेश प्राप्त करने वाले को मानव शरीर में बने कमलों को खोलने का मन्त्र जाप दिया जाएगा। जिससे आपकी कुण्डलनी शक्ति जागृत हो जाएगी अर्थात् कमल खिल जाएगें। आप का त्रिकुटी तक जाने का रास्ता साफ हो जाएगा। मानव शरीर में कमल (चक्र) बने हैं। 1. मूल कमल में देव (स्वामी) गणेश जी का कार्यालय है, 2. स्वाद कमल में भगवान (स्वामी) ब्रह्मा जी का कार्यालय है, 3.नाभि कमल में भगवान(स्वामी) विष्णु जी का कार्यालय है, 4. हृदय कमल में भगवान(स्वामी) शिव जी का कार्यालय है, 5. कण्ठ कमल में शक्ति दुर्गा का कार्यालय है। इन पांचों शक्तियों के पांच नाम (मंत्र) जाप के हैं जो आपको प्रथम दिए जाएगें। जिनके जाप से आपको आगे जाने का रास्ता मिलेगा अर्थात् आपकी कुण्डलनी शक्ति जागृत हो जाएगी। दूसरे शब्दों में आपके कमल खुल जाएंगे।(योगीजनों ने इन्हीं कमलों को हठ योग से खोलने का व्यर्थ प्रयत्न किया।) तब आप त्रिकुटी पर पहुंच पाओगे। यह तो प्राथमिक पढ़ाई है जो पांच नामों की है। केवल बात बनाने से कि हम तो सीधे त्रिकुटी में जाते हैं, कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा।

जैसे हम विदेश(काल लोक) में आए हैं। स्वदेश(सतलोक) जाना है। हमारे ऊपर विदेश के कार्यालयों (बिजली-पानी-टेलिफोन आदि) का बिल बकाया है तथा कुछ ऋण भी शेष है। प्रथम ऋण मुक्त प्रमाण पत्र लेने होंगे। फिर आप त्रिकुटी अर्न्तराष्ट्रीय हवाई अड्डे (इन्टरनैशल एयर पोर्ट) पर पहुंच सकते हैं अन्यथा नहीं। आप यहां विदेश (काल के लोक) में ऋणी हो गए हैं। आप पर बहुत कर्जा है। जिस कारण से आपकी सर्व सुविधाएं छीनी जा चुकी हैं। जैसे बिजली का बिल न भरने से कनेक्शन कट जाता है। लाभ समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार आपके सर्व कार्य उल्ट-पुल्ट हो गए हैं। सतगुरू आपका जमानती (गारन्टर) बनेगा तथा श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी आदि से आपके सर्व लाभ पुनर् चालु कराएगा। फिर उपरोक्त पांचों शक्तियों के नाम जाप की मजदूरी करके आपने ऋण मुक्त भी होना है तथा जब तक इस विदेश(काल लोक) में रहोगे सांसारिक सुविधाएं भी प्राप्त करते रहना है। सतनाम दो अक्षर (मन्त्र) के जाप (ओम् + तत्) में एक ओम् (ऊँ) अक्षर है। इस ओम् नाम के जाप की कमाई से ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों का ऋण चुकाना है। हम पहले ओम् नाम की कमाई स्वर्ग-महास्वर्ग में खर्च करते रहे। अब हम ओम् (ऊँ) मंत्र के जाप की पूजा ब्रह्म (काल) को दे देंगे। यह हमें छोड़ देगा। भावार्थ है कि सतनाम के इस एक अक्षर ''ओम्'' के जाप की कमाई साधक को काल जाल से छुड़ाएगी। आप जी ने श्री नानक जी की वाणी में पढ़ा कि पूरा सतगुरू दो अक्षर का भेद बताएगा एक अक्षर छुड़ाएगा दूसरा तत् मन्त्र (जो सांकेतिक है) प्रभु को भंवर गुफा से पारदर्शक पर्त के पार

सतलोक में सतपुरूष को लखाएगा अर्थात् दर्शन कराएगा।

यह एक अक्षर ओम् ही ब्रह्म अर्थात् काल का वास्तविक जाप का मन्त्र है का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में है कि ''ओम् इति एक अक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्। य प्रयाति त्यजन देहम् सः याति परमाम् गतिम्।''(8/13) शब्दार्थ :- काल ब्रह्म ने कहा है कि जो मुझ ब्रह्म के एक अक्षर ओम्(ॐ) का जाप अन्तिम स्वांस तक करता है वह मेरे वाली भक्ति का पूर्ण लाभ प्राप्त करता है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में गीता ज्ञान दाता (काल-ब्रह्म) ने कहा है कि यदि तूने उस परमात्मा की शरण में जाना है तो (सर्व धर्मान् परित्यज्य माम्) मेरे स्तर की सर्व धार्मिक पूजाऐं अर्थात् ओम् नाम का जाप यज्ञ आदि मुझमें छोड़ कर (एकम् शरणम्) उस एक सर्वशक्तिमान की शरण में (व्रज) जा(अहम् त्वा सर्व पापेभ्यः मोक्षयिष्यामि मा शुचः) मैं तुझे सर्व पापों से छुड़ा दूंगा, तू चिंता मत कर। जब हम शरीर त्याग कर सतलोक को प्रस्थान करेंगे तब काल(ब्रह्म) को ओम् (ऊँ) नाम की कमाई त्रिकुटी पर सौंप देंगे। यह काल हमें ऋण मुक्त कर देगा (पवित्र गीता जी का हिन्दी अनुवाद कर्ताओं ने गलत अनुवाद किया है। गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में व्रज का अर्थ आना किया है जबकि व्रज का अर्थ जाना होता है) फिर हम तत् मन्त्र(जो सांकेतिक है) के जाप की कमाई परब्रह्म को दे देगें। वह हमें अपने सात शंख ब्रह्मण्डों से पार करके भंवर गुफा तक पहुंचा देगा। वहां पर पूर्ण परमात्मा को हम केवल देख(लख) सकते हैं। जैसे शीशे के पार वस्तु को देखा जा सकता है प्राप्त नहीं किया जा सकता। तत् पश्चात सारनाम के जाप की कमाई भंवर गुफा से पार करके सतलोक में स्थाई स्थान प्राप्त कराएगी। फिर अपना जन्म मृत्यु कभी नहीं होगा। सतपुरुष (पूर्ण परमात्मा) की प्राप्ति होगी। सतलोक में सर्व आत्माओं का साकार अभौतिक शरीर है जो एक नूर तत्व से बना है पूर्ण परमात्मा का भी (अकायम् अश्नाविरम्) अभौतिक नूरी शरीर है परन्तु आत्मा और पूर्ण परमात्मा के शरीर के प्रकाश का अत्यधिक अन्तर है ऊपर के अन्य(अलख, अगम, अनामय) लोकों में जाने की भक्ति वहां सतलोक में प्रारम्भ होगी। वहां सतलोक में कोई कष्ट नहीं है। इसलिए ऊपर के लोकों की प्राप्ति की ईच्छा कोई बिरला ही करता है।

तत्व ज्ञान के अभाव से सर्व पवित्र हिन्दु समाज तथा राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरु सच्चा-सौदा तथा अन्य पंथों के पवित्र आत्मा संत तथा श्रद्धालु अपना जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। सर्व से नम्र निवेदन है कि वह वास्तविक दो अक्षर(ओम् + तत् सांकेतिक) का मंत्र जाप तथा एक अक्षर सारनाम जगत् गुरू तत्वदर्शी सन्त रामपाल दास जी महाराज के पास है तथा इस दो मंत्र के योग से बने मंत्र(जिसे सतनाम कहते हैं) की कमाई पूरी होने के पश्चात आपको सत्शब्द अर्थात सारनाम जो एक अक्षर का है दिया जाएगा। फिर परमात्मा प्राप्ति होगी।

उदाहरण :- जैसे जल को प्राप्त करने के लिए नल लगाना होता है। दो अक्षर के

नाम को बोकी लगाना जानो। ओम + तत् (जिसमें तत् मंत्र अन्य है जो साधक को बताया जाएगा) का जाप स्वांस-उस्वांस से किया जाता है।

कबीर साहेब जी कहते हैं कि ''स्वांस–उस्वांस में जाप जपो, व्यर्था स्वांस न खो। न जाने इस स्वांस को आवन हो के न हो।।''

दो अक्षर से बने सतनाम से स्वांस-उस्वांस की बोकी लगाई जाएगी जो पाईप को जल तक पहुंचाएगी। फिर सारनाम रूपी हैंड पंप की मशीन लगाई जाएगी। उस सारनाम का भी स्मरण करना होता है। जैसे हैंड पम्प की हत्थी को हिला-हिला कर गति दी जाती है तब पानी प्राप्त होता है। इसी प्रकार सारनाम फिर एक ही रह जाता है उसका स्मरण करने से सतपुरूष(अविनाशी परमात्मा) की प्राप्ति होती है। पवित्र गीता जी के अध्याय 17 श्लोक 23 में यह भी स्पष्ट किया है कि ओम्-तत्-सत् मंत्र को तीन विधि से स्मरण किया जाता है। यह विधि केवल पूर्ण सन्त रामपाल दास जी महाराज के पास है जिसमें तीनों मंत्रों ओम् + तत् (सतनाम) है तथा सत्शब्द(जो सारनाम) है को तीन प्रकार से ही स्मरण करना होता है।

कृप्या किस्त सं. 6 में प्रकाशित फोटो कॉपी ''सन्तमत प्रकाश'' भाग 4 पृष्ठ 262 में पढें जिसमें तीनों मन्त्रों का स्पष्ट वर्णन भी किया है कि एक ओम् शब्द दूसरा सोहं शब्द तीसरा सतशब्द। राधास्वामी पंथ वालों को दो अक्षर से बने सतनाम का तथा आदि नाम (जिसे सारनाम भी कहते हैं) का ज्ञान नहीं वे पाँचों नाम काल के देते हैं। जिसके विषय में तुलसी साहेब कृत घट रामायाण प्रथम भाग पृष्ठ-27 पर लिखा है कि पाँचों नाम काल के हैं इन पाँचों से भिन्न सतनाम तथा आदि नाम अर्थात् सारनाम है। जबकी आदि ग्रन्थ साहेब तथा कबीर जी की वाणी का प्रमाण बताया है वह सही है कि पूरा सन्त दो अक्षर का नाम जाप(ओम्+तत्) बताएगा। वही पूरा सन्त होगा।

श्री नानक साहेब जी की वाणी में स्पष्ट है कि "इक अख्खर हरि मन वसै नानक होत निहाल'' *फिर ग्रन्थ साहेब के पृष्ठ 747 की वाणी का प्रमाण लिखा है कि* ''एक अख्खर जो गुरू मुख जापै तिस की निरमल होई''।

उपरोक्त वाणी स्पष्ट कर रही है कि एक अक्षर(जो सारनाम है) है वह भी गुरू मुख(पूर्ण सन्त के शिष्य) को जाप करना होता है। राधास्वामी पंथ वाले इसे वाणी को अपनी शास्त्रविरूद्ध साधना से जोड़ते हैं कि एक धुन अन्दर सुनने के विषय में कहा है ''एक अख्खर का जाप करै'' विचार करें धुन का जाप नहीं होता। वह तो केवल सुनी जाती है। जाप का संकेत एक मन्त्र सारनाम की ओर न की धुन सुनने के लिए है। पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261,262 की फोटो कापी में श्री सावन सिंह जी ने कहा है कि दो अक्षर पारब्रह्म में हैं। फिर कहा है कि वह एक अक्षर भी पारब्रह्म में मिलेगा। आप स्वयं विचार करें राधास्वामी पंथ के सन्त ज्ञानी है या अज्ञानी।

परंतु पूर्ण परमात्मा को प्राप्ति की विधि स्वयं पूर्ण परमात्मा कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ने बताई है जो वर्तमान में पूरे विश्व में केवल पूर्ण सन्त रामपाल दास जी

महाराज को प्राप्त है। अविलम्ब तथा निःशुल्क प्राप्त करें। यदि कोई उपरोक्त विधि को सन्त रामपाल दास जी महाराज से प्राप्त करके स्वयंभू गुरू बन कर नामदान करता है तो उसे अनाधिकारी जान कर सावधान रहें। वह अपना तथा भोले श्रद्धालुओं का जीवन नाशक है। ऐसे-2 स्वयंभू नकली सन्तों ने प्रभु मार्ग को बिगाड़ रखा है। जिस समय भक्त समाज को ज्ञान हो जाएगा कि ऐसे नकली गुरू मानव जीवन के लिए कितने घातक हैं तब इन नकली गुरूओं को छुपने को स्थान नहीं मिलेगा। यह जागृति अति शीघ्र आने वाली है। उन्हीं के शिष्य इन सर्व शास्त्रविरूद्ध साधना बताने वाले गुरूओं तथा स्वयंभू गुरूओं को फाटक में रोकेगें ताकि ये समाज को गुमराह न कर सकें। सर्व भक्त समाज से प्रार्थना है कि झूठे तथा कपटी गुरूओं को त्याग कर सन्त रामपाल दास जी महाराज से सत्य साधना निःशुल्क प्राप्त करें।

कुछेक श्रद्धालु कहते हैं कि क्या गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? उन श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जैसे एक डाक्टर(वैद्य) से उपचार नहीं होता है तो दूसरा डाक्टर बदलने में लाभ होता है हानि नहीं होती ठीक इसी प्रकार गुरू को जानो। इसलिए शास्त्रविधि विरूद्ध ज्ञान वाले गुरू को त्यागकर पूर्ण गुरू धारण करना हितकर है। पाप नहीं अपितु पुण्य है। कुछ श्रद्धालु संकोच करते हैं कि हमारी तीस वर्ष की साधना का क्या होगा? अब कैसे छोड़ें? उन श्रद्धालुओं से निवेदन हैं कि विचार करें कि आपको किसी शहर में जाना है, तीस किलोमीटर जाने के बाद पता चले कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं, तो तुरंत मुड़ जाना चाहिए। नहीं तो मंजिल दूर होती जाएगी। फिर भी कोई कहे कि हम तो तीस किलोमीटर सफर तय कर चुके हैं, अब कैसे छोड़ें इस रास्ते को? यह विचार तो बालक के या शराबी के हो सकते हैं। समझदार तो तुरंत मुड़ जाएगा। इसलिए उस साधना को तुरंत त्यागकर वास्तविक शास्त्रविधि अनुसार साधना ग्रहण करें।

एक राधास्वामी पंथी से ज्ञान चर्चा :-

शेष अगले अंक में ----------

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

(आठवीं किस्त)

(---- गतांक से आगे)

''राधास्वामी पंथी से ज्ञान चर्चा''

राधास्वामी पंथी भक्त दयासिंह(गाँव छोटा सिंगपुरा जि. रोहतक, हरयाणा) से ज्ञान चर्चा हुई जो निम्न है।

भक्त दयासिंह जी ने सन्त श्री दर्शन सिंह(सावन कृपाल रूहानी मिशन दिल्ली) से सन् 1983 में उपदेश प्राप्त किया। उनके द्वारा बताए भक्ति मार्ग पर अटूट श्रद्धा से लगा था।

मुझ दास(रामपाल दास) को सन् 1988 को नाम दान(एक परम सन्त कबीर पंथी स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज से) प्राप्त हुआ। सन् 1993 को मुझ दास को प्रचार तथा पाठ की आज्ञा प्रदान हुई तथा 1994 को नामदान करने की आज्ञा सद्गुरू रामदेवानन्द जी से प्राप्त हुई।

भक्त दयासिंह के रिश्तेदार ने मुझ दास से नाम प्राप्त है। उसने अपनी बहन(जिसकी शादी भक्त दयासिंह के लड़के से हुई है) के घर गाँव छोटा सिंगपुरा में सत्संग व पाठ करवाया उस समय भक्त दया सिंह जी से ज्ञान चर्चा हुई। सत्संग के पश्चात भक्त दयासिंह जी ने शंका व्यक्त की।

प्रश्न :- महाराज जी मैंने राधास्वामी पंथ से नामदान प्राप्त है। हमारे महाराज जी तो कहते है कि सतलोक में केवल प्रकाश ही प्रकाश है। सतपुरूष निराकार है। वही सतपुरूष जब सन्त रूप धर कर अपना ज्ञान देने आता है तब मनुष्य रूप में प्रकट होता है तथा फिर वापिस सतलोक सतनाम में जाकर ऐसे समा जाता है जैसे बूंद समुन्द्र में समा जाती है। जो उनके ज्ञान अनुसार भक्ति करता है वह आत्मा भी सच्चखण्ड(सतलोक) में ऐसे ही समुन्द्र में बूंद की तरह समा जाती है। वहाँ पर परमात्मा तथा आत्मा एक हो जाते हैं। यह देखो महाराज दर्शन सिंह जी के द्वारा दिया निर्मल ज्ञान। यह कह कर उस पुण्यात्मा दयासिंह जी ने पुस्तकः- जीवन चरित्र बाबा जैमलसिंह लेखक कृपाल सिंह जी, जो श्री दर्शन सिंह जी के पूज्य गुरू जी हैं तथा पुस्तक ''परमात्मा का साक्षात्कार'' जिसमें श्री दर्शन सिंह जी महाराज के सत्संग वचन है, दिखाई।

पुस्तक जीवन चरित्र बाबा जैमलसिंह पृष्ठ 102,103 पर सृष्टि रचना लिखी हैः- कृपा पढ़ें फोटो कापी 102,103 जिसमें लिखा है कि परमात्मा पहले निराकार था।

वही अनाम प्रभु साकार हुआ तो ऊपर के तीन मण्डल अगम लोक-अलख लोक और सतनाम (ये सन्त सतलोक को सतनाम भी कहते हैं) बन गया। ज्योति स्वरूप हो गया तथा धुन हो गया।

फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ 20 पर लिखा है कि परमात्मा ने इंसान बनाए। परमात्मा ने इंसान को अपने रूप के अनुसार बनाया।

कृप्या देखें पुस्तक जीवन चरित्र बाबा जैमलसिंह पृष्ठ 20 से फोटो कापी

उपरोक्त पुस्तकों से ही भक्त दया सिंह जी को समझाया कि श्री कृपाल सिंह जी राधास्वामी वाले ने सृष्टि रचना में कहा है कि सतपुरूष निराकार है फिर कहा है कि परमात्मा ने मनुष्य को अपने रूप के अनुसार बनाया है। जिस से परमात्मा मनुष्य जैसे शरीर का सिद्ध हुआ। अपने विचारों को आप ही गलत सिद्ध किया है।

कृप्या देखें लेखक दर्शन सिह जी महाराज राधास्वामी पंथी की पुस्तक ''परमात्मा का साक्षात्कार'' पृष्ठ 1,2 से फोटो कापी। इसी पुस्तक के पृष्ठ 123 पर।

जिसमें एक बार तो लिखा है कि हम परमात्मा को देख सकते हैं तथा ऐसे बातें कर सकते हैं जैसे आप और हम बातें कर रहे हैं। इस विचार में भगवान को मानव जैसा सिद्ध किया है। फिर कहा है कि परमात्मा आकार रहित है। परमात्मा केवल प्रकाश है परमात्मा का प्रकाश(ज्योति पुंज) अवर्णनीय है। फिर कहा है शास्त्रों में बताया है कि परमात्मा के एक रोम की शोभा करोड़ सूर्यों तथा चन्द्रमाओं की मिली-जुली रोशनी से भी अधिक तेजोमय है।

विचार करें:- उपरोक्त विचार तो बिल्कुल अबोध बालक ही व्यक्त कर सकता है।

जैसे कोई प्रश्न करे की सूर्य कैसा है? उत्तर मिले निराकार है। केवल उसका प्रकाश ही देखा जा सकता है। विचार करें सूर्य बिना प्रकाश किसका देखा?

परमात्मा का प्रकाश अवर्णनीय कहा है तो परमात्मा बिना प्रकाश, किसका देखा? परमात्मा के रोम के प्रकाश की शोभा का वर्णन किया है इससे भी परमात्मा मनुष्य सदृश सिद्ध हुआ। रोम से मनुष्य जैसे आकार का प्रमाण है।

पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 264 पर भी श्री सावन सिंह जी महाराज(जो श्री कृपाल सिंह जी के गुरू जी थे) ने कहा है कि रानी इन्दुमति कबीर साहेब की शिष्या थी। पहले कबीर साहेब परमात्मा के नूर में समाए बाद में इन्द्रमति परमात्मा के नूर में समाई। इन्द्रमति ने कबीर साहेब को अकालपुरूष अर्थात सतपुरूष रूप में देखा तब कहा कि मुझे नहीं पता था कि आप ही सतपुरूष अर्थात पूर्ण परमात्मा है। आपने पहले क्यों नहीं बताया।

कृप्या देखें पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 264 से फोटो कापी। इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 124 पर ।

श्री सावन सिंह जी सच्चाई को छुपा नहीं सके। भले ही उन्होंने अपने विचारों की पुष्टि करने का भी प्रयत्न किया है कि सतलोक में परमात्मा निराकार है केवल प्रकाश

ही प्रकाश है। यदि कबीर साहेब परमात्मा के नूर में समा गए होते तथा इन्द्रमति भी परमात्मा के नूर में(समुन्द्र में बूंद की तरह) समा गई होती तो एक दूसरे को सतलोक में कैसे देखते? वास्तव में परमात्मा साकार है। वह मानव सदृश शरीर युक्त है। उस का वास्तविक नाम कविर्देव(कबीर देव) है। सतलोक में सतपुरूष वाली उपाधी वाले शरीर के एक रोम की रोशनी करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं की रोशनी से भी अधिक है। यहाँ काल लोक में वही परमात्मा अपने तेजोमय शरीर पर हल्के प्रकाश का अन्य खोल(चोला) डाल कर आता है। जैसे बल्ब के ऊपर कोई प्लास्टिक का खोल चढा दिया जाए तो रोशनी नाम मात्र रह जाती है। ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कबीर जी की स्थिति है। वे सशरीर आते हैं सशरीर जाते हैं तथा सतलोक में व ऊपर के अन्य(अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोक) लोकों में भी स्वयं ही अन्य तेजोमय शरीर धारण कर लेते हैं।

राधास्वामी पंथ तथा इसकी शाखाओं का ज्ञान बिल्कुल जीरो(शुन्य) है। करोड़ों व्यक्यिों के अनमोल मानव जीव को व्यर्थ कर डाला। अब भी समय है भक्त समाज सावधान हो कर विचार करें तथा सत्य साधना मुझ दास(रामपाल दास) के पास है अविलम्ब व निःशुल्क प्राप्त करें।

भक्त दया सिंह दास(राधास्वामी पंथी) की आत्मकथा :-

शेष अगले अंक में ----------

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा तथा जय गुरुदेव पंथ भी राधास्वामी की शाखाएं हैं)

(नौवीं किस्त)

(---- गतांक से आगे)

भक्त दया सिंह दास(राधास्वामी पंथी) की आत्मकथा

मैं दया सिंह गाँव छोटा सिंहपुरा जि. रोहतक का रहने वाला हूँ। मैंने राधास्वामी पंथ में श्री दर्शन सिंह जी महाराज(दिल्ली वाले) से सन् 1983 में पाँच नामों का उपदेश लिया। सन्त दर्शन सिंह जी के बताए अनुसार साधना की धुन सुनने के लिए कई-कई घण्टों कान-आँख बंद करके साधना करता रहा। कुछ धुने तो सुनी परन्तु कान खराब हो गये। बहुत कम सुनता है। मेरे रिश्तेदार ने सन्त रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम करौंथा से नाम उपदेश ले रखा था। वह मुझसे कहता था कि मौसा जी आप भी हमारे गुरू जी से नाम ले लो। आपकी साधना तथा नाम गलत हैं। मैं कहता था। वाह जी वाह! क्या बात करता है। हमारे(राधास्वामी) पंथ में लाखों की संख्या में संगत है। जिनमें कर्नल साहब, कमिश्नर साहब, तहसीलदार साहब, मजिस्ट्रेट साहब तथा वकील साहब भी उपदेश लिये हैं। क्या वे मूर्ख हैं ? मेरे से फिर मत कहना गुरू बदलने को।

कुछ दिन बाद मेरा एक पुत्र ट्रैक्टर चला रहा था रेल की लाईन पार करने लगा उस सड़क पर रेल की फाटक नहीं लगी थी। रेलगाड़ी से टकराकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। मेरे रिश्तेदार ने मुझे फिर समझाया मैं नही माना परन्तु मेरे अन्य परिवार के सर्व सदस्यों ने सन्त रामपाल जी महाराज से उपदेश ले लिया। मैं भी उनके साथ सतलोक आश्रम में जाने लगा। स्पीकर के साथ बैठकर कान लगा कर सत्संग सुनता था। जो त्रुटियाँ सन्त रामपाल जी महाराज हमारे राधास्वामी पंथ की पुस्तकों में बताते थे। उन पुस्तकों का नाम तथा पृष्ठ व वचन संख्या नोट कर लेता फिर घर जाकर मिलान करता तो सत्संग में बताया विवरण सत्य मिलता तथा ढेर सारी त्रुटियाँ राधास्वामी पंथ के मुखिया श्री शिवदयाल जी महाराज(राधास्वामी) जी के वचनों में मिली। जिनका कोई सिर-पैर नहीं है। पुस्तक सारवचन राधास्वामी वार्तिक पृष्ठ-3 वचन 4 में सतनाम के स्थान के विषय में लिखा है। उसी(सतनाम) को सतशब्द और सारशब्द और सतलोक और सच्चखण्ड और सतपुरूष और सतनाम भी कहते हैं। राधास्वामी के विषय में लिखा है कि राधास्वामी सबसे ऊँचा मुकाम(स्थान) है। यही नाम सच्चे मालिक का है। इसे स्थान भी नहीं कह सकते, इसे कहते है।

सन्त रामपाल जी के सत्संग वचनों के आधार से ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज'' पुस्तक के वचन 31 में देखा श्री शिवदयाल जी महाराज (राधास्वामी पंथ के प्रर्वतक) का कोई गुरू नहीं था। वचन 65 में देखा वे हुक्का पीते थे। उन्होंने किसी को(जैमल सिंह जी महाराज या सालगराम जी आदि को) नामदान करने का आदेश नहीं दिया था। श्री सावन सिंह जी महाराज को श्री जैमल सिंह जी महाराज के बाद डेरा ब्यास पंजाब की गद्दी प्राप्त हुई। श्री सावन सिंह जी महाराज के शिष्य श्री कृपाल सिंह जी थे। श्री कृपाल सिंह को नाम दान का अधिकार नहीं था। इसी पुस्तक ''जीवन चरित्र हजूर स्वामी जी महाराज'' वचन 65 में देखा कि वे अपने शिष्या बुक्की में प्रवेश करके प्रेत बनकर बोलते थे। मृत्यु पश्चात भी बुक्की के द्वारा(बुक्की के मुख से) हुक्का पीते थे तथा भोजन भी खाते थे। बुक्की में उसके जीवन पर्यन्त प्रवेश रहे। इस तरह के प्रमाण देखकर मैंने(दया सिंह दास ने) भी सन्त रामपाल जी महाराज से नामदान ले लिया। मेरे शरीर में गलत साधना हठयोग द्वारा करने से कई रोग हो गये थे। जिनसे बहुत परेशान रहता था। सन्त रामपाल जी महाराज से उपदेश लेने के पश्चात् सर्व रोग भी समाप्त हो गये। हमारे को राधास्वामी पंथ में सतपुरूष निराकार बताया जाता था तथा प्रारब्ध कर्म का दुःख या सुख भोगना ही पड़ेगा, भक्ति करते रहो सतलोक पहुँच जाओगे। सन्तमत भाग-4 पृष्ठ 125,126 पर श्री सावन सिंह महाराज ने स्पष्ट मना किया है कि सतगुरू का काम किसी की बिमारी हटाना अर्थात कष्ट दूर करना नहीं है। सन्त रामपाल जी ने प्रमाण दिखाए की सार वचन वार्तिक पुस्तक जो श्री शिवदयाल जी(राधास्वामी) द्वारा सत्संग वचनों को संग्रह है में भाग प्रथम वचन 12 लिखा है कि सतलोक में गए भक्त सतपुरूष का दर्शन करते हैं। निराकार का दर्शन कैसा? अपने विचारों को आप ही गलत सिद्ध किया है।

सन्त रामपाल जी महाराज ने बताया कि पूर्ण परमात्मा कबीर जी अपने साधक के प्रारब्ध के पाप कर्म से होने वाले कष्ट का निवारण कर देता है। यदि किसी के पैर में कांटा लगा हो। उसे कोई कहे कि कांटा तो निकल नहीं सकता आप जूते पहन लो भविष्य में कांटा नहीं लगेगा। कांटा लगे पैर में जूता पहना नहीं जा सकता। पहले कांटा निकले फिर जूता पहना जाएगा। फिर कभी जूते नहीं निकालेगा उसे डर रहेगा कहीं फिर कांटा न लग जाऐ। इसी प्रकार साधक का दुःख रूपी कांटा निकलेगा अर्थात कष्ट निवारण होगा तो वह फिर अधिक साधना करेगा। कष्ट निवारण नहीं हुआ तो भक्ति में रूचि ही नहीं बन सकती।

मैंने पूर्ण सन्त रामपाल जी महाराज से प्रश्न किया :-हे महाराज ! मैं जो आँखें बंद करके कुछ प्रकाश देखता था वह क्या है? जगत् गुरू रामपाल जी महाराज ने उत्तर दिया :- जैसे सर्दी के मौसम में धुंध गिरती है। सूर्य का प्रकाश नाम मात्र दिखाई देता है। परन्तु सूर्य दिखाई नहीं देता। सूर्य धुंध से ऊपर साकार

चमक रहा होता है उसी का प्रकाश धुंध को पार करके नीचे आ रहा होता है कोई कहे कि मैंने सूर्य का प्रकाश देखा। परन्तु सूर्य निराकार है, क्या ये विचार समझदार व्यक्ति के हो सकते हैं? वास्तव में पूर्ण परमात्मा अर्थात् सतपुरूष मानव जैसे तेजोमय शरीर में साकार है तथा उसी पूर्ण परमात्मा के प्रकाश का प्रतिबिम्बित प्रकाश का अंश ही काल(ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्मण्डों में दिखाई देता है। इस ब्रह्मण्डिय प्रकाश को पिण्ड(शरीर) में देखना परमात्मा प्राप्ति नहीं है। अपितु काल(ब्रह्म) द्वारा फैलाया मिथ्या भ्रम जाल है। जैसे सूर्य का प्रकाश जल पर गिरा, जल से प्रतिबिम्ब दिवार पर पड़ा। दिवार पर सूर्य दिखाई नहीं देता केवल प्रकाश दिखाई देता है। इसी प्रकाश सतपुरूष का प्रकाश परब्रह्म तथा ब्रह्म के अन्य लोकों में ऐसे दिखाई देता है जैसे दिवार पर सूर्य के प्रकाश का जल से बना प्रतिबिम्ब होता है। उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध है कि जो परमात्मा को निराकार कहते हैं व कहते है कि केवल प्रकाश देखा जा सकता है तथा गुरू रूप में ही सत्यपुरूष के दर्शन घट(शरीर/पिण्ड में) करना परमात्मा प्राप्ति है तथा शरीर में धुन सुनना ही प्रभु प्राप्ति का प्रतीक है, वे मिथ्या भाषी हैं। उनका ज्ञान व साधना शास्त्र विरूद्ध व मनघड़ंत है। क्योंकि शरीर (पिण्ड) में सुनी जाने वाली धुन तो काल के लोक की हैं। सतलोक की वास्तविक धुन तो पिण्ड(अण्ड) के पार है जिसका प्रमाण शब्द ''कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'' की 31-32 कली में है।

उपरोक्त प्रमाणों को देखकर तथा संत रामपाल जी से तत्व ज्ञान को सुनकर कलेजा मुंह को आने लगा। हे प्रभु ! कितने वर्ष खो दिए नादानों के चक्र में। सर्व शंकाओं का समाधान होने पर सन्त रामपाल जी महाराज का उपदेश प्राप्त करके आत्मिक शान्ति प्राप्त हुई तथा शरीर का सुख, धन लाभ तथा परिवार में सुख पूर्ण रूप से प्राप्त है।

मेरी सर्व प्रेमी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप भी प्रमाणों को स्वयं देखो तथा सत्य को जानकर अपना जीवन सफल करें। अतिशीघ्र सन्त रामपाल जी महाराज से उपदेश ग्रहण करें।

सतगुरु चरणों का दास
भक्त दया सिंह दास

कुछेक श्रद्धालु कहते हैं कि गुरू बदलने में पाप तो नहीं लगेगा? उन श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जैसे एक डाक्टर(वैद्य) से उपचार नहीं होता है तो दूसरा डाक्टर बदलने में लाभ होता है हानि नहीं होती। ठीक इसी प्रकार गुरू को जानो। इसलिए शास्त्रविधि विरूद्ध ज्ञान वाले गुरू को त्यागकर पूर्ण गुरू धारण करना हितकर है। पाप नहीं पूण्य है। कुछ श्रद्धालु संकोच करते हैं कि हम तीस वर्ष की साधना का क्या होगा? अब कैसे छोड़ें? उन श्रद्धालुओं से निवेदन हैं कि विचार करें कि आपको किसी शहर में जाना है, तीस किलोमीटर जाने के बाद पता चले कि आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं,

तो तुरंत मुड़ जाना चाहिए। नहीं तो मंजिल दूर होती जाएगी। फिर भी कोई कहे कि हम तो तीस किलोमीटर सफर तय कर चुके हैं, अब कैसे छोड़ें इस रास्ते को? यह विचार तो बालक के या शराबी के हो सकते हैं। समझदार तो तुरंत मुड़ जाएगा। इसलिए उस साधना को तुरंत त्यागकर वास्तविक शास्त्रविधि अनुसार साधना ग्रहण करें।

कबीर परमेश्वर कहते हैं किः-

झूठे गुरू को त्यागन में तनिक न लावे वार। द्वार न पावै शब्द का भटकै द्वार–द्वार।

कृप्या निशंकोच अधुरे गुरू को त्याग दें तथा पूर्ण सन्त की शरण ग्रहण करें।

सर्व ब्रह्मण्डों का वर्णन :-

शेष अगले अंक में ----------

क्या हम परमात्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं ?
(Can We See God का हिन्दी रूपांतर)
संत दर्शनसिंह जी महाराज
से
भेंट वार्ता

(सन् १९७८ की प्रथम अमेरिका यात्रा के दौरान शिकागो रेडियो से प्रसारित भेंट वार्ता के आधार पर)

प्रश्न : क्या हम परमात्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं?

उत्तर : हाँ, हम इसी जीवन में प्रभु का साक्षात्कार कर सकते हैं।

प्रश्न : आप जो बात कह रहे हैं उसका क्या प्रमाण है?

उत्तर : जिस प्रकार से हलवे का प्रमाण उसके खाने में निहित है उसी प्रकार आत्मिक उपलब्धि का प्रमाण उसके अनुभव में है। हम ज्ञान और प्रभु का अनुभव परा‌विद्या के माध्यम से प्राप्त करते हैं जो कि संतमत का मार्ग है। स्वामी विवेकानन्द (जिनका पूर्व नाम नरेन्द्र था) ने रामकृष्ण परमहंस से एक बार पूछा, "प्रभु, क्या आपने परमात्मा को देखा है?" उन्होंने जवाब दिया, "हाँ बेटे मैंने परमात्मा को देखा है?" उतनी ही स्पष्टता के साथ जितनी स्पष्टता से मैं तुम्हें देख रहा हूँ।"

परमात्मा जब व्यक्त हुआ (इज़हार में आया) उसने दो रूप : परमात्मा का प्रकाश और मण्डलों का राग (नाद) धारण किए। इन दो सिद्धान्तों से सम्पर्क स्थापित कर न केवल हम परमात्मा को देख ही सकते हैं वरन् हम उससे रूबरू (आमने-सामने) बातचीत भी कर सकते हैं। उसका मार्गदर्शन भी पा सकते हैं और अंत में उसमें अभेद भी हो सकते हैं।

प्रश्न : परमात्मा देखने में कैसा है?

उत्तर : परमात्मा आकार रहित है। परमात्मा पूर्ण ज्योति, पूर्ण प्रकाश और मूलभूत प्रभा (तेज़) है। परमात्मा का ज्योति पुंज अवर्णनीय है, फिर भी शास्त्रों में बताया गया है कि करोड़ों सूर्य-चन्द्र का एकत्रित प्रकाश उसके एक रोम के प्रकाश की तुलना नहीं कर सकता। परमात्मा को उसके मूलभूत ज्योतिस्वरूप में देखना तभी सम्भव है

पुस्तक ''परमात्मा का साक्षात्कार'' पृष्ठ 1-2 से फोटो कापी। (I)

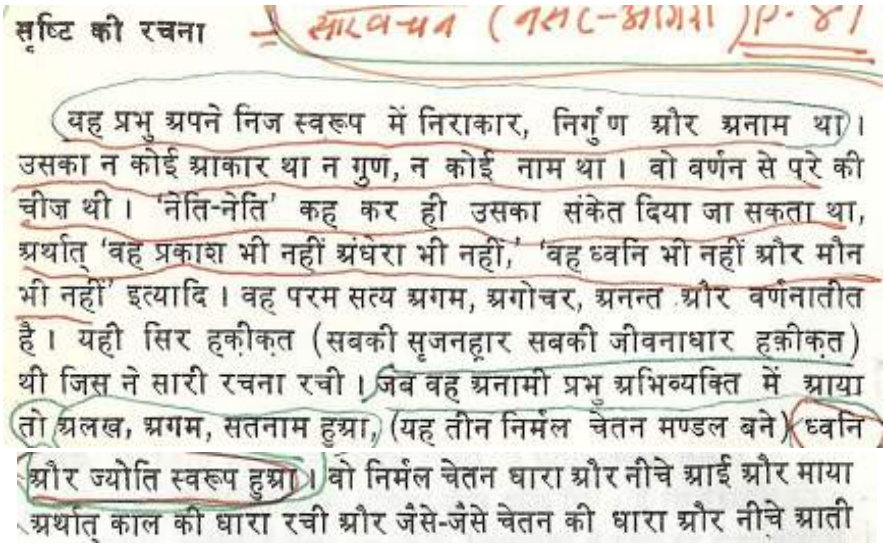

सृष्टि की रचना

वह प्रभु अपने निज स्वरूप में निराकार, निर्गुण और अनाम था। उसका न कोई आकार था न गुण, न कोई नाम था। वो वर्णन से परे की चीज थी। 'नेति-नेति' कह कर ही उसका संकेत दिया जा सकता था, अर्थात् 'वह प्रकाश भी नहीं अंधेरा भी नहीं,' 'वह ध्वनि भी नहीं और मौन भी नहीं' इत्यादि। वह परम सत्य अगम, अगोचर, अनन्त और वर्णनातीत है। यही सिर हक़ीक़त (सबकी सृजनहार सबकी जीवनाधार हक़ीक़त) थी जिस ने सारी रचना रची। जब वह अनामी प्रभु अभिव्यक्ति में आया तो अलख, अगम, सतनाम हुआ, (यह तीन निर्मल चेतन मण्डल बने) ध्वनि और ज्योति स्वरूप हुआ। वो निर्मल चेतन धारा और नीचे आई और माया अर्थात् काल की धारा रची और जैसे-जैसे चेतन की धारा और नीचे आती

पुस्तक ''जीवन चरित्र बाबा जैमल सिंह'' पृष्ठ 102,103 से फोटो कापी (II)

परमात्मा ने इन्सान बनाये। इन्सान को उस प्रभु ने अपना रूप बनाया। इन्सान ने आगे समाज बनाए और उनको अपने रंग में रंग दिया

पुस्तक ''जीवन चरित्र बाबा जैमल सिंह'' पृष्ठ 20 से फोटो कापी। (III)

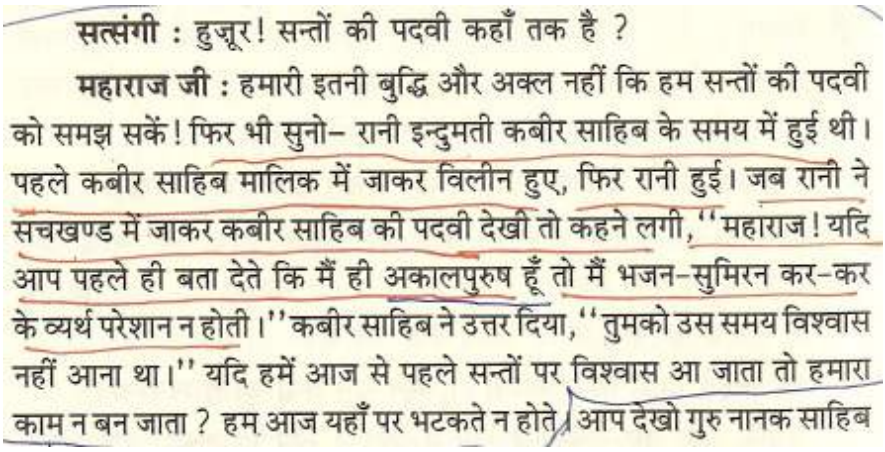

सत्संगी : हुज़ूर! सन्तों की पदवी कहाँ तक है ?

महाराज जी : हमारी इतनी बुद्धि और अक्ल नहीं कि हम सन्तों की पदवी को समझ सकें! फिर भी सुनो– रानी इन्दुमती कबीर साहिब के समय में हुई थी। पहले कबीर साहिब मालिक में जाकर विलीन हुए, फिर रानी हुई। जब रानी ने सचखण्ड में जाकर कबीर साहिब की पदवी देखी तो कहने लगी, ''महाराज! यदि आप पहले ही बता देते कि मैं ही अकालपुरुष हूँ तो मैं भजन-सुमिरन कर-कर के व्यर्थ परेशान न होती।'' कबीर साहिब ने उत्तर दिया, ''तुमको उस समय विश्वास नहीं आना था।'' यदि हमें आज से पहले सन्तों पर विश्वास आ जाता तो हमारा काम न बन जाता ? हम आज यहाँ पर भटकते न होते। आप देखो गुरु नानक साहिब

पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ -264 से फोटो कापी। (IV)

राधा स्वामी पंथ की कहानी-उन्हीं की जुबानी : जगत गुरु

(धन-धन सतगुरु, सच्चा सौदा, कृपाल सिंह, ठाकुर सिंह तथा दिनोंद भिवानी वाले पंथ तथा जय गुरुदेव पंथ भी इसी की शाखाएं हैं)

(दसवीं किस्त)

(------ गतांक से आगे)

सर्व ब्रह्मण्डों का पूरा विवरण तथा कहाँ है? कैसा है? तथा कौन है भगवान? :- *प्रथम अकह लोक, दूसरा अगम लोक, तीसरा अलख लोक और चौथा सतलोक है। उपरोक्त चारों लोकों में पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म ही भिन्न-2 रूप धारण करके मनुष्य रूप में साकार विराजमान है। उसी परमात्मा के उपमात्मक नाम अर्थात् पदवी के नाम हैं। अनामी पुरुष, अगम पुरुष, अलख पुरुष तथा सतपुरुष।(जैसे देश के माननीय प्रधान मंत्री जी के शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा प्रधान मंत्री उनका पदवी का नाम होता है। प्रधान मंत्री कई विभाग अपने पास रखता है तो व्यक्ति वही होता है परंतु पद भिन्न-2 होते हैं फिर वही व्यक्ति गृह मंत्री, रक्षा मंत्री आदि कहलाता है तथा प्रत्येक कार्यालय में उनकी शक्ति भिन्न होती है) नीचे सात शंख ब्रह्मण्ड अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के हैं तथा फिर इक्कीस ब्रह्मण्ड क्षर पुरुष (ब्रह्म/काल) के हैं। तीन पुत्र ब्रह्म (काल) तथा दुर्गा से उत्पन्न रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी केवल काल(ब्रह्म) के एक ब्रह्मण्ड में एक-2 विभाग के स्वामी(प्रभु) हैं। मानव शरीर को पिण्ड भी कहते हैं। इसी पिण्ड में एक ब्रह्मण्ड का नक्शा (मानचित्र) है। ब्रह्मण्ड का आकार अण्डे जैसा है। इसलिए इसे अण्ड भी कहते हैं। तीन स्थिति नहीं हैं। जैसे राधास्वामी पंथ तथा शाखा पंथ धन-धन सतगुरू- सच्चा सौदा वाले संतों ने अण्ड-पिण्ड तथा ब्रह्मण्ड को भिन्न-2 बता कर बेतुका जोड़ जोड़ा है।*

वास्तव में सतलोक वह स्थान है जहां पर सतपुरुष रहता है। सतनाम दो अक्षर का मंत्र है जिसमें एक ओम् तथा दूसरा तत् यह भी गुप्त है तथा सारनाम (सतशब्द) है जो पूर्ण परमात्मा ने पूर्ण रूप से गुप्त रखा है। जो अब मुझ दास को दिया है। सारशब्द उस अटल वचन शक्तियुक्त समर्थ परमात्मा का नाम है जिसने सर्व उत्पति अपने शब्द(वचन) से की है इसलिए उसे शब्द स्वरूप राम भी कहते हैं। उसको तो प्राप्त करना है। जैसा कि आप जी ने इसी पुस्तक के पृष्ठ 49-50 पर सातवीं किस्त में नल द्वारा जल प्राप्त करने की विधि में पढ़ा। केवल सतपुरुष, अकाल मूर्ति, शब्द

स्वरूपी राम कहने से परमात्मा प्राप्ति नहीं है। यह तो एक ही शक्ति के पर्यायवाची नाम हैं। सतपुरुष का अर्थ है अविनाशी प्रभु, अकाल मूर्ति का अर्थ भी है कि जिस मुर्ति(साकार स्वरूप) का नाश न हो अर्थात् अविनाशी प्रभु, तथा शब्द स्वरूपी राम का भी अर्थ है अविनाशी प्रभु। शब्द अविनाशी है जो परमात्मा की अटल आदेशात्मक आवाज है इसलिए उस परमात्मा को पाने के मन्त्र को सारशब्द भी कहते हैं। वह सारनाम जाप करने का है तथा धुनात्मक शब्द अर्थात अनहद धुन अन्य वस्तु है वह परमात्मा नहीं है। केवल जल-पानी-नीर कहने से जल नहीं मिलेगा। जल प्राप्ति की विधि भिन्न है जो पांचवीं किस्त में वर्णित है। गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 721 पर महला पहला में स्पष्ट किया है कि (कून करतार) शब्द स्वरूपी राम अर्थात् अविनाशी प्रभु(हक्का कबीर) सत कबीर है। यही प्रमाण महला पहला की वाणी पृष्ठ 24 पर लिखा है - 'धाणक रूप रहा करतार'। स्वयं श्री सावन सिंह जी महाराज राधास्वामी पंथ वाले भी स्वीकार करते है कि पूर्ण परमात्मा अर्थात अकाल पुरूष कबीर साहेब जी हैं। पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग 4 पृष्ठ 264 पर श्री सावन सिंह जी ने लिखा है कि कबीर साहेब को इन्दुमति रानी ने सतलोक में अकाल पुरूष रूप देखा तो कहा कि मुझे नहीं पता था कि आप ही अकाल पुरूष अर्थात् पूर्ण परमात्मा हो। कृप्या पढ़ें फोटो कापी पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ-264, इसी पुस्तक (सच्चखण्ड का संदेश) के पृष्ठ 130 पर।

विचार करें:- राधास्वामी धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा सिरसा पंथ वाले सतलोक में केवल प्रकाश ही कहते हैं तथा सतपुरूष को निराकार ही बताते हैं तथा मोक्ष प्राप्त आत्मा परमात्मा में समुन्द्र में बूंद की तरह समा जाती है, भिन्न नहीं रहती। इन्दुमति रानी ने तो ऊपर सतलोक में कबीर जी को सतपुरूष(अकाल पुरूष) रूप में भिन्न देखा था अर्थात् कबीर परमात्मा को सतलोक में इन्दुमति रानी ने साकार में देखा था। इस से दो बातें सिद्ध हुई :-

(1) पूर्ण परमात्मा (सतपुरूष) कबीर जी काशी वाला जुलाहा है।

(2) सतपुरूष साकार है मनुष्य जैसा है राधास्वामी पंथ के सन्त अपने सिद्धान्त को आप ही गलत कर रहे हैं। जो वास्तव में गलत ही है।

राधास्वामी मत का सिद्धान्त है कि मोक्ष प्राप्त आत्मा सतलोक में जाकर निराकार परमात्मा सतपुरूष में ऐसे समा जाती है जैसे बून्द समा जाती है समुन्द्र में। यदि कबीर जी पहले सतपुरूष में लीन हो गए थे तथा बाद में रानी इन्दुमति सतपुरूष में लीन हुई थी (जैसा पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग 4 पृष्ठ 264 में लिखा है) तो भिन्न-2 रहने का प्रश्न ही नहीं उठता। श्री सावन सिंह महाराज सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 264 पर तथा भाग 5 पृष्ठ 223 पर स्पष्ट कह रहे हैं कि इन्दुमति रानी ने सतलोक में कबीर जी को अकाल पुरूष अर्थात सतपुरूष रूप में देखा। यदि लीन हो जाती तो बूंद समुन्द्र में मिलने के पश्चात् अलग अस्तित्व नहीं रहता। वास्तविक्ता यही

है कि सतपुरूष कबीर परमेश्वर है तथा मानव सदृश शरीर में है। यह विवरण(जो इन्द्रमति रानी का है) कबीर सागर में लिखा है, जो सत्य है। सतलोक(सच्चखण्ड) में सतपुरूष(परम अक्षर ब्रह्म) मनुष्य सदृश साकार है। एक तत्व से बना नूरी शरीर है। जिस के एक रोम कूप की शोभा करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है। इसी प्रकार मोक्ष प्राप्त आत्माऐं तथा अन्य पूर्व सृष्टि वाली आत्माऐं भी मानव सदृश साकार हैं। परन्तु सतलोक में रहने वाली आत्माओं के शरीर की शोभा सोलह सूर्यों के प्रकाश तुल्य है। यही प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मन्त्र 1 तथा 32 में है मन्त्र 1 में कहा है:-(अग्नेः) परमेश्वर(तनूः) सशरीर(असि) है। (त्वा) उस (विष्णवे) सर्व पालन कर्ता सर्वेश्वर(सोमस्य) अमर पुरूष का अर्थात् सतपुरूष का (तनूः) शरीर (असि) है। मन्त्र 32 में लिखा है (कविरंघारिरसि) पाप का शत्रु अर्थात पाप नाशक कविर्देव(कबीर परमेश्वर) है। वही(बम्भारिरसि) बन्धनों का शत्रु अर्थात बन्दी छोड़ है। जो(ऋतधामा असि) सतलोक में रहने वाला है। वह (स्वर्ज्योतिः) स्वयं प्रकाशित है। अर्थात तेजोमय शरीरयुक्त है। यही प्रमाण पवित्र बाईबल में उत्पति ग्रन्थ में पृष्ठ 2 पर 1:20, 2:5 वाणी सं. 26 से 28 में लिखा है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया है।(इस से सिद्ध हुआ कि परमात्मा भी मनुष्य सदृश शरीर युक्त साकार है।) यह भी लिखा है कि परमेश्वर ने छः दिन में सृष्टि रचना की तथा सातवें दिन तख्त पर विश्राम किया। यही प्रमाण पवित्र कुर्आन शरीफ में सुरत फुर्कानि सं. 25 आयत सं. 58,59 में लिखा है कि कबीर नामक परमात्मा छः दिन में सृष्टि रचकर सातवें दिन तख्त पर जा विराजा।(पवित्र कुर्आन शरीफ में लगभग चालीस प्रतिशत विवरण पवित्र बाईबल वाला है) आयत सं. 58,59 में यह भी प्रमाण है कि कुर्आन शरीफ का ज्ञान दाता प्रभु अपने पैगम्बर(अवतार) हजरत मुहम्मद जी को कह रहा है कि जो परमात्मा तुझे जिन्दा साधु के रूप में मिला था वही वास्तव में अविनाशी तथा पापों को क्षमा(नाश) करने वाला है। उसकी खबर किसी बाखबर से पूछो अर्थात तत्वदर्शी(पूर्ण) सन्त से पूछो। मैं(कुर्आन शरीफ ज्ञान दाता) नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों सद्ग्रन्थों(पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुर्आन शरीफ) ने रल-मिल कर सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मनुष्य सदृश शरीर में साकार है। उसका नाम अल्लाह अकबर अर्थात परमात्मा कबीर है।

यही प्रमाण आदि ग्रन्थ महला पहला की वाणी पृष्ठ 721 पर श्री नानक साहेब जी ने दिया है कहा है कि(कून करतार) शब्द स्वरूपी परमात्मा(हक्का कबीर) सत कबीर है। आदि ग्रन्थ पृष्ठ 24 वचन 29 में महला पहला की वाणी में श्री नानक साहेब ने यह भी प्रमाणित किया है कि वही सतकबीर काशी(बनारस) में धाणक(जुलाहा) रूप में प्रकट था।

कबीर परमात्मा को सतलोक में देखने के पश्चात श्री नानक जी ने प्रथम

उदासी वाली यात्रा में बनारस(काशी) में धाणक(जुलाहा) रूप में देख कर कहा थाः-

फाई सूरत मलूकि वेश– इह ठगवाड़ा ठगी देश खरा सियाणा बहुता भार–धाणक रूप रहा करतार।

उपस्थित व्यक्तियों से श्री नानक जी ने कहा था कि यह मन को आकृषित करने वाला चेहरा जहाँ जाता है वहाँ वैसी ही वेशभूषा बना लेता है।(क्योंकि पूर्ण परमात्मा कबीर जी श्री नानक जी को बेई नदी पर एक जिन्दा साधु के रूप में मिले थे। सतलोक में सतपुरूष रूप में तथा फिर काशी में धाणक रूप में तब उपरोक्त वाणी कही थी) उपरोक्त सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थों से सिद्ध हुआ कि सर्व सृष्टि रचनहार(करतार) मानव सदृश शरीरयुक्त साकार है तथा उसका नाम कबीर है। यह वही सतकबीर है जो काशी में जुलाहा(धाणक) की लीला करके सशरीर सतलोक चला गया था। यही काशी में जुलाहे(धाणक) की लीला करने वाला कबीर अकाल पुरूष सन् 1727 में आदरणीय गरीबदास जी महाराज(गांव छुड़ानी जिला-झज्जर, हरयाणा वाले) को जिन्दा महात्मा के रूप में सशरीर मिला था। जब गरीब दास जी महाराज की आयु दस वर्ष की थी तथा जंगल में गऊऐं चरा रहे थे। प्रत्यक्ष दृष्टा कई अन्य बड़े ग्वाले भी थे। उस स्थान पर एक यादगार भी बनी है। श्री नानक देव जी की तरह परमेश्वर कबीर जी ने बालक गरीब दास जी को भी सतलोक के दर्शन करा के वापिस छोड़ा था। तब गरीब दास जी ने भी सतलोक तथा अन्य लोकों व ब्रह्मण्डों का आँखों देखा हाल अपनी अमृतवाणी में वर्णन किया है।

गरीब - हम सुलतानी नानक तारे, दादु को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी मांही कबीर हुआ।।
जिन्दा जोगी जगत गुरू, मालिक मुरसीद पीर।
दोनों दीन झगड़ा मंड्या, पाया नहीं शरीर।।
अनन्त कोटी ब्रह्मण्ड का, एक रती नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजन हार।।

उपरोक्त वाणी में सन्त गरीब दास जी महाराज ने बताया है कि हम अर्थात मैं(गरीब दास) तथा अब्राहिम सुलतान जी तथा नानक जी तथा दादु जी आदि सब को कबीर परमेश्वर ने पार किया। वह जगत गुरू कुल का मालिक जिन्दा रूप में मुझे मिला तथा वही काशी(बनारस) में जुलाहे(धाणक) रूप में एक सौ बीस वर्ष लीला करके मगहर स्थान से सशरीर चला गया। उनका शरीर नहीं मिला था केवल सुगंधित पुष्प ही मिले थे। उस को कोई नहीं समझ सका।

उपरोक्त सदग्रन्थों तथा आँखों देखने वाले संतों, गवाहों(साक्षियों) ने स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया कि सर्व सृष्टि रचनहार सर्व का पालन कर्ता तथा पाप नाशक, पूर्ण मोक्ष दायक काल की कारागार से छुड़ाने वाला बन्दी छोड़, तेजोमय शरीर युक्त सतलोक में तथा पृथ्वी लोक आदि में लीला करने वाला सतपुरूष अर्थात अविनाशी

परमात्मा काशी वाला जुलाहा कबीर है। इससे सिद्ध है कि राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरू पंथ तथा अन्य शाखा पंथों का ज्ञान सही नहीं है तथा भक्ति विधि भी शास्त्र विरूद्ध मनमाना आचरण(पूजा) है जो लाभदायक नहीं है।

राधास्वामी पंथ तथा धन-धन सतगुरू पंथ व शाखाओं के सन्तों ने श्रद्धालुओं को उल्टी पढाई पढा रखी है कि सन्त गुरू रूप धार कर आता है वही सृजन हार है। परन्तु सतलोक में परमात्मा निराकार है केवल परमात्मा का प्रकाश है। काल लोक में भक्ति मार्ग दर्शन करके सन्त गुरू तथा साधक सतलोक में परमात्मा के प्रकाश में ऐसे समा जाते हैं जैसे बून्द समा जाती है समुन्द्र में। वहाँ सतलोक में आत्मा तथा परमात्मा का अलग अस्तित्व नहीं रहता। जबकि वास्तविकता इन के लोकवेद जिसको(दन्त कथा) के विपरित है जो ऊपर वर्णित है। जिसको श्री सावन सिंह जी महाराज राधास्वामी पंथी भी सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 264 पर स्वीकार करते हैं कि कबीर जी को उनकी शिष्या इन्दुमति ने सतलोक में अकाल पुरूष के रूप में देखा। इससे स्वसिद्ध है कि पूर्ण परमात्मा कबीर है वह सशरीर है तथा आत्मा तथा परमात्मा की भिन्न-2 स्थिती है। ''शब्द'' ''कर नैनों दीदार महल में प्यारा है'' में कबीर परमेश्वर की वाणी है जिसे श्री सावन सिंह जी ने खोला है लिखा है कि सतलोक में आत्मा का प्रकाश सोलह सूर्यों के समान हो जाता है तथा परमात्मा के एक रोम का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है। इस व्याख्या से भी राधास्वामी पंथ का सिद्धान्त गलत सिद्ध हो जाता है।

इससे सिद्ध हुआ कि राधास्वामी पंथ तथा उसकी शाखाऐं धन-धन सतगुरू-सच्चा सौदा, जयगुरू देव मथूरा वाला, दिनोंद भिवानी वाला व कृपाल सिंह दिल्ली वाला पंथ पूर्ण रूप से निराधार सिद्धान्त पर टिका है। इन पंथों के पवित्र आत्मा सन्त तथा श्रद्धालु अनुयायी अपना अनमोल जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। उनसे करबद्ध प्रार्थना है कि ठण्डे दिमाग से विचार करें तथा मुझ दास(रामपाल दास) को पूज्य कबीर परमेश्वर जी का भेजा कुत्ता जानें जो सर्व प्रभु चाहने वाले परमात्मा धन के धनियों को जगाने के लिए भौंक रहा है। जो जाग जाएगा वह लाभ उठाएगा। कृप्या मुझ दास को अपना दास या छोटा-बड़ा भाई जान कर आत्म कल्याण कराऐं। जिससे आप का जन्म-मरण का दीर्घ रोग समाप्त होगा तथा जब तक इस संसार में रहोगे आप का शरीर स्वस्थ, धन लाभ, परिवार में सुख सदा बना रहेगा।

प्रभु प्रेमी पाठकों को उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो गया कि कहाँ है कैसा है व कौन है भगवान ?

सन्त रामपाल दास महाराज

सत्संगी : हुजूर! सन्तों की पदवी कहाँ तक है ?

महाराज जी : हमारी इतनी बुद्धि और अक्ल नहीं कि हम सन्तों की पदवी को समझ सकें! फिर भी सुनो– रानी इन्दुमती कबीर साहिब के समय में हुई थी। पहले कबीर साहिब मालिक में जाकर विलीन हुए, फिर रानी हुई। जब रानी ने सचखण्ड में जाकर कबीर साहिब की पदवी देखी तो कहने लगी, ''महाराज! यदि आप पहले ही बता देते कि मैं ही अकालपुरुष हूँ तो मैं भजन-सुमिरन कर-कर के व्यर्थ परेशान न होती।'

(पुस्तक ''सन्तमत प्रकाश'' भाग-4 पृष्ठ- 264 से फोटो कापी)

''भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा''

बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज की दया

मेरा नाम दीपक दास पुत्र बलजीत सिंह, गांव महलाना जिला सोनीपत है। हम तीन पीढीयों से राधास्वामी पंथ डेरा बाबा जैमल सिंह से नाम उपदेशी थे। सबसे पहले मेरी दादी जी की माता जी यानि मेरे पिता जी की नानी जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा था। उसके बाद मेरे दादा-दादी जी और फिर मेरे माता-पिता जी ने भी नाम लिया हुआ था। हम भी गुरूविन्द्र जी महाराज को पूर्ण पुरूष मानते थे तथा इस पंथ में पूर्ण श्रद्धा यह सोच कर रखते थे कि यह संसार में प्रभु प्राप्ति का श्रेष्ट पंथ है और उनके विशाल डेरे और विशाल संगत समूह को देखकर विशेष आकर्षित थे और सेवा करने के लिए डेरा बाबा जैमल सिंह व्यास (पंजाब) में तथा छत्तरपुर पूसा रोड़ दिल्ली भी जाते रहते थे। लेकिन इस पंथ में उम्र विशेष में नाम दिया जाता है इसलिए अभी मैं इस पात्रता के लिए अयोग्य था।

मेरे माता-पिता जिस दिन छत्तरपुर से नाम लेने के लिए गये हुए थे उसी दिन मेरे छोटे भाई (उम्र 5) के हाथ से पड़ोस के एक बच्चे की आँख में कोई वस्तु अनजाने में लग गई। जब शाम को नाम उपदेश लेकर मेरे माता-पिता वापिस आए। उसी दिन से हमारा व हमारे पड़ोसियों का वैर हो गया कि आपके बेटे ने हमारे बेटे की आँख में जानबूझ कर चोट मारी है और उसी दिन से हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

उसी दौरान मेरे दादा जी का बिमारी के कारण देहांत हो गया जब मेरे दादा जी का पार्थिक शरीर दूसरे कमरे में रखा हुआ था तो उस समय मेरी दादी जी, जिनका देहांत हुए 12 वर्ष हो चुके थे, मेरी बुआ प्रेम में प्रेत की तरह प्रवेश करके बोली।(मेरी दादी ने भी राधास्वामी पंथ से प्राप्त पाँच नामों की बहुत ज्यादा साधना कर रखी थी। वे नियमित रूप से तीन बजे ही व दिन में भी भजन व सुमरन करने के लिए बैठ जाती थी और घण्टों राधास्वामी पंथ के बताये नाम का जाप व अभ्यास किया करती थी।) कि आज तुम्हारे दादा जी का जीवन संस्कार समाप्त हो गया इसलिए मैं तुम्हें संभालने आई हूँ। मेरी दादी जी को जीवित अवस्था में सांस की बिमारी के कारण खांसी रहती थी बारह साल के बाद ज्यों की त्यों ही खांस रही थी। तब हमने पूछा कि दादी जी आप तो बहुत दुःखी दिखाई दे रही हो क्या आप सतलोक नहीं गई। तब मेरी दादी ने कहा कि बेटा मैंने गलत साधना के कारण अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ कर दिया तथा अब मृत्यु के पश्चात् भूत योनि में कष्ट उठा रही हूँ। मैं कहीं सतलोक में नहीं गई। तो फिर मेरी माता जी ने पूछा कि माँ क्या आपको गुरूजी चरण सिंह जी महाराज ने संभाला या नहीं? तो मेरी

दादी ने कहा कि उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं कि और मैं आज भी ऐसे ही दुखी हो रही हूँ।

उस घटना के दो साल बाद एक दिन मेरी दूसरी बुआ कमला के अंदर मेरे दादा जी प्रेतवत् प्रवेश कर के बोले और कहा कि मैं तो बहुत दुःखी हूँ तथा मेरी कोई गति नहीं हुई। मैं नहाना चाहता हूँ तो मेरी माता जी ने दुःख व आश्चर्य से कहा कि आप तो सतलोक में गए थे क्या वहाँ पर नहाने के लिए पानी भी नहीं है? फिर मेरी माता जी मेरे दादा जी (जो मेरी बुआ में प्रेत बन के घुस हुआ था) को नहलाने लगी तो वह कहने लगा कि बेटी में अपने आप नहा लूगां तो मेरी माता जी ने हालांकि वह मेरी बुआ जी में प्रवेश था इसलिए बुआ वाले कपड़े ही पहना दिये तो मेरा दादा बोला बस बेटी मेरी धोती ले आओ मैं बांध लूगां। मेरी माता जी ने ऐसे ही एक चद्दर पकड़ा दी जो उन्होंने कपड़ों के ऊपर से ही लपेट ली। फिर कहा कि मेरे लिए चाय बनाओ और जल्दी-२ में ही चाय पी ली। मैंने पूछा कि दादा जी आप सतलोक नहीं गए तो उसने कहा कि बेटा मैं तो बहुत कष्ट में हूँ। मेरी माता जी ने फिर पूछा कि आप तो राधास्वामी हजूर चरण सिंह जी महाराज से नाम उपदेशी थे भक्ति भी करते थे क्या उन्होंने आपकी कोई संभाल नहीं की? तब कहा कि उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं की और मैं तो ऐसे ही धक्के खाता फिर रहा हूँ।

उसी दौरान मेरी आँखें भी इतनी कमजोर हो गई कि कम दिखाई देने लग गया था और चश्मा बार बार बदलवाना पड़ा था। मैं एक दोस्त के साथ पढने के लिए उसके पास जाता था वहां पर भक्त संतराम ने मुझे पूर्ण ब्रह्म के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की महिमा सुनाई तथा कहा कि आप सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपकी आँखे ठीक हो जाएगी तथा कहा कि इन्हीं कष्टों और दुखों से हम जीवों को निकालने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब संत का रूप धारण करके आते हैं। मैंने कहा कि मेरे माता पिता जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा है। भक्त संतराम ने कहा कि वह पंथ पूर्ण नहीं है उनकी भक्ति साधना से न तो सतलोक प्राप्ति होगी न ही जीवन में कभी कर्म की मार टल सकेगी उसे तो सिर्फ कबीर साहेब का नुमाईदा संत ही टाल सकता है।

मेरे पिता जी को सांस की बिमारी थी दस कदम चलने पर ही बेहाल हो जाते थे, सांस की बिमारी के कारण दम फूलने लगता था हाई और लो ब्लड प्रैशर की भी बिमारी थी। मेरे पिता जी को इलैक्शन डयूटी के दौरान हार्ट अटैक हुआ पर कर्म संस्कार वश वे बच गये। लेकिन तब भी हम यह सोचते रहे कि गुरूविन्द्र जी महाराज ने हार्ट अटैक से बचा लिया और बड़ी रजा की और हमने तो सर्दियों की एक-एक रात में अपने पिता जी का एक-एक सांस टूटते देखा है, बिल्कुल मृत प्राय हो जाते थे और सिवाय बैठ कर रोने के हम कुछ नहीं कर पाते थे क्योंकि दवाईयों

का भी आखिर आ चुका था, डाक्टर जितनी ज्यादा से ज्यादा डोज दवाई की बढा सकते थे बढा चुके थे इससे ज्यादा वे खुराक को नहीं बढा सकते थे। मेरी माता जी डेरे बाबा जैमल सिंह से लाया हुआ प्रशाद उन्हें खिलाती और राधास्वामी गुरूविन्द्र जी महाराज की मूर्ति के सामने बैठ कर प्रार्थना करती और रोती। उसी समय मेरे छोटे भाई को ओपरे की शिकायत रहने लगी वह रात को चमक कर उठ जाता था तथा कहता था कि मेरा पैर पकड़ कर कोई खींच रहा है, सोने नहीं दे रहा है, वह भी बहुत बिमार रहने लगा। मैंने 8 अक्तूबर 1998 को सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लिया। तो बीस दिन के अंदर ही पूर्ण परमेश्वर संत रामपाल जी महाराज की दया से मेरा चश्मा भी उतर गया तथा मैंने दवाई खाना भी छोड़ दी। मुझे सतगुरू रामपाल जी महाराज पर पूरा विश्वास हो गया था। भक्त संतराम ने घर पर आकर मेरे माता पिता जी को भी समझाया कि आप पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब के नुमाईदे संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपके सर्व कष्टों का निवारण हो जाएगा।

उसके बाद मैंने भी अपने माता पिता को समझाया तो वे बोले हम पहले तो राधास्वामी थे अब सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेगें। दुनिया क्या कहेगी? तब मैंने कहा कि एक डाक्टर से इलाज नहीं हो रहा तो क्या दूसरा डाक्टर नहीं बदलते? परन्तु दुःखी बहुत थे कुछ समय बाद परमेश्वर की शरण में आ गये और राधास्वामी पंथ के उन पांच नामों का त्याग करके पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले लिया।

सतगुरू कबीर साहेब कहते हैं 'शरण पड़े को गुरू संभाले जान के बालक भोला रे' सारे परिवार के नाम लेने के बाद से ही हमारे दिन फिर गये। मेरे भाई का ओपरा ठीक हो गया पिता जी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया और पहले वे दस कदम नहीं चल सकते थे अब एक आदमी के साथ लग कर चीनी की बोरी को उठा देते हैं। हमारा परिवार आज पूर्ण परमात्मा के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की शरण में उनकी दया से पूर्ण सुखी हैं।

परन्तु हमारे दादा-दादी व पिता जी की नानी जी के मनुष्य जीवन का जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती। यदि किसी आदमी की जान बचाने के लिए लाखों और करोड़ों रूपये खर्च कर दिए जाए और वह बच जाए तो उसे उस पैसे का कोई मलाल नहीं होता कि चलो जान तो बची। लेकिन आज चाहे कितनी भी कीमत चुकाने पर भी मेरे दादा-दादी का जीवन जो गलत मार्गदर्शन से बिल्कुल व्यर्थ चला गया (वे भूत और पितर की योनियों में कष्ट भोग रहे हैं), वापिस नहीं आ सकता। जो घिनौना मजाक ये नकली सन्त और पंथ सर्व समाज के साथ कर रहे हैं क्योंकि चौरासी लाख योनिया भोगने के पश्चात् मिलने वाले अनमोल मनुष्य जीवन को जो पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का

एकमात्र साधन है उसे बरबाद कर रहे हैं। इस महाक्षति की आपूर्ति किसी भी कीमत से पूरी नहीं की जा सकती।

हे बंदी छोड़ सतपुरूष रूप सतगुरू रामपाल जी महाराज आपने बड़ी दया कि हम तुच्छ जीवों पर जो अपना सत्य ज्ञान देकर अपनी शरण में बुला लिया अन्यथा हम भी पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त इस अविधिपूर्वक साधना में अपने मनुष्य जन्म को समाप्त करके कहीं भूत और पितरों की योनियों में चले जाते और इस शास्त्रविधियुक्त सतभक्ति से वंचित रह जाते।

सर्व बुद्धिजीवी समाज से प्रार्थना है कि अभी भी समय है। इस सत्य ज्ञान को समझे तथा निष्पक्ष होकर निर्णय करें। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर सतभक्ति प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन का कल्याण करवाएं।

सत साहेब

सतगुरु चरणों का दास
दीपक दास

गायत्री मन्त्र क्या है ? इसके जाप से क्या लाभ है ? यह कहाँ से ग्रहण हुआ ? : जगत गुरु

(30 अप्रैल 2006 को पंजाब केसरी में प्रकाशित)

प्रश्न :- मैं प्रतिदिन गायत्री मन्त्र (ओम् भूर्भुवः स्वः- - -) के एक सौ आठ जाप करता हूँ। क्या यह साधना मोक्ष दायक नहीं है ?

उत्तर :- वेद ज्ञान से अपरिचित चतुर् व्यक्तियों ने गायत्री मन्त्र के नाम से श्लोक ओम् भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्- - -का जाप करने से मोक्ष बता कर भोले श्रद्धालुओं का अनमोल जीवन व्यर्थ करवा दिया। इस के विषय में लोक वेद (दन्त कथा) कहा जाता था कि यह मन्त्र चारों वेदों से निकाला गया निष्कर्ष रूप मन्त्र है। इसी से मोक्ष लाभ होता है। जबकि यह तो यजुर्वेद अध्याय 36 का मन्त्र सं. 3 है। विचार करें, क्या किसी सद्ग्रन्थ के केवल एक मन्त्र (श्लोक) का रट्टा लगाने (आवृत्ति करने) से आत्म कल्याण सम्भव है ? अर्थात् नहीं।

सद्ग्रन्थों के मन्त्रों (श्लोकों) में परमात्मा की महिमा है तथा उसको प्राप्त करने की विधि भी है। जब तक उस विधि को ग्रहण नहीं करेगें तब तक आत्म कल्याण अर्थात् ईश्वरीय लाभ प्राप्ति असम्भव है। जैसे पवित्र गीता अध्याय 17 मन्त्र (श्लोक) 23 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का तो केवल ॐ-तत्-सत् मन्त्र है, इसको तीन विधि से स्मरण करके मोक्ष प्राप्ति होती है। ओम् (ॐ) मंत्र ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष का जाप है, तत् मंत्र (सांकेतिक है जो उपदेश लेने वाले को बताया जाएगा) परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष का जाप है तथा सत् मन्त्र (सांकेतिक है इसे सत् शब्द अर्थात् सारनाम भी कहते हैं। यह भी उपदेश लेने वाले को बताया जाएगा) पूर्ण ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर पुरूष (सतपुरूष) का जाप है। इस (ॐ-तत्-सत्) के जाप की विधि भी तीन प्रकार से है। इसी से पूर्ण मोक्ष सम्भव है। आर्य समाज प्रर्वत्तक श्री दयानन्द जी जैसे वेद ज्ञान हीन व्यक्तियों को यह भी नहीं पता था कि यह वाक्य किस वेद का है। ''सत्यार्थ प्रकाश'' (दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब से प्रकाशित) समुल्लास तीन में पृष्ठ 38-39 पर इसी मन्त्र (भूर्भुवः स्वः तत्- - -) का अनुवाद करते समय लिखा है कि भूः भुर्व स्वः यह तीन वचन तैत्तिरीय आरण्यक के हैं, मन्त्र के शेष भाग (तत् सवितुः- - -) के विषय में कुछ नहीं लिखा है कि कहाँ से लिया गया है। स्वामी दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' में किए इसी मन्त्र के अनुवाद में तथा यजुर्वेद में किए इस मन्त्र (भू भुर्वः- - -) के अनुवाद में विपरित अर्थ किया है। तैत्तिरीय आरण्यक तो एक उपनिषद् है जिसमें किसी ऋषि का अपना अनुभव है। जबकि वेद प्रभु प्रदत ज्ञान है। हमने वेद पर आधारित होना है न कि किसी ऋषि द्वारा रचित अपने अनुभव की पुस्तक पर। यदि 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक की पोल न खुलती तो कुछ दिनों बाद यह भी एक उपनिषद् का रूप धारण

कर लेता। आने वाले समय में अन्य पुस्तकों की रचना करते समय 'सत्यार्थ प्रकाश' के अज्ञान का समर्थन लेते तथा इससे भी अधिक अज्ञान युक्त पुस्तकों की रचना हो जाती।

जैसे गुरु ग्रन्थ साहेब में श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी तथा परम पूज्य कबीर परमेश्वर जी की अमृतवाणी वेद ज्ञान युक्त है तथा वेदों से आगे का भी ज्ञान विद्यमान है। परंतु राधास्वामी पंथ के प्रथम संत व प्रवर्तक माने जाने वाले श्री शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी जी के अज्ञान युक्त वचनों से रची पुस्तक 'सार वचन नसर व वार्तिक' को एक प्रमाणित शास्त्र मान कर श्री सावन सिंह जी महाराज ने (जो श्री खेमामल उर्फ शाहमस्ताना जी के पूज्य गुरु जी थे। श्री शाहमस्ताना जी ने ही बेगु रोड़ सिरसा में धन-धन सतगुरु-सच्चा सौदा पंथ की स्थापना की है) पुस्तक 'सार वचन नसर व वार्तिक' वाले विवरण का समर्थन लेकर 'संतमत प्रकाश' पुस्तक के कई भागों की रचना कर डाली, जिनमें सद्ग्रन्थों के विरूद्ध कोरा अज्ञान भरा है। जैसे श्री शिवदयाल जी ने उपरोक्त पुस्तकों में वचन-4 में कहा है कि सतनाम को सारनाम, सारशब्द, सतनाम, सतलोक तथा सतपुरूष कहते हैं।

इसी आधार से श्री सावन सिंह जी ने संतमत प्रकाश भाग-3 पृष्ठ-76 पर कहा है कि सतनाम को सतलोक कहते हैं। फिर पृष्ठ-79 पर लिखा है कि सतनाम चौथा राम है, यह असली राम है। श्री शिवदयाल जी महाराज के वचनों के आधार से श्री सतनाम सिंह जी द्वितीय गद्दीनशीन डेरा धन-धन सतगुरू सच्चा सौदा सिरसा वाले ने पुस्तक 'सच्चखंड की सड़क' पृष्ठ 226 पर लिखा है कि सतलोक महाप्रकाशवान है। इसी को सतनाम, सारनाम, सारशब्द भी कहते हैं।

उपरोक्त ज्ञान से स्पष्ट है कि इन पंथों के सन्तों को कोई ज्ञान नहीं था। जिनकी लिखित कहानियाँ ही गलत है तो क्रियाऐं भी गलत हैं। जिनकी थ्यूरी ही गलत है तो प्रैक्टीकल भी गलत है। हमने पवित्र अमृतवाणी श्री नानक साहेब जी तथा अमृतवाणी परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी तथा जिन संतों को कविर्देव (कबीर प्रभु) स्वयं मिले तथा तत्वज्ञान से परिचित कराया उनकी अमृतवाणी को आधार मान कर सत्य का ग्रहण करना है तथा असत्य का परित्याग करना है।

उदाहरण : जैसे कोई गणित के प्रश्न को हल कर रहा है और वह सही नहीं हो पा रहा है तो उसका सही हल ढूंढने के लिए मुख्य व्याख्या को ही आधार मान कर पुनर् पढ़ा जाता है। तब वह प्रश्न हल हो जाता है। यदि गलत किए हुए प्रश्न के हल को ही आधार मान कर प्रयत्न करते रहेंगे तो समाधान असंभव है। इसी प्रकार पूर्व संतों व ऋषियों द्वारा लिखी अपने अनुभव की पुस्तकों के स्थान पर सद्ग्रन्थों को ही आधार मान कर पुनर् पढ़ने व उन्हीं के आधार से साधना करने

से ही प्रभु प्राप्ति व मोक्ष संभव है। गीता जी में लिखा है कि हे अर्जुन ! जब तेरी बुद्धि नाना प्रकार के भ्रमित करने वाले शास्त्र विरूद्ध ज्ञान से हट कर एक शास्त्र आधारित तत्व ज्ञान पर स्थिर हो जाएगी तब तू योगी (भक्त) बनेगा। भावार्थ है कि तब तेरी भक्ति प्रारम्भ होगी।

जैसे पथिक गंतव्य स्थान की ओर न जा कर अन्य दिशा को जा रहा हो उसकी वह यात्रा कुमार्ग की है। उससे वह अपने निज स्थान पर नहीं पहुंच सकता। जब वह कुमार्ग त्याग कर सत मार्ग पर चलेगा तब ही उसके लिए मंजिल प्राप्त करना संभव है।

इसलिए श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि जब आप शास्त्र विरूद्ध साधना से हट कर शास्त्रानुसार साधना पर लगोगे तब आपका सत भक्ति मार्ग प्रारम्भ होगा।

विशेष विचार :- पवित्र यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 (जिसे गायत्री मन्त्र कहा है) की रटना लगाना (आवृत्ति करना) तो केवल परमात्मा के गुणों से परिचित होना मात्र है। उस परमात्मा की प्राप्ति की विधि भिन्न है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में तथा पवित्र गीता जी अध्याय 4 मन्त्र (श्लोक) 34 में कहा है कि तत्व ज्ञान को समझने अर्थात् पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के ज्ञान को तत्वदर्शी सन्तों से पूछो। पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति की विधि को वेद व गीता ज्ञान दाता प्रभु भी नहीं जानता। केवल अपनी साधना (ब्रह्म साधना) का ज्ञान गीता अध्याय 8 मन्त्र (श्लोक) 13 में तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र (श्लोक) 15 में कहा है। ओम् (ॐ) नाम का जाप अकेला करना होता है किसी वाक्य के साथ लगा कर करने से मोक्ष प्राप्ति नहीं होती। इसीलिए गीता अध्याय 8 मन्त्र (श्लोक) 13 में कहा है कि मुझ ब्रह्म का तो केवल एक ओम् (ॐ) अक्षर है अन्य नहीं है, उसका उच्चारण करके स्मरण करना है। यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र (श्लोक) 3 में भी ओम् (ॐ) मंत्र नहीं है। यह तो शास्त्र विरूद्ध साधना बताने वालों ने जोड़ा है जो अनुचित है। प्रभु की आज्ञा की अवहेलना है। यदि कोई अज्ञानी व्यक्ति किसी मोटर गाड़ी के पिस्टन के साथ नट वैल्ड कर के कहे कि यह पिस्टन अधिक उपयोगी है तो क्या वह व्यक्ति इन्जीनियर है ? यही दशा अज्ञानी ऋषियों तथा सन्तों की है जो ओम् (ॐ) अक्षर को किसी वाक्य के साथ लगा कर कहते हैं कि अब यह मन्त्र अधिक उपयोगी बन गया है। जो शास्त्र विरुद्ध होने से मन-माना आचरण (पूजा) है। पवित्र गीता जी अध्याय 16 श्लोक 23-24 में लिखा है कि - शास्त्र विधि त्याग कर मन-माना आचरण (पूजा) करने वाले साधक को न तो सुख होता है, न कार्य सिद्ध तथा न उनकी गति होती है। इसलिए भक्ति के लिए शास्त्रों को आधार मान कर सत्य का ग्रहण करें, असत्य का परित्याग करें।

उदाहरण :- जैसे विद्युत के गुण हैं कि बिजली पंखा चलाती है, अंधेरे को उजाले में बदल देती है, आटा पीस देती है आदि-आदि। इस वाक्य को बार-२ रटने

से बिजली के उपरोक्त गुणों का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। बिजली का कनैक्शन लेना होता है। कनैक्शन लेने की विधि उपरोक्त महिमा से भिन्न है। बिजली का कनैक्शन लेने के बाद उपरोक्त सर्व लाभ बिजली से स्वतः प्राप्त हो जाऐंगे।

इसी प्रकार सद्ग्रन्थों के अमृत ज्ञान से परमात्मा की महिमा का ज्ञान होता है। उसे एक बार पढ़ें या सौ बार। यदि परमात्मा से लाभ प्राप्त करने की विधि पूर्ण सन्त से प्राप्त नहीं की तो सर्व ज्ञान व्यर्थ है। जैसे कोई कहे कि ''खाले रे औषधि स्वस्थ हो जाएगा'' इसी की रटना लगाता रहे (आवृत्ति करता रहे) और औषधी खाए नहीं तो स्वस्थ नहीं हो सकता। पूर्ण वैद्य से औषधि लेकर खाने से ही रोग मुक्त हो सकता है। इसी प्रकार पूर्ण सन्त से पूर्ण नाम जाप विधि प्राप्त करके गुरू मर्यादा में रह कर साधना करने से ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है।

वह पूर्ण मोक्ष दायक, पाप विनाशक शास्त्रानुकूल पूर्ण परमात्मा की भक्ति विधि जगत गुरू तत्वदर्शी सन्त रामपाल दास के पास है जो प्रभु प्रदत्त है। कृप्या निःशुल्क व अविलंब प्राप्त करें। अज्ञानी सन्तों व ऋषियों द्वारा बताई शास्त्रविधि रहित साधना में अपना अनमोल मानव जीवन न गंवाऐं। कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा है ! ''मानव जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार।

जैसे तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहुर न लगता डार।।''

(कृप्या पाठक जन पढ़ें और विचार करें - कौन कितने पानी में ?)

कृप्या पढ़ें :- यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 का भाषा भाष्य अर्थात हिन्दी अनुवाद संत रामपाल जी महाराज द्वारा किया हुआ।

यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 :- भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमही धीयो यो नः प्रचोदयात्।

संधिछेद :- भूः–भुवः–स्वः– तत्– सवित्तुः– वरेण्यम्–भर्गः–देवस्य–धीमही–धीयः–यः–नः– प्रचोदयात्।

अनुवाद :- वेद ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि (स्वः) अपने निज सुखमय (भुवः) अन्तरिक्ष अर्थात् सतलोक व अनामय लोक में (भूः) स्वयं प्रकट होने वाला पूर्ण परमात्मा है। वही (सवितुः) सर्व सुख दायक सर्व का उत्पन्न करने वाला परमात्मा है (तत्) उस परोक्ष अर्थात् अव्यक्त साकार (वरेण्यम्) सर्वश्रेष्ठ (भर्गः) तेजोमय शरीर युक्त सर्व सृष्टि रचनहार (देवस्य) परमेश्वर की (धीमही) प्रार्थना, उपासना शास्त्रानुकूल अर्थात् बुद्धिमता से सोच समझ कर करें (यः) जो परमात्मा सर्व का पालन कर्त्ता है वह (नः) हम को भ्रम रहित (धीयः) शास्त्रानुकूल सत्य भक्ति बुद्धिमता अर्थात् सद्भाव से करने की (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे।

भावार्थ :- इस मन्त्र सं. 3 में यजुर्वेद अ. 40 मन्त्र 8 का समर्थन है कि जो (कविर्मनीषी) पूर्ण विद्वान अर्थात् भूत, भविष्य तथा वर्तमान की जानने वाला कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है वह पांच तत्व के शरीर रहित है (स्वयंभूः परिभूः) स्वयं

प्रकट होने वाला परमात्मा है पूर्ण परमात्मा का शरीर एक तत्व से बना है इसलिए उसे यजुर्वेद अध्याय 1 मन्त्र 15 तथा अध्याय 5 मन्त्र 1 में कहा है कि (अग्नेः) परमेश्वर का नूरी अर्थात् तेजोमय (तनूः) शरीर (असि) है। उस सर्व शक्तिमान दयालु सुखमय परमात्मा की भक्ति सच्चे हृदय से शास्त्रानुकूल करें। वह पूर्ण परमात्मा ऊपर सतलोक में प्रकट होता है। उस से विनय है कि वह प्रभु सर्व प्राणियों को शास्त्रानुकूल साधना के लिए प्रेरित करे।

प्रचार प्रसार समिति,
सतलोक आश्रम करौंथा,
जिला रोहतक-124001 (हरियाणा)।

कृप्या पढ़ें फोटो कॉपी यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 का भाषा भाष्य अर्थात हिन्दी अनुवाद आर्य समाज प्रर्वतक महर्षि दयानन्द द्वारा किया हुआ। जिसका कोई सिर पैर नहीं है।

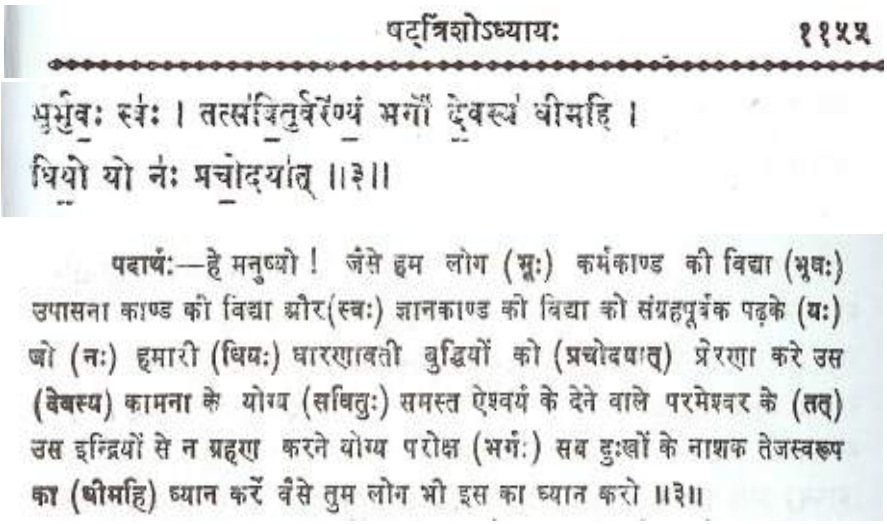

षट्त्रिंशोऽध्यायः ११५५

भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! जैसे हम लोग (भूः) कर्मकाण्ड की विद्या (भुवः) उपासना काण्ड की विद्या और (स्वः) ज्ञानकाण्ड की विद्या को संग्रहपूर्वक पढ़के (यः) जो (नः) हमारी (धियः) धारणावती बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे उस (देवस्य) कामना के योग्य (सवितुः) समस्त ऐश्वर्य के देने वाले परमेश्वर के (तत्) उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य परोक्ष (भर्गः) सब दुःखों के नाशक तेजस्वरूप का (धीमहि) ध्यान करें वैसे तुम लोग भी इस का ध्यान करो ॥३॥

(महर्षि दयानंद द्वारा अनुवादित यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 की फोटो कॉपी)

"आर्य समाज प्रवर्तक श्री दयानन्द सरस्वती जी की जन्म पत्री"

पुस्तकः– ''श्री मत् दयानन्द–प्रकाश''

लेखकः- श्री सत्यानन्द जी महाराज, प्रकाशक :- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिद्यी सभा 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-2

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर उपरोक्त पुस्तक से निष्कर्ष रूप में यथार्थ भाव सहित संक्षिप्त विवरण लिखा जाता हैः-

स्वामी दयानन्द जी के पूज्य पिता जी का नाम कर्षनजी था। जो उदीच्य ब्राह्मण थे। उन्हें मोरवी राज्य से कुछ अधिकार भी प्राप्त थे, कुछ सैनिक भी रखते थे। वे काठीयावाड़ देश के मोरवी नगर के ग्राम टंकारा में रहते थे तथा बड़े भूमीहारी भी थे।

➢ *श्री दयानन्द जी का वास्वतिक नाम मूल जी था। स्वामी जी का जन्म संवत् 1881 (सन् 1824) में हुआ। ब्राह्मण होने के कारण बचपन में पांच वर्ष की आयु में देवनागरी भाषा को पढ़ा तथा बन्धुजनों ने उन्हें बहुत से स्तोत्र, मंत्र, श्लोक और उनकी टिकाऐं कण्ठस्थ करा दी। आठ वर्ष की आयु में गायत्री तथा सन्ध्या की उपासना-विधि सिखाई गई। उदीच्य वंशीय होने के कारण सामवेद को परम्परागत पढ़ा करते तथा शैव (शिव के उपासक) होने के कारण रूद्राध्याय भी पढ़ा करते थे।*

चौदह वर्ष की आयु में यजुर्वेद संहिता कण्ठस्थ याद हो गई अन्य वेदों का भी कुछ-२ अभ्यास कर लिया। व्याकरण के भी शब्दरूपावली आदि छोटे-छोटे ग्रन्थ पिता जी से पढ़ लिए। शिव प्रभु की पत्थर की प्रतिमा पर चूहे बैठे प्रभु को लगा भोग खा रहे थे। उस दिन से मूर्ति में आस्था नहीं रही (वैराग्य काण्ड पहला सर्ग पृष्ठ 1-6 तक उपरोक्त विवरण है)

➢ *आयु के सोलहवें वर्ष में अपनी छोटी बहन की विशुचिका रोग के कारण अचानक मृत्यु देखकर संसार से विरक्त हो गए तथा सोचने लगे कि जन्म-मृत्यु के नाश की औषधी कहाँ मिले। अमर जीवन के लिए कौन से उपायों का अवलम्बन करना चाहिए। मुक्ति मार्ग में किसका भरोसा किया जाए ? इत्यादि विचारों से वे रात-दिन निमग्न रहते। उन्होंने दृढ निश्चय कर लिया कि जैसे भी हो मुक्ति हस्तगत करूंगा तथा मृत्यु के दुःख से छुटकारा पाऊंगा। आयु के उन्नीसवें वर्ष में उनके प्रिय चाचा जी भी विशूचिका रोग से अचानक मृत्यु को प्राप्त हो गए। इस से स्वामी दयानन्द जी का मन संसार से उठ गया। विवाह से स्पष्ट मना कर दिया। काशी में विद्या ग्रहण करने के प्रस्ताव को पिता जी ने नहीं माना तो निकट ग्राम में एक पण्डित जी से व्याकरण आदि पढ़ा।*

➢ *बाईस वर्ष की आयु में घर त्याग कर मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए चल*

पड़े।

(स्वामी दयानन्द जी के अनुयाई कहते हैं कि स्वामी जी गुरूडम अर्थात् गुरू बनाने के विरोधी थे। कृप्या पाठक जन देखें स्वामी दयानन्द जी ने कितने गुरू बनाए)

➢ *(प्रथम गुरू) सायले नामक ग्राम में एक ब्रह्मचारी सन्त मिले जिन्होंने स्वामी दयानन्द जी का मूल नाम बदल कर ''शुद्ध चैतन्य'' रख दिया। रात्री में स्वामी दयानन्द जी बाहर पेड़ के नीचे साधना कर रहे थे। पेड़ के ऊपर से अनोखी आवाज आई जिसे भूत (प्रेत) जान कर डर कर मठ में चले गए।*

➢ *(दूसरा गुरू) वहाँ से चलकर तत्वदर्शी सन्त की खोज में अहमदाबाद के बड़ौदा नगर में एक ब्रह्मानन्द नामक ब्रह्मचारी से मिले। जिसने स्वामी दयानन्द जी को वेदान्ती बना दिया तथा ''अहम् ब्रह्मास्मि'' का नाम जाप मन्त्र दिया।(उपरोक्त विवरण वैराग्य काण्ड का दूसरा तथा तीसरा सर्ग पृष्ठ 7 से 19 तक पर है)*

➢ *उसके बाद वह प्यासी आत्मा तृप्त न होकर अन्य पूर्ण संत की खोज में चला। जहाँ भी कोई साधु सन्त मिलता उसी से ज्ञान ग्रहण करता रहता।*

➢ *(तीसरा गुरू) चाणोद करनोली में जिज्ञासु शुद्धचैतन्य अर्थात् दयानन्द जी ने श्री चिदाश्रम नामक व्यक्ति को सच्चा विद्वान मान कर ज्ञान ग्रहण किया। अन्य विद्वान पंड़ितों से भी ज्ञान ग्रहण किया।*

➢ *(चौथा गुरू) एक परमानंद नामक साधु से कई मास तक वेदांत-परिभाषा, आर्य हरिमीडेतोटक, आर्य हरिहरतोटक आदि ग्रंथ पढ़े।*

➢ *(पांचवां गुरू) चाणोद से डेढ कोस दूर जंगल में दण्डी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती को पूर्ण ज्ञानी जान स्वामी दयानन्द जी ने दीक्षा तथा ज्ञान ग्रहण किया। उनका नाम शुद्धचैतन्य से बदल कर ''दयानन्द सरस्वती'' रख दिया तथा हाथ में दण्ड(डण्डा) थमा दिया।*

➢ *(छठे गुरू) एक योगानन्द नामक महात्मा से योग विद्या सीखी।*

➢ *(सातवां गुरू) ग्राम छिन्नड़े में कृष्ण शास्त्री से व्याकरण पढ़ी।*

➢ *(आठवां गुरू) वापिस चाणोद में आकर एक राजगुरू से वेदाध्ययन किया।*

➢ *(नौवें गुरू) दो योगियों (1.श्री ज्वाला नन्द पुरी 2.शिवानन्द गिरी) से योग शास्त्र सीखा।*

➢ *(दसवें गुरू) उपरोक्त दोनों योगियों से भी कहीं अधिक आगे बढ़े हुए अन्य योगियों से भी योग तत्वों की प्राप्ति की। उस समय श्री दयानन्द जिज्ञासु की आयु 32 वर्ष की थी।*

➢ *(ग्यारहवें गुरू) हरिद्वार में अपनी परख से उत्तमोत्तम सन्तों से ज्ञान व योग साधनाऐं सीखी।*

(उपरोक्त विवरण पूर्वोक्त पुस्तक वैराग्य काण्ड तीसरा तथा चौथा सर्ग पृष्ठ 20 से

24 पर है)

➢ *(बारहवें गुरू) फिर भी पूर्ण सन्त के अभाव से प्यासे स्वामी दयानन्द जी जोशी मठ पहुँचे वहाँ एक महाराष्ट्र सन्यासी से नवीन भेद प्राप्त किया फिर भी प्यासे रहे(पृष्ठ 29 पर) तथा बद्रीनारायण पहुँच गए वहाँ से फिर पूर्ण सन्त की खोज में महाकष्ट उठाते हुए एक नदी को पार कर के सर्दी के कारण मृत्यु के निकट पहुँच गए। फिर भी साहस करके वापिस बद्रीनारायण लौट आए।*

➢ *द्रौणासागर नगर में निवास के समय आत्महत्या करने का विचार किया परन्तु पूर्ण ज्ञान प्राप्त न होने के कारण हिमालय में समाधी लेने(देह त्याग) का विचार बदल दिया। (उपरोक्त विवरण पृष्ठ 33 तक है।)*

➢ *एक शव को चीर फाड़ कर देखा। उसमें कोई चक्र(नाभी चक्र, मूल चक्र आदि) नहीं पाए। इसी परिक्षण से जिज्ञासु दयानन्द स्वामी जी ने निर्णय कर लिया कि जिन पुस्तकों में चक्रों का वर्णन है वे सर्व झूठी तथा काल्पनिक हैं। उनको फाड़ कर गंगा जी में फैंक दिया। (वैराग्य काण्ड छठा सर्ग पृष्ठ 33-34 पर उपरोक्त विवरण है)*

➢ *तीन वर्ष नर्मदा नदी के तीर पर भटकते रहे। सन्तों-ऋषियों का सत्संग सुनते रहे। तत्पश्चात एक श्री विरजानन्द जी की महिमा सुनकर मथुरा पहुँचे।*

➢ *(तेरहवें गुरू) श्री विरजानन्द जी अन्धे थे। जिनकी आँखें पाँच वर्ष की आयु में शीतला के कारण समाप्त हो गई थी। श्री दयानन्द जी के तेरहवें गुरू श्री विरजानन्द जी ''श्री विष्णु जी'' के उपासक थे। श्री विरजानन्द जी सारस्वत ब्राह्मण थे। ''विष्णु स्तोत्र'' का नित्य पाठ किया करते थे। श्री विरजानन्द जी उत्तम कोटी के दण्डी सन्यासी थे। उस समय दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की आयु 81 वर्ष थी। जब श्री दयानन्द जी जिज्ञासु उनके शिष्य हुए तथा व्याकरण निघटु, निरूक्त तथा अष्टाध्यायी आदि ग्रन्थों की शिक्षा ग्रहण की उस समय श्री दयानन्द सरस्वती की आयु 36 वर्ष की थी (सम्वत् 1917)।*

स्वामी विरजानन्द जी दण्डी सन्यासी के शिष्य बन कर श्री दयानन्द जी भाल पर विभूति (राख) रमाया करते गले में रूद्राक्ष की माला पहनते थे। सिर पर उपरना बांधते थे तथा हाथ में लम्बा मोटा दण्ड (सोटा) रखते थे (पूरा ढोंग करते थे) जो दण्डी सन्यासी की वेशभूषा होती थी।(पृष्ठ 44, 45) पर श्री विरजानन्द जी के सानिध्य में कठिन साधना करके व्याकरण आदि का ज्ञान प्राप्त किया। उस समय श्री दयानन्द जी की आयु 36 वर्ष थी।

➢ *एक दिन साधना काल में एक स्त्री ने उनके चरणों में सिर रख दिया। ''श्री दयानन्द जी माता-२ कह कर उठकर जंगल में चले गए। वहाँ एक मन्दिर में तीन-दिन तथा तीन रात निराहार रहे अर्थात् अपने मन को वश किया (पृष्ठ 48) पर।*

➢ *श्री विरजानन्द जी दण्डी स्वामी कभी-२ श्री दयानन्द जी को लाठी से भी पीटते थे। कई बार कुटिया में आना बन्द कर देते थे(क्योंकि बार-बार गुरू मर्यादा का उल्लंघन करते थे)। इस प्रकार ढाई वर्ष श्री विरजानन्द जी दण्डी सन्यासी से वेदान्त सूत्र आदि अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया (उपरोक्त विवरण वैराग्य काण्ड सातवें से दसवें सर्ग पर पृष्ठ 40 से 52 तक है)*

तत्पश्चात् अपने आप को पूर्ण ज्ञानयुक्त मान कर स्वामी दयानन्द जी देश-देशान्तर में घूम कर तेरह अधूरे गुरूओं तथा ज्ञानहीन अन्य सन्यासियों से संग्रह किये (कहीं की ईट कहीं का रोड़ा) ज्ञान का प्रचार करने लगे जिसका प्रमाण उनके द्वारा रची पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' है जिसमें सत्य का नामोनिशान भी नहीं है, कोरी बकवाद भरी है।

☞ "गीता प्रक्षिप्त नहीं है"

स्वामी दयानन्द जी ने पृष्ठ 162 पर कहा है कि गीता प्रक्षिप्त नहीं है यदि किसी को संस्य है तो मेरे साथ शास्त्रार्थ करे तथा पृष्ठ 55, 213 पर गीता जी के श्लोकों का आंशिक अनुवाद भी किया। (श्री आत्मानन्द जी झज्जर गुरूकुल के आचार्य ने गीता जी के सात सौ श्लोकों में से आधे से अधिक को प्रक्षिप्त बताया है। जो श्री दयानन्द जी के विचारों की अवहेलना है।)

➢ *पृष्ठ 61 पर दो बार लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी गीता आदि ग्रन्थों का प्रकरण सुना कर कृतार्थ किया करते थे।*

➢ *पृष्ठ 66 पर लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी से पूछा कि ईश्वर का नाम क्या है? श्री दयानन्द जी ने ईश्वर का नाम ''सचिदानन्द'' बताया।*

➢ *पृष्ठ 75 पर लिखा है स्वामी दयानन्द जी दोसाला ओढते थे, पाँव में जुराब तथा गले में स्फटिक की माला भी पहनते थे।*

➢ *पृष्ठ 75 पर लिखा है कि अभ्रक भस्म आदि कई प्रकार की भस्में खाते थे।*

➢ *पृष्ठ 79-80 पर लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी ने त्याग किया। स्वर्ण मुहरें व शाल स्वामी विरजा नन्द जी के आश्रम में मथुरा भिजवा दिए तथा सारे उपकरण हरिद्वार में त्याग दिए, सर्व पुस्तकें भी त्याग कर सारे तन पर राख रमा कर कौपीन मात्रधारी-मौनावलम्बी हो गये।*

➢ *पृष्ठ 436 पर लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु के कुछ समय पूर्व एक कल्लु नामक सेवक छः- सात सौ रूपये लेकर चम्पत हो गया। आज से 123 वर्ष पूर्व उस समय (सन् 1883) के सात सौ रूपयों का मूल्य वर्तमान (सन् 2006) के पांच लाख से भी अधिक है अब श्री दयानन्द जी के त्याग का ढोंग पर्दा फास हो गया।*

➢ *पृष्ठ 89 पर शास्त्रार्थ की झलकः- गंगा कांड, आठवां सर्ग पृष्ठ 89 पर ज्यों का त्यों लेखः-*

तीन दिन तक, प्रतिसायं कृष्णानन्द जी और स्वामी जी का शास्त्रार्थ होता रहा। एक दिन शास्त्रार्थ के समय किसी ने कृष्णानन्द जी से साकारवाद का अवलम्बन किया और इसी पर शास्त्रार्थ चलाया। स्वामी जी का तो यह मन-चाहता विषय था। उन्होंने धाराप्रवाह संस्कृत बोलते हुए निराकार सिद्धान्त पर वेदों और उपनिषदों के प्रमाणों की एक लड़ी पिरो दी, और कृष्णानन्द जी को उनका अर्थ मानने के लिए बाधित किया। कृष्णानन्द कोई प्रमाण न दे सका। केवल गीता का यह श्लोक ''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत'' लोगों की ओर मुंह करके पढ़ने लगा। स्वामी जी ने गर्ज कर कहा कि ''आप वाद मेरे साथ करते हैं, इसलिए मुझे ही अभिमुख कीजिये।'' परन्तु उसके तो विचार ही उखड़ गये थे, वह चौकड़ी ही भूल चुका था। मुख में झाग आ गए। गले में घिग्घी बँध गई। चेहरा फीका पड़ गया। किसी प्रकार लाज रह जाए, इससे उसने तर्क-शास्त्र की शरण लेकर स्वामी जी को कहा कि ''अच्छा, लक्षण का लक्षण बताइये?'' स्वामी जी ने उत्तर दिया कि ''जैसे कारण का कारण नहीं वैसे ही लक्षण का लक्षण भी नहीं है।'' लोगों ने अपनी हंसी से कृष्णानन्द की हार प्रकाशित कर दी और वह घबड़ाकर वहाँ से चलता बना।

➢ *स्वामी दयानन्द जी शुद्रों को भक्ति योग्य नहीं मानते थे। गंगा काण्ड प्रथम तथा नौवां सर्ग पृष्ठ 56 से 94 पर।*

☛ "समाज सुधार का दावा करने वाले श्री दयानन्द सरस्वती समाज बिगाड़ करते थे"

➢ *पृष्ठ 138 पर लिखा हैं कि स्वामी दयानन्द जी (तम्बाकू सूंघा करते) नसवार लिया करते थे, कहते थे शरीर स्वस्थ करने के लिए तम्बाकू सूंघना पाप नहीं।*

➢ *राजाओं को विशेष आदर देते थे। अपने बराबर बैठाया करते क्योंकि राजा यशवन्त सिंह जोधपुर ने सौ रूपये तथा पाँच स्वर्ण मुद्रायें भेंट की थी। (पृष्ठ 426-427 पर उपरोक्त प्रमाण है)*

☛ "स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु"

(सम्वत् 1940 अर्थात् सन् 1883 में 59 वर्ष की आयु में एक महीने तक चारपाई पर पड़ा रह कर, महान पीड़ा सहन करके, दुर्दशा से मृत्यु हुई। उनका मल–मुत्र वस्त्रों में निकल जाता था, उनकी जीभ पर छाले पड़ गए थे, पूरे शरीर पर, कंठ, मुंह के अन्दर, माथे पर, सिर पर छाले पड़ गए थे इस प्रकार अपने किए कर्म (मिथ्या भाषण रूप पाप) का दण्ड भोगते हुए दुर्दशा से मृत्यु हुई।)

पृष्ठ 437 से 451 परः- स्वामी दयानन्द जी का स्वास्थय दो-चार दिन से कुछ शिथिल था अर्थात वे अस्वस्थ थे। आश्विन (आसौज) वदी चतुर्दशी सम्वत् 1940 को रात्री में जगन्नाथ नामक रसोईये से दूध लेकर पीया। कुछ निद्रा लेने के पश्चात् उल्टी तथा दस्त प्रारम्भ हो गए। पेट में प्रबल पीड़ा हो रही थी। मुंह सूख रहा था। डा. ने दवाई दी कोई आराम नहीं हुआ। जो भी दवाई डा. देता उल्टा ही प्रभाव होता था। दवाई लगना बंद हो गई तथा दवाई दुष्प्रभाव करने लगी। स्वामी दयानन्द जी का शरीर जीर्ण-शीर्ण होने लगा। चार पांच दिन बाद एक सद्धर्म प्रचारक समाचार पत्र ने छापा की एक जगन्नाथ नामक ब्राह्मण ने स्वामी जी को विष दे दिया जो उन्हीं का रसोईया था। स्वामी जी ने जगन्नाथ रसोईया को कुछ रूपये देकर वहाँ से निकाल दिया कि कहीं इसे कोई मार न दे। जगन्नाथ भी ब्राह्मण था। स्वामी दयानन्द जी को कोई भी औषधी काम नहीं कर रही थी। उनके पूरे शरीर तथा कण्ठ, जीभ पर मुख में तथा माथे व सिर में छाले पड़ गए थे। पानी की घूट भी गले नहीं उतर रही थी। मल-मुत्र भी समय-कुसमय वस्त्रों में निकल जाने लगा। श्वांस-प्रश्वास की क्रिया बहुत तेज थी। उनका जी घबराता था, गला बैठ गया था, श्वास-प्रश्वास की गति बहुत तेज हो गई थी। सारी देह में दाह (आग) सी लगी थी।

संवत् 1940 आश्विनी वदी (कृष्णा) 14 से कार्तिक अमावस्या तक (एक मास तक) महा पीड़ा को भोग कर स्वामी दयानन्द जी का देहान्त हो गया।

पृष्ठ 453-454 पर लिखा है कि अन्तिम संस्कार करके भगवान दयानन्द जी की अस्थियों को उठाकर (फूल चुनकर) एक बाग (उद्यान) में गाड़ दिया।

☞ *"उपरोक्त स्वामी दयानन्द जी के जीवन विवरण का सारांश"*

➢ *स्वामी दयानन्द जी पूर्व जन्म के पुण्य कर्मी प्राणी थे। किसी जन्म में शास्त्रविधि अनुसार साधना की हुई थी। जिसके परिणाम स्वरूप प्रभु भक्त श्री कर्षन जी के घर जन्म हुआ। जो वर्तमान में शास्त्रविरूद्ध साधना कर रहा था। पुत्र को भी भगवत् भक्ति का रंग चढाया। बचपन से ही श्री दयानन्द जी ने यजुर्वेद को कण्ठस्थ कर लिया। जब बड़े हुए तो व्याकरण आदि परमपरागत सीख ली थी। घर त्याग कर पूर्ण सन्त की खोज करके जन्म-मृत्यु से छुटकारा प्राप्ति के लिए चल ड़े। उस जिज्ञासु दयानन्द जी को पूर्ण सन्त नहीं मिला जो भी मिले वे तत्वज्ञान हीन ही मिले। जिनसे वह प्यारी आत्मा तृप्त नहीं हुआ। एक समय सोचा कि तत्वज्ञान प्राप्त हुआ नहीं। इस जीवन का क्या करना है। इस विचार से आत्महत्या करना चाहा परन्तु तुरन्त ही अन्य स्थानों पर पूर्ण ज्ञानी की खोज में निकल पड़े। भ्रमते भटकते श्री दयानन्द जी मथुरा में एक विरजानन्द जी दण्डी स्वामी नेत्रहीन को मिले जहाँ से उन्होंने व्याकरण का शेष ज्ञान प्राप्त किया। श्री विरजानन्द जी, श्री*

विष्णु जी के भक्त थे। ''विष्णु स्तोत्र'' का नित्य पाठ किया करते थे। लगभग तेरह ज्ञानहीन गुरूओं के खचड़ा ज्ञान से परिपूर्ण होकर स्वामी दयानन्द जी, जिज्ञासु से ज्ञानदाता बन कर शिष्य बनाने लग गए तथा वही अज्ञानियों से ग्रहण ज्ञान दूर-2 तक बिखेर दिया। आम के बीज की खोज में निकले श्रद्धालु दयानन्द जी को पूर्ण सन्त न मिलने के कारण बबूल (कीकर) का बीज ग्रहण हुआ। वही अज्ञान अपने द्वारा रचित पुस्तकों ''सत्यार्थ प्रकाश'' आदि में भर कर भक्त समाज में प्रवेश कर दिया। बचपन से वेद मन्त्रों को घोटने में लगे थे। साधारण व्यक्ति को बड़े विद्वान दिखाई देते थे क्योंकि संस्कृत भाषा में प्रवचन करते परन्तु ज्ञान का अंश मात्र भी स्वामी दयानन्द जी के पात्र में नहीं था। जिस का प्रमाण ''सत्यार्थ प्रकाश'' है।

➢ *ज्ञानहीन सन्तों व ऋषियों के ग्रहण अज्ञान के आधार से परमेश्वर कविर्देव (कबीर प्रभु) के विषय में अनाप-शनाप व्याख्या कर दी जो ''सत्यार्थ प्रकाश'' समुल्लास ग्यारह में लिखी है। अन्य प्रभु प्राप्त सन्तों को भी मूर्ख लिखा है। जिस कारण से स्वामी दयानन्द जी महापाप के भागी हो गए। जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि अन्त समय में एक मास तक महाकष्ट को भोगकर मृत्यु को प्राप्त हुए। पूरा शरीर गल गया था, मल-मूत्र भी समय-कुसमय वस्त्रों में ही निकल जाता था। पूरे शरीर में आग के जले जैसा दर्द हो रहा था। पूरे शरीर पर छाले पड़ गए थे। श्री दयानन्द जी की जीभ पर छाले, मुंह में छाले, अन्दर कंठ में छाले, माथे तथा सिर पर छाले पड़ गए थे। इस प्रकार महाकष्ट को भोग कर, परमेश्वर कर्विदेव तथा अन्य प्रभु द्रष्टा सन्तों की निन्दा तथा मिथ्या भाषण के महादोष का पात्र बन कर पाप दण्ड को भोगते हुए, एक महीना दुर्गति को प्राप्त होकर देहान्त हुआ। ऐसे प्रभु के प्यासे दयानन्द जी की दुर्गति का श्रेय ज्ञानहीन सन्तों को ही जाता है। जिन्हें स्वयं ज्ञान नहीं है। दूसरों को शिष्य बना कर उनका जीवन नष्ट कर रहे हैं।*

➢ *यदि स्वामी दयानन्द जी को पूर्ण संत मिल जाता तो अपना कल्याण करते तथा अन्य को भी सत्य मार्ग दर्शाते श्रद्धालु एक उपजाऊ जमीन होती है। उपजाऊ जमीन में जो भी पौधा लगाया जाता है वह उसे उगा देती है। जिस श्रद्धालु को पूर्ण सन्त मिल गया उसने सतभक्ति व तत्वज्ञान रूपी आम का पोधा लगा दिया। जिस श्रद्धालु को ज्ञानहीन गुरू मिला उसने शास्त्रविधि रहित साधना व अज्ञान रूपी कीकर (बबूल) का पौधा लगा दिया। उपजाऊ गुण होने के कारण दोनों ही पौधों को उपजाऊ जमीन पोषण करके हरा-भरा कर देती है।*

➢ *स्वामी दयानन्द जी अपना जीवन व्यर्थ कर गये तथा हजारों श्रद्धालुओं को भ्रमित करके मिथ्याभाषण रूपी महापाप के भागी हो गये। जिसका मूल कारण ज्ञानहीन सन्त, ऋषि, आचार्य तथा महंत जन हैं।*

➢ *स्वामी जी ने घर त्यागा था जन्म-मृत्यु से छुटकारा पाने, पूर्ण मोक्ष प्राप्त*

करने के लिए। परन्तु ज्ञान हीन गुरू सन्तों ने उल्टा पाठ पढा दिया कि जन्म-मृत्यु कभी समाप्त नहीं हो सकता इसलिए स्वामी दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के नौवें समुल्लास में यही विचार दृढ किए हैं, लिखा है मोक्ष प्राप्ति जीव छत्तीस हजार बार उत्पति-प्रलय तक मोक्ष भोगने के पश्चात् पुनर् अवश्य जन्म लेगा। फिर पुण्य कर्म न्यून होने पर अन्य प्राणियों के शरीरों में भी जाएगा।

जन्म तथा मरण इतना आवश्यक है जितना सुबह खाना खाने के बाद शाम को फिर भोजन की भूख लगती है। इसी आधार से श्री दयानन्द जी ने वेदों के शब्दों का भी अनर्थ किया है। ऋग्वेद मण्डल 1 सू. 24 मन्त्र 1- 2 के अनुवाद में लिखा है कि परमात्मा के उस नाम को जाने जो हम अनादि मोक्ष प्राप्त जीवों को पूनर् जन्म देकर माता-पिता के दर्शन कराता है।

विचार करें:- अनादि मोक्ष प्राप्त प्राणी तो वह है जिस का मोक्ष समय कभी समाप्त न हो। फिर उस का पुनर् जन्म कहना अर्थो का अनर्थ करना मात्र है तथा अपने गलत विचारों का समर्थन मात्र है। जबकि उपरोक्त ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 24 मन्त्र 1- 2 का शब्दार्थ है कि अमर भगवानों, (अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म तथा परम अक्षर पुरूष अर्थात् पूर्ण ब्रह्म) में से कौन से प्रभु के वास्तविक नाम का समरण करें जो सतनाम जाप हमें अनादि मोक्ष प्राप्त कराता है तथा पूनर् जन्म नहीं देता अर्थात् जन्म-मरण पूर्ण रूप से समाप्त कर देता है और जिस परमात्मा में माता-पिता, भ्राता तथा मित्र आदि के सर्व गुण विद्यमान हैं (त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या च दृविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्वम मम देवः देवः।।), उस पूर्ण परमात्मा रूपी माता-पिता के दर्शन करा देता है।

उत्तर में कहा है कि उस अग्ने अर्थात् तेजोमय शरीर युक्त कविरग्नि (कविरदेव) का जाप करने से पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है।

➢ परमात्मा को निराकार कहने वाले स्वयं भगवान को साकार कह रहे हैं। पूर्वोक्त पुस्तक के पृष्ठ सं. 207, 437, 439 से 443 तथा अन्य स्थानों पर श्री दयानन्द जी को भगवान दयानन्द लिखा है। लगता है अब कुछ दिनों में ये आचार्य लोग स्वामी दयानन्द जी को भी निराकार कहा करेगें।

➢ महर्षि दयानन्द की सुरक्षा के लिए एक सैना तैयार की गई (संगठन काण्ड प्रथम सर्ग पृष्ठ 216 पर)

➢ आर्य समाज की स्थापना सम्वत् 1932 (सन् 1875) में मुम्बई में की गई (पृष्ठ 216) तथा सम्वत् 1940 में (आठ वर्ष पश्चात्) स्वामी दयानन्द जी का देहान्त हो गया।

➢ स्वामी दयानन्द साधना हठयोग से करते थे। समाधिस्थ हुए नजर आते थे। जिससे भोले-भाले श्रद्धालुओं ने योगी पुरूष मान लिया। यदि स्वामी दयानन्द

योगी होते तो मानव शरीर में बने चक्रों के विवरण को मिथ्या नहीं कहते।

➢ *एक दिन हठयोग कर रहे स्वामी जी के चरणों में किसी स्त्री ने महायोगी व परम सन्त जानकर श्रद्धा से सिर रख दिया। स्वामी दयानन्द घबरा कर उठे तथा माता-माता कहते हुए विरान जंगल में एक पुराने मंदिर में तीन दिन तीन रात निराहार रहे तब उनके मन की वासना शांत हुई।*

➢ *यदि स्वामी दयानन्द जी आत्मज्ञानी तथा योगी होते तो स्त्री तथा पुरूष में भेद नहीं मानते और उनके मन में दोष नहीं आता।*

आत्मज्ञानी महात्मा की स्थिती ऐसी हो जाती है जैसे एक समय एक नगर में स्वांग हो रहा था। स्वांग में नर ही नारी की वेषभूषा पहनकर अभिनय करते थे। एक व्यक्ति भी स्वांग का खेल देखने गया। उसने अपने साथी से कहा देखो कितनी सुन्दर स्त्री है। उसके साथी को पता था कि यह स्त्री नहीं है पुरूष ही स्त्री की वेशभूषा धारण किए हुए है। साथी ने कहा ये स्त्री नहीं यह तो पुरूष है। नए दर्शक को विश्वास नहीं हुआ। स्वांग के उपरांत दोनों दर्शक अभिनेताओं के पीछे-2 उनके निवास स्थान पर गए। जहाँ सर्व पात्रों ने स्त्री की वेशभूषा उतार कर पुरूष वाली पहन ली। तब उस नए दर्शक को पता चला कि यह स्त्री नहीं पुरूष है। अगले दिन उस व्यक्ति को वह स्त्री वेशभूषा में पुरूष ही लग रहा था। स्त्री वाला आकर्षण नहीं रहा तथा मन का दोष भी नहीं रहा।

इसी प्रकार तत्वज्ञानी तथा आत्मज्ञानी महात्मा को ऊपर का वस्त्र (स्त्री व पुरूष का शरीर) स्पष्ट दिखाई देता है। स्त्री के शरीर (वस्त्र) युक्त जीवात्मा को भी अपना सजातिय ही समझता है। इसलिए आत्म ज्ञानी के मन में कोई दोष नहीं आता। जैसे श्री दयानन्द जी के दुषित अन्तःकर्ण में भरा था।

➢ *स्वामी दयानन्द जी हरिद्वार में तो सर्वधन व वस्तुओं को त्याग कर वैरागी तथा मौनी हो गए क्योंकि अधिक वस्तु संग्रह तथा धन संग्रह साधना में बाधक बन जाता है फिर मृत्यु काल में 700 रूपये तो कल्लु सेवक लेकर चम्पत हो गया। कुछ रूपये जगन्नाथ रसोईया को यात्रा खर्च देकर भगा दिया। आज (सन् 2006) से 123 वर्ष पूर्व सात सौ रूपये का आज के पांच लाख रूपये से भी अधिक मूल्य होता था। उस समय एक उच्च अधिकारी का मेहनताना पचास रूपये होता था। आज पचास हजार रूपये है। देसी घी उस समय चार आने (25 पैसे) का सेर (एक कि. ग्रा.) आता था। आज 200 रूपये प्रति कि.ग्रा. (सेर) आता है। इस तुलना से सात सौ रूपये की कीमत आज(सन् 2006 में) पांच लाख से भी अधिक है।*

➢ *स्वामी जी दुशाला ओढते थे, पैरों में जुराब तथा गले में स्फटिक की माला पहनते थे।*

➢ *स्वामी जी कभी-2 घोड़ा बुग्गी में बैठकर यात्रा करते थे।*

➢ *स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु विष देने से नहीं हुई अपितु मिथ्याभाषण रूपी वाणी द्वारा किए पाप का दण्ड भोग था।*

➢ *स्वामी दयानन्द जी की पूर्वोक्त पुस्तक ''श्री मद् दयानन्द प्रकाश'' में लिखे विवरण से स्पष्ट है कि उन्हें विष नहीं दिया गया था। वे पहले से ही कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। प्रतिदिन की तरह जगन्नाथ रसोईया से दूध पान किया। अर्धरात्री के पश्चात् स्वास्थ्य अधिक बिगड़ना प्रारम्भ हुआ। वैद्य ने दवाई दी जो प्रतिक्रिया (रियैक्शन) कर गई। फिर अन्य वैद्य बुलाया। परन्तु औषधी लाभ के स्थान पर हानि ही करती चली गई। तत्पश्चात् ''सद्धर्म प्रचारक'' समाचार पत्र में प्रकाशित लेख में जगन्नाथ सेवक पर संदेह किया गया है कि उसने स्वामी जी को किसी से रूपये प्राप्ति के लालच में विष दिया है। जिस रात्री को स्वास्थय अधिक बिगड़ा उस के चार दिन बाद तक श्री जगन्नाथ रसोईया स्वामी जी की सेवा में ही था। समाचार पत्र में पढ़कर किसी के कहने के पश्चात् स्वामी दयानन्द जी ने अपने विश्वास पात्र जगन्नाथ रसोईया से पूछा, उसके पश्चात् उसे यात्रा खर्च देकर भगा दिया। इससे सिद्ध है कि नौकर दोषी नहीं था। नहीं तो उसी रात चला जाता स्वामी दयानन्द जी को पता था कि जगन्नाथ निर्दोष है परन्तु अपनी मृत्यु सुनिश्चित जानकर तथा यह सोचकर कि मेरी मृत्यु के पश्चात् निर्दोष नौकर को दोषी बनाकर दण्डीत् न कर दें इसलिए अपने सेवक को भी बचा कर निकाल दिया था।*

➢ *वास्तव में जब प्राणी के पूर्व जन्म के शुभ संस्कार समाप्त हो जाते हैं तथा वर्तमान में शास्त्रविधि अनुसार साधना पूर्ण संत से प्राप्त नहीं होती। उस व्यक्ति पर पाप कर्मो का दण्ड प्रभावी हो जाता है। जिसके कारण दुर्गती को प्राप्त होता है। यही कारण था जो स्वामी दयानन्द सरस्वती को महाकष्ट भोगना पड़ा। एक महीना (अश्वनी वदी 14 से कार्त्तिक वदी अमावस्या) तक स्वामी दयानन्द जी का मल-मुत्र वस्त्रों में ही निकल जाता था पूरे शरीर पर छाले पड़ गए थे मिथ्या भाषण रूपी वाणी द्वारा किए पाप के कारण उनकी जीभ पर छाले, मुंह में, कण्ठ में, माथे पर तथा सिर पर छाले पड़ गए थे पूरा शरीर गल गया था। दवाई ने दुष्प्रभाव (रियक्शन) कर दिया था। कष्ट के कारण अंत में अचेत होकर मृत्यु को प्राप्त हुए। ''सत्यार्थ प्रकाश'' समुल्लास 9 पृष्ठ 217 पर लिखा है कि वाणी द्वारा (मिथ्या भाषण आदि) किए पाप के कारण पक्षी तथा मृगादि पशुओं के शरीर में दुःख भोगता है इससे स्पष्ट है कि अगले जीवन में मिथ्याभाषण रूपी महापाप के कारण श्री दयानन्द जी का जीव पशु तथा पक्षीयों के शरीर में कष्ट उठा रहा होगा। यदि पूर्ण सन्त से शास्त्रविधि अनुसार साधना प्राप्त होती तो पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कवीर परमेश्वर) उस पुण्यात्मा के इस पाप कर्म को क्षमा (नाश) करके सौ वर्ष*

की आयु प्रदान कर देता। जैसे ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मन्त्र 2 में तथा यजुर्वेद अध्याय 8 के मन्त्र 13 में स्पष्ट है कि परमात्मा साधक के महापराध (महापाप) को भी नाश(क्षमा) कर देता है तथा रोगी के जीवन श्वांस शेष न रहे हों तो पूर्ण परमात्मा साधक को स्वस्थ करके सौ वर्ष की आयु प्रदान कर देता है।

इससे सिद्ध है कि स्वामी दयानन्द जी को वेदों में वर्णित भक्तिविधि प्राप्त नहीं थी। अन्यथा वेद कथन अनुसार लाभ अवश्य प्राप्त होता। स्वामी दयानन्द हृदय विदारक पीड़ा के कारण मृत्यु को प्राप्त नहीं होते।

जैसे इन्वर्टर की बैटरी पहले चार्ज होती है। उससे बल्ब भी जलते हैं, पंखे भी चलते हैं यदि फिर से चार्ज नहीं किया जाए तो बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है तथा अचानक सर्व लाभ मिलने बंद हो जाते हैं। यही दशा पूर्व जन्म के पुण्यकर्मी प्राणी की होती है। यदि उसे वर्तमान जीवन में शास्त्रविधि अनुसार साधना प्राप्त नहीं होती है तो जब तक पूर्व जन्म का पुण्य चलता है तो वह अच्छा महसूस करता है। फिर अचानक आपत्तियों से घिर जाता है। पूर्ण परमात्मा की वेदों अनुसार सत्य साधना मुझ दास (संत रामपाल दास) के पास है। जो स्वयं पूर्ण परमात्मा कर्विदेव (कबीर परमेश्वर) द्वारा प्रदत्त है। जिस कारण से लाखों भक्तों को नवजीवन प्राप्त हो चुका है। जिनका जीवन शेष नहीं था वे आज सर्व कार्य कर रहे हैं। जो उठ-बैठ नहीं सकते थे। वे बच्चे अपना सर्व कार्य कर रहे हैं।

''शास्त्र विधी अनुसार साधना करने वाले को अन्त समय में कष्ट नहीं होताः-

1. आदरणीय सन्त गरीबदास जी महाराज ने बैठे-2 शरीर त्याग दिया था। पूर्ण स्वस्थ थे।

2. मुझ दास के पूज्य गुरू देव स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज 24 जनवरी 1997 को मुझ दास के पास से जीन्द आश्रम से तलवण्डी भाई पंजाब में बने आश्रम में गए तथा 26 जनवरी 1997 का ''सत साहेब'' उच्चारण करते हुए दिन के 10 बजे शरीर त्याग दिया। उस समय उनकी आयु लगभग 108 वर्ष की थी, पूर्ण स्वस्थ थे। ऐसे-2 अनेकों प्रमाण हैं।

3. परमेश्वर कर्विदेव (कबीर प्रभु) ने मगहर (उत्तर प्रदेश) में हजारों दर्शकों के सामने स्वधाम गमन किया। शरीर के स्थान पर सुगंधित फूल मिले थे।

मुझ दास की प्रार्थना है कि समाज सुधार तथा आत्मा उद्धार तत्वज्ञान के आधार से पूर्ण संत से प्राप्त करके साधना करने से ही संभव है। कृप्या सर्व मतभेद भुला कर शास्त्रविधि अनुसार पूर्ण परमात्मा की साधना निःशुल्क अविलम्ब प्राप्त करके अपना तथा अपने परिवार का कल्याण कराएं।

संत रामपाल दास महाराज